CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

12·1

भारत के महापुरुष

प्रथम खण्ड

देवेन्द्रनाथ मुखर्जी

[illegible] स्वामी शिवानन्द [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारत के महान् योगी

प्रथम खण्ड

विश्वनाथ मुखर्जी

अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

BHARAT KE MAHAN YOGI

by

Vishwanath Mukherjee

1986

© विश्वनाथ मुखर्जी

प्रथम सं[illegible] ई०

मूल्य : Rs 25.00- [illegible]त्र

प्रकाशक

अनुराग प्रकाशन, चौक, वाराणसी–२२१००१

मुद्रक–विद्या प्रिंटिंग प्रेस, के० २०/१८० ब्रह्माघाट, वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

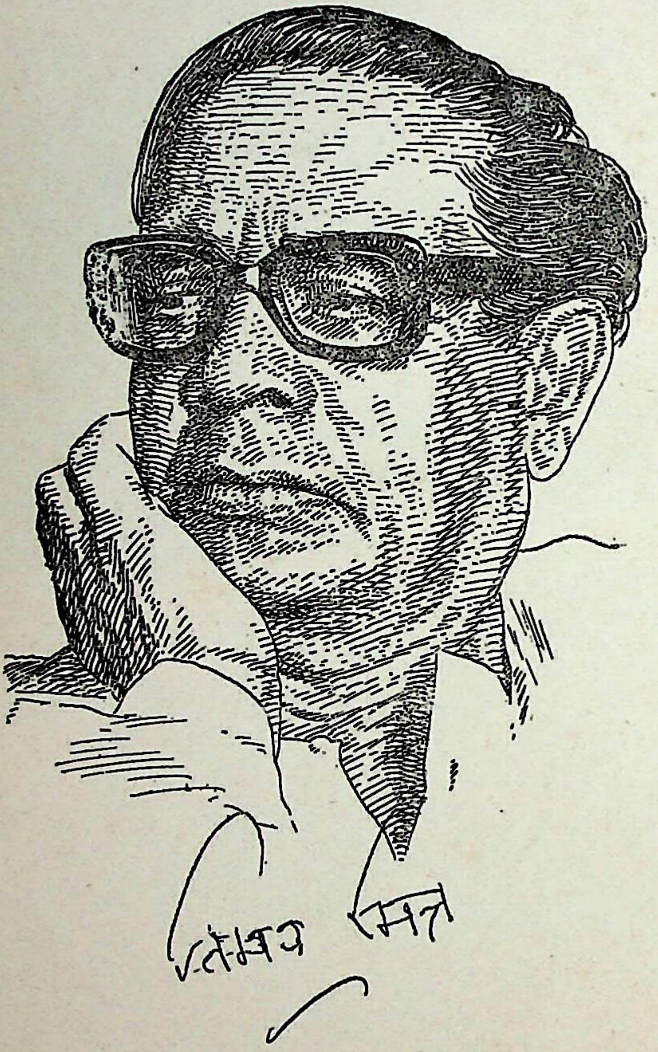

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारत के महान् उपन्यासकार

श्रद्धेय विमल दा

को सादर सप्रेम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काशी अनादिकाल से संतों, महात्माओं, मनीषियों की नगरी रही है। देश का ऐसा कोई भी संत, योगी अथवा विद्वान् नहीं होगा जो अपने जीवनकाल में काशी न आया हो और उसने संतों-महात्माओं और मनीषियों से सम्पर्क स्थापित नहीं किया हो।

संतों और योगियों की स्मृतिसुरभि काशी के वायुमण्डल में आज भी व्याप्त है। उस स्मृतिसुरभि का मानस-स्पर्श समय-समय पर होता रहता है। इस पुस्तक में वंग देश के संतों और योगियों का जीवन चरित है जो अलौकिक घटनाओं से परिपूर्ण है।

श्री विश्वनाथ मुखर्जी स्वयं वंगवासी हैं, आपने रुचिपूर्वक ऐसे योगियों के जीवन-चरित ढूंढ़ निकाले हैं। जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र लिखने की इनकी अपनी शैली है जो जीवन के कोमल पक्षों को सरस अभिव्यक्ति प्रदान करती है। पाठकों को यह पुस्तक पसद आयेगी, ऐसा विश्वास है।

पुस्तक का दूसरा खंड शीघ्र प्रकाशित हो रहा है जिसमें देश के प्रमुख संतों और योगियों के जीवन-वृत्त दिये गये हैं।

पाठकों को यह ग्रंथमाला पसंद आई तो इसके अन्य भाग भी शीघ्र प्रकाशित किये जायेंगे।

——प्रकाशक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरोवाक्

कलकत्ते में ट्राम-बस में सफर करते वक्त अक्सर मुझे जगह-जगह पर एक बैनर दिखाई देता था जिस पर लिखा रहता--लोकनाथ ब्रह्मचारी। उस वक्त सोचता--बंगाल धर्म-प्राण प्रांत है। यहाँ आये दिन संत-महात्मा आते हैं, भक्तों के बीच प्रवचन देते हैं जहाँ बड़े-बूढ़े जाकर अपनी ज्ञान-पिपासा शांत करते हैं। मेरे गृह नगर काशी में इस तरह के कार्यक्रम बराबर होते रहते हैं। बाद में पता चला कि लोकनाथ ब्रह्मचारी एक महान् योगी थे। उनके जीवन पर आधारित नाटक दिखाया जा रहा है।

काशी में अनेक संतों के मठ-अखाड़े हैं। विभिन्न सम्प्रदाय के भक्त रहते हैं। भारत के अनेक तीर्थों में संतों के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, पर किसी के प्रति श्रद्धा उत्पन्न नहीं हुई। सिल्क कुर्ता, काश्मीरी शाल, राजसी भोजन, मंत्रियों-राजाओं की की तरह ठाट-बाट देखकर मन में वितृष्णा उत्पन्न हो जाती थी। यह ठीक है कि इनमें अनेक अपने ज्ञान-अध्ययन के माध्यम से श्रोताओं को प्रभावित करते हैं, परन्तु आर्त, दुखी मानव की पीड़ा को दूर करने में असमर्थ रहते हैं। धन, सम्पत्ति के लिए वे अदालत तक दौड़ लगाते हैं। ऐसे लोगों के प्रति श्रद्धा कैसे उत्पन्न हो सकती है?

बचपन में मेरे घर योगीराज श्यामाचरण लाहिड़ी, विजयकृष्ण गोस्वामी, स्वामी भास्करानन्द, विशुद्धानन्द सरस्वती के बारे में अलौकिक कथाओं की चर्चा होती थी। मेरा बाल मस्तिष्क उन कथाओं को परीकथा के रूप में स्वीकार करता रहा।

काफी दिन बाद बंगाल के प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री नलिनी रंजन सरकार ने योगी बरदाचरण के बारे में एक संस्मरण लिखा जिसे पढ़कर चौंक उठा। इसके बाद 'एक योगी की आत्मकथा' का अध्ययन किया तो मेरी आस्था बढ़ने लगी। सबसे अंत में महामहोपाध्याय पंडित गोपीनाथ कविराज की महत्वपूर्ण कृति 'साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग' पढ़ने का अवसर मिला। इस पुस्तक के अध्ययन से मेरा सारा भ्रम दूर हो गया। अक्सर कविराजजी के निकट जाने पर ऐसे ही संतों का जिक्र होता था।

सन् १९८४ में एक अपरिचित युवक की प्रतिभा देखकर दंग रह गया। वह शक्ल देखकर भूत-भविष्य बताने लगा। उसके जाने के बाद अपने मेजबान से युवक का परिचय पूछा तो पता चला कि उसकी माँ तारापीठ की शिष्या है। युवक की भविष्यवाणी कभी-कभी गलत होती है, पर माँ बिलकुल सही कहती है। ठीक इन्हीं दिनों पता चला कि मेरे संबंधी भी तारापीठ की शिष्या हैं। काशी की धर्मशालाओं में विभिन्न संप्रदायों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के यात्री आते हैं। इनकी जबानी अनेक घटनाओं की सूचनाएँ प्राप्त हुई। चित्रकूट स्थित परमहंस आश्रम में श्री गुलाबदास वर्मा के साथ पिछले पन्द्रह वर्षों से जाता हूँ। इन सभी घटनाओं ने मुझे प्रभावित किया।

मैं कृतज्ञता पूर्वक यह स्वीकार करता हूँ कि इस दिशा में मेरी रुचि बढ़ाने का एक मात्र श्रेय 'मुमुक्षु' के संपादक श्री पुरुषोत्तमदास मोदी को है। इन्होंने इस प्रकार के साहित्य पढ़ने को दिया और दिशा दी। अगर वे 'मुमुक्षु' के माध्यम से सहायता न करते तो यह कृति तैयार न कर पाता। मैं अनेक लेखकों जिनकी रचनाओं से तथा उन भक्तों का आभारी हूँ जिन्होंने मौखिक घटनाओं को सुनाया है। इसके साथ ही आदरणीय मोहनलाल गुप्त, मार्कण्डेय पाण्डेय और अपने चिरंजीव का आभारी हूँ जिनके सुझाव का उपयोग करता रहा। वास्तविक आलोचक मेरे सुधी पाठक होंगे जिनके सुझाव का सहर्ष स्वागत करूँगा।

विश्वनाथ मुखर्जी

सिद्धगिरि बाग
वाराणसी–१०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रम

१. तंत्राचार्य सर्वानन्द — १
२. लोकनाथ ब्रह्मचारी — २६
३. प्रभुपाद विजयकृष्ण गोस्वामी — ४९
४. वामा खेपा — ७३
५. परमहंस परमानन्द — ९७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१

तन्त्राचार्य सर्वानन्द

त्रिपुरा जिले का एक छोटा सा जनपद जिसका नाम है--मेहार। इस जनपद के जमींदार थे--श्री जटाधर। थे तो जमींदार, पर चालचलन, रोबदाब बादशाहों की तरह रखते थे। नित्य दरबार लगाते थे। पार्षदों से शासन के बारे में विचार-विमर्श करते थे। पंडितमंडली में शास्त्रार्थ कराते थे।

उन दिनों सुदूर दिल्ली में लोदीवंश का शासन समाप्त हो गया था और अब सैयद वंश के बादशाह मुबारक शाह सिंहासन पर विराजमान थे। भारत का शासन अस्थिर था। जगह-जगह स्वतंत्र राज्य उभर रहे थे।

१४ जनवरी, सन् १४२६ ई० के दिन मकरसंक्रांति था। शुक्रवार और अमावस्या तिथि थी[१]। दासवंश के कुल दीपक जटाधर दरबार में आये तो देखा--सभी लोग आ गये हैं, पर सभा-पंडित वाणेश्वर भट्टाचार्य नहीं आये हैं। कारण पूछने पर पंडितों ने बताया कि आ रहे होंगे। शंभुनाथ भट्टाचार्य के प्रथम पुत्र वाणेश्वर भट्टाचार्य अपने युग के असाधारण पंडित थे। उन्हें पंडित समाज ने आगमाचार्य की उपाधि दी थी।

आगमाचार्य के स्थान पर उनके छोटे भाई सर्वानंद को आते देख जटाधर के भौंहों पर बल पड़ गये। मेहार का बच्चा-बच्चा जानता है कि सर्वानन्द की तरह मूढ़ व्यक्ति शायद ही कोई हो। इतने महान् पंडितवंश में ऐसी जड़बुद्धि वाला बालक न जाने कैसे पैदा हो गया।

जटाधर ने पूछा--"आगमाचार्य कहाँ रह गये?"

सर्वानन्द ने कहा--"आज भाई साहब नहीं आ सकेंगे। यही कहने के लिए उन्होंने मुझे भेजा है।"

पार्षदों में से किसी ने पूछा--"क्या उनके स्थान पर आज का कार्य तुम करोगे?"

घर से चलते समय बड़े भाई ने चेतावनी दी थी कि दरबार में अधिक देर मत रुकना और न बात करना। पता नहीं क्या कह बैठो। दूसरे हमारे जटाधर महाराज स्वभाव के क्रोधी हैं। न जाने क्या कर बैठें। उनके कारण अपनी गृहस्थी चलती है। न हो, साथ में शिवनाथ को लेते जाओ। बच्चा साथ रहेगा तो जल्द वापस आ जाओगे।

मनुष्य सोचता कुछ है और ईश्वर कभी-कभी भवितव्य करा बैठते हैं। सर्वानन्द

---

१. सर जान वुडरफ ने अपनी कृति 'शक्ति एण्ड शाक्त' में यही लिखा है। ज्योतिष गणना के अनुसार यही सही तिथि है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसके पूर्व कभी दरबार में नहीं आया था। यहाँ की साजसज्जा, रंगढंग विस्मय के साथ देखने लगा।

तभी एक दरबारी ने कहा--"पंडितजी के भाई भले हो बेवकूफ हो, पर आगे चलकर पंडित-वंश का प्रभाव पड़ेगा। कुछ लोगों को बुद्धि देर से आती है।"

दूसरे दरबारी ने कहा--"आपका ख्याल सही है। महाकवि कालिदास को ही लीजिये। बचपन में कितने मूर्ख थे और अपने जीवनकाल में विश्व प्रसिद्ध हो गये।"

जटाधर ने कहा--"इसमें बहस करने की कोई जरूरत नहीं। भट्टाचार्य परिवार का लड़का है। घर में नित्य, नक्षत्र, वार, तिथि की चर्चा होती होगी। आज कौन सी तिथि और वार है, पूछिये। नक्षत्र बताने में कठिनाई हो सकती है।"

दूसरे दरबारी ने पूछा--"आज कौन सी तिथि है, भाई?"

इस बहस के कारण सर्वानन्द घबरा गया था। अनजाने उसके मुँह से निकल गया--"पूर्णिमा।"

इतना सुनना था कि सारी सभा अट्टहास से गूंज उठी। जटाधर ने तीखे स्वर में कहा--"जाओ, चुल्लू भर पानी में डूब मरो। भट्टाचार्य वंश के तुम कलंक हो। जिसे तिथि-नक्षत्र का ज्ञान नहीं, वह क्या पंडिताई करेगा?"

जटाधर के तीखे स्वर का सबसे अधिक प्रभाव सर्वानन्द के पुत्र शिवनाथ पर पड़ा। वह दरबार से दौड़ता हुआ घर आया। अपने पिता के अपमान की सारी कहानी माँ को सुनाई। सर्वानन्द की मूर्खता के कारण पत्नी वल्लभा को नित्य ताने सुनने पड़ते थे। वह सोचती मेरे पति बहुत भोले हैं, पर जिस घटना को देखकर उसका किशोर बालक अपमानित अनुभव कर रहा है, वह जरूर भयानक घटना रही होगी। बड़े भाई तथा पत्नी दोनों ही क्षोभ से फटे पड़े।

पूरे परिवार की फटकार ने उसे बुरी तरह झकझोर दिया। उसने सोचा--इससे अच्छा है कि जाकर नदी में डूब मरूँ। मैं परिवार के लिए बोझ मात्र हूँ। बिना किसी से कुछ कहे वह घर से बाहर चला गया। आम तौर पर कोई उसके आने-जाने पर ध्यान नहीं देता। आज तो लोग उससे बुरी तरह चिढ़े हुए थे।

धीरे-धीरे दिन ढलता गया। आज क्रोध से भरे रहने के कारण वल्लभा ने पति से खाने के लिए भी नहीं पूछा। तीसरे पहर ध्यान आया कि आज न उन्होंने भोजन माँगा और न खाना खाया। आखिर कहाँ चले गये? जेठ से कहने पर वे उसे खोजने निकले। ठीक इसी समय घर का पुराना नौकर वृद्ध पूर्णानन्द आया। आज वह जरूरी काम से काफी दूर दूसरे गाँव में चला गया था। घर आने पर उसे सर्वानन्द के बारे में सारी कहानी ज्ञात हुई तो वह सबसे अधिक व्याकुल हो उठा।

घर का प्रत्येक प्राणी इस बात से अच्छी तरह परिचित है कि पूर्णानन्द सबसे अधिक आदर सर्वानन्द का करता है। जैसे यक्ष अपने धन की खबरदारी करते हैं, ठीक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसी तरह पूर्णानन्द उसे अपनी आँखों का तारा समझता है। हर जगह अपमानित होकर जब वह बूढ़े पूर्णानन्द के पास आता है तब पिता-माता दोनों का स्नेह एक साथ उसे प्राप्त हो जाता है। पिछले सैंतीस वर्षों से पूर्णानन्द उसके पीछे साया की तरह लगा हुआ है। केवल वही जानता है कि सर्वानन्द कौन है ?

उसके गुरु वासुदेव भट्टाचार्य ने एक दिन उससे कहा था—"पूर्णा, तू चिंता मत कर। माँ जगज्जननी ने कहा है कि जब मैं अपने पौत्र के रूप में पुनर्जन्म लूँगा तब मुझे सिद्धि प्राप्त होगी। उस समय तेरी सहायता से ही कार्य सिद्ध होगा। तू मेरे परिवार से अलग मत होना। तुझे जो मंत्र दिया है, उसका पाठ करते रहना।"

यह आज की बात नहीं है। उस समय पूर्णानन्द किशोर बालक था। वासुदेव के परिवार में नौकरी करने आया था। धीरे-धीरे ज्ञात हुआ कि उसके मालिक सामान्य व्यक्ति नहीं हैं। असाधारण तांत्रिक हैं। योगी पुरुष के रूप में इनकी ख्याति है। अपने मालिक की कृपा से वह स्वयं भी महाशक्ति का उपासक बन गया। मालिक उसे गुरुमंत्र देकर उसके गुरुदेव बन गये। पूर्णानन्द मूढ़ और अशिक्षित था, परन्तु उसमें अनुभूति और विश्वास की कमी नहीं थी। उसने आश्चर्य के साथ देखा कि उसके गुरु साधना के माध्यम से वाक्‌सिद्ध पुरुष के रूप में प्रकट हो रहे हैं। ऐसे योगी पुरुष की सेवा करना कम गौरव की बात नहीं है। यह सारी बातें पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य की है।

पन्द्रहवीं शताब्दी के प्रारंभ में जसोर-जिला (बांगला देश) के सरशुना गाँव में कांचन पाकड़ाशी रहते थे। वहाँ किसी बात पर मन उचट गया तो वे पश्चिमी बंगाल के वर्धमान जिला के अन्तर्गत पूर्वस्थली गाँव में आकर बस गये। पेशागत इनकी उपाधि आचार्य थी। आगे चलकर इन्होंने भट्टाचार्य के रूप में उसे अपना लिया। कांचन पाकड़ाशी के पुत्र वासुदेव भट्टाचार्य हुए। भट्टाचार्य परिवारों में संस्कृत पठन-पाठन की परम्परा है। बंगला में भट्टाचार्य ही कुल पुरोहित एवं राज्य के द्वार-पंडित होते हैं।

कुल-परम्परा के अनुसार वासुदेव संस्कृत चटशाला में अध्ययन करते रहे। बचपन से ही मेधावी थे। अपनी प्रतिभा के कारण जल्द ही पूर्वस्थली के विद्वानों में इनकी धाक जम गयी। लेकिन इससे वासुदेव को प्रसन्नता नहीं हुई। विद्वता का प्रदर्शन करना उन्हें पसंद नहीं था। वे सत्य की खोज में जुट गये। शक्तिमंत्र में दीक्षित होने के बाद उनके मन में यह भावना उत्पन्न हुई कि एक बार प्रत्यक्ष रूप से मुझे जगन्माता के दर्शन हो जाँय। कठोरसाधना से ही यह संभव है। जब मन में यह धारणा प्रवेश कर गयी तब वासुदेव निरंतर आहार-निद्रा त्यागकर साधना में दत्तचित्त हो गये। स्वामी की यह हालत देखकर पूर्णानन्द ने गृहस्थी का सारा भार अपने ऊपर ले लिया। देवी की कृपा अगर उसके स्वामी पर हो जाय तो उसे भी दर्शन मिल जायगा।

भक्त की साधना से देवी का आसन डोल उठा। वे भक्त पर प्रसन्न हुईं। वासुदेव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की एकनिष्ठ उग्र-साधना सफल हुई । उनका अंतर एक अपूर्व आनंद से उद्भासित हो उठा । उनकी चेतना में सहस्र चन्द्रप्रभा प्रकाशित हो उठी । उस प्रकाश के भीतर से देवी की वाणी प्रस्फुटित हुई--

"वत्स, धैर्य रखो । अभी समय नहीं आया है । मेहार में तुम्हारे वंश का एक युवक सिद्धि लाभ करेगा । उसे इष्ट देवी दर्शन देंगी ।"

भविष्यति भवद्वंशे वंगे मेहार संज्ञके;
स्थिरोभव द्विज श्रेष्ठ त्वं मां कलयसीच्छाया ।

इस आकाशवाणी को सुनते ही वासुदेव का हृदय आनन्द से उछल पड़ा । अवर्णनीय उत्साह से वे परिपूर्ण हो उठे । लगा जैसे उनकी सारी तपस्या सफल हो गयी है । इतना वे समझ गये कि मेरी साधना का फल मेरे ही वंशधर को मिलेगा । इष्ट देवी उसे दर्शन देंगी । इसका अर्थ यह हुआ कि उनका वंश साधकों का वंश होगा ।

लेकिन यह दर्शन मेहार में होगा । यह मेहार किस जिले के, किस स्थान का नाम है ? मेहार का क्या महत्व है ? हर परिचित-अपरिचित से वे पूछते रहे कि मेहार नामक स्थान कहाँ है ? कोई भी उनके इस प्रश्न का जवाब नहीं दे सका । उनकी आकुलता बढ़ती गयी । कम से कम निर्वाण के पूर्व एक बार वे उस पवित्र भूमि को देख लेना चाहते हैं, जहाँ उनके वंशधर को सिद्धि मिलेगी । अन्त में उन्होंने निश्चय किया कि अब पर्यटन करूँ, शायद कभी किसी मेहार निवासी से भेंट हो जाय और वह उस स्थान के बारे में बता सके । पूर्णा को साथ लेकर एक दिन वे कामाख्या देवी दर्शन करने आये ।

यह दैवयोग था कि उन्हीं दिनों मेहार के भूस्वामी शिवानन्द देवीदर्शन करने आये थे । चारों ओर दर्शनार्थी कलरव कर रहे थे । वासुदेव दूर एक वृक्ष के नीचे चुपचाप बैठे जगन्माता के चिंतन में निमग्न थे । उनके चेहरे से एक प्रकार की ज्योति निकल रही थी । इस तपोनिष्ठ ब्राह्मण को देखते ही शिवानन्द आकृष्ट हुए । संभवतः कामाख्या देवी की प्रेरणा से ही वे वासुदेव आचार्य के प्रति आकर्षित हुए थे । शिवानन्द स्वतः इनके निकट आये और प्रणाम किया । वासुदेव ने हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया और तब पूछा--"कहाँ से आ रहे हो, भगत ?"

शिवानन्द ने कहा--"मेहार से ।"

"मेहार से ?" शिवानन्द के हृदय में रक्त का उबाल आ गया । प्रसन्नता की उत्तेजना से वे चौंक उठे । मेहार की तलाश में अब तक न जाने कहाँ-कहाँ भ्रमण कर चुके हैं । आज वही मेहार उनके निकट, उनकी आँखों के सामने उपस्थित है । उनके स्वप्नों का मेहार, उनकी साधना भूमि, जहाँ उनके वंशधर को साधना करनी है, जहाँ देवी दर्शन देंगी, जहाँ उनकी मनोकामना पूरी होगी । धन्य हो कृपामयी ! अपने संतान पर अवश्य कृपा करती हो ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपने को संयत करते हुए वासुदेव ने कहा--"अच्छा हुआ कि आप मिल गये। पिछले कई दिनों से कामाख्या देवी की कृपा से मेहार के बारे में चिंतन कर रहा था। मैं वहाँ निवास करना चाहता हूँ। कोई व्यवस्था हो सकती है ?"

योगी की बातें सुनकर शिवानन्द विस्मय से उनकी ओर देखने लगे। देवी की कृपा से कह उठे--"आप जैसे साधक को मेहार अपने यहाँ स्वागत करने में गौरव का अनुभव करेगा। मैं आपके निवास की पूरी व्यवस्था कर दूँगा। आपके आगमन से मेहारवासी धन्य हो उठेंगे।"

योगी के ज्ञान की परीक्षा लेने के लिए शिवानन्द ने धर्मचर्चा आरंभ की। शिवानन्द को अपने अध्ययन पर गर्व था। थोड़ी ही देर में उन्हें यह आभास हो गया कि यह व्यक्ति पारसपत्थर है। आज तक इसे कोई पहचान नहीं सका। यह सौभाग्य की बात है कि आज उन्होंने इस पारस को पहचान लिया। संक्षिप्त बातचीत करने के बाद वासुदेव मेहार रवाना हो गये।

मेहार आकर वे कई दिनों तक चारों ओर घूमते रहे। डाकातिया नदी के किनारे घना जंगल, शायद यहाँ प्राचीनकाल में ऋषि-मुनि तपस्या करते रहे होंगे। साधना करने लायक यही उपयुक्त भूमि है। जंगल के भीतर वे काफी दूर तक चले गये। इस स्थान पर देवी उनके वंशधर को कहाँ दर्शन देंगी ? यह प्रश्न अनुत्तरित रह गया।

मेहार में वासुदेव सपरिवार बस गये। शिवानन्द को जैसे स्वर्ग मिल गया। साधना करने के अलावा जितना समय मिलता, उसमें शिवानन्द से धर्म, दर्शन पर विचार-विमर्श करते। शिवानन्द के दरबार के वे सभापंडित नियुक्त हुए।

पूर्णानन्द शूद्र जाति का था। पहले वासुदेव उसके हाथ का पानी नहीं पीते थे। उसे गुरु मंत्र देने के बाद से उसकी सारी सेवाएँ ग्रहण करने लगे थे। उन्हें अपनी साधना की ओर विशेष ध्यान देना था। आहार-निद्रा से वे दूर होते गये। क्रमशः साधना कठोर होती गयी। शीतकाल में शीतल जल में और ग्रीष्मकाल में ग्रीष्म जल में, ऊर्ध्व दृष्टि से इष्ट चिंता करते रहे।

एक दिन पुनः उनका हृदय ज्योतिर्मय हुआ। ठीक उसी समय आकाशवाणी हुई--"वत्स, तुम अपनी साधना में उत्तीर्ण हुए हो। कुछ दिन और धैर्य रखो। यहाँ मातंगेश मुनि ने मंत्र सिद्ध महालिंग स्थापित किया था। वह लिंग मेहार के जंगल में एक जीन वृक्ष के नीचे है। उस स्थान को तुम नहीं, तुम अपने पौत्र के रूप में देख पाओगे। वहीं शवारूढ़ होकर तपस्या करने पर सिद्धि मिलेगी--

मेहराख्ये वंगदेशे जीनमूले निशार्द्धके
शवारोहात्तस्य सिद्धिः स्वपौत्रान्ते भविष्यति।

थोड़ी देर बाद बीज मंत्र उच्चारित हुआ। इस वाणी को सुनकर वासुदेव हताश हो गये। इस जन्म में देवी का दर्शन नहीं होगा। इतनी कठोर-साधना व्यर्थ हो गयी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संतोष इस बात का हुआ कि मेरी साधना का प्रतिफल मेरे पौत्र को मिलेगा। पास ही पूर्णानन्द था। उसे बुलाकर वासुदेव ने कहा––"सब समाप्त हो गया, पूर्णा। अब इस नश्वर शरीर को मैं शीघ्र त्याग दूँगा। मेरा कार्य समाप्त हो गया। मुझे पुनर्जन्म लेकर नये सिरे से देवी को प्रसन्न करना पड़ेगा तब मैं उनका दर्शन कर सकूँगा।"

स्वामी की बातें सुनकर पूर्णानन्द फफककर रो पड़ा। उसने कहा––"स्वामी, जब आप नहीं रहेंगे तो मेरा रहना भी व्यर्थ है। मेरा जन्म तो आपकी सेवा के लिए ही हुआ है। अगर आप मुझे ज्ञान न देते तो इन चरणों की सेवा करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त न होता।"

वासुदेव ने घबराकर कहा––"नहीं पूर्णा। तू चिंता मत कर। तुझे जो कुछ सिखाया है, तू करता चल। अभी तेरा कार्य पूर्ण नहीं हुआ है। तुझे अभी बहुत कुछ करना है। मैं पुनर्जन्म लेकर तेरे पुण्य प्रताप से आगे अग्रसर होऊँगा। तू चला जायगा तो मेरा सारा श्रम, सारी आकांक्षाएँ नष्ट हो जायगी। बाधा मत डाल। अगले जन्म में एक मात्र तू मेरा सहायक होगा। मैं सर्वदा सूक्ष्म रूप में तेरे साथ रहूँगा। शोक करने की जरूरत नहीं। मैं केवल शरीर त्याग रहा हूँ, मन मेरा यहीं रहेगा। जा, चला जा।"

स्वामी की आज्ञा शिरोधार्य कर पूर्णानन्द अपने गुरु को छोड़कर चल पड़ा। पीछे से आवाज आती रही––"ॐ प्रत्यालीढ़पदर्पितांघ्रि शवहृद घोराट्टाहासा परा, खड्गेन्दी वरकर्त्तृ खर्पर भुजा हुँकार वीजोद्भवा। खर्व्वा नील विशाल पिंगल जटाजुटैकनागैर्युता, जाड्यं रस्य कपालके त्रिजगतां हंत्युग्र तारा स्वयम्।"

पूर्णानन्द को अकेला वापस आते देख वासुदेव के पुत्र शंभुनाथ ने पूछा––"बाबूजी कहाँ हैं?"

पूर्णानन्द ने कहा––"अधीर होने की आवश्यकता नहीं है। गुरुदेव ने प्रवज्या ले ली है। अब इस आश्रम में नहीं आयेंगे। मुझे यहाँ सेवा करने का आदेश देकर वे जंगल के भीतर चले गये।"

पूर्णानन्द के गुरु वासुदेव थे। इसे उन्होंने मंत्र देकर साधना करना सिखाया था। पूर्णानन्द गुरु के बताये उपायों से अग्रसर होता गया। उनके निधन के पश्चात् पूर्व की भाँति घर का सारा कार्य करता रहा।

सर्वानन्द के जन्म के पूर्व ही वह गुरु द्वारा प्रदत्त बीजमंत्र में प्राण प्रतिष्ठा कर चुका था। अब उसे अपने गुरु की शक्ति और बातों पर आस्था हो गयी थी। इसी समय सर्वानन्द भूमिष्ठ हुआ। कुछ दिनों बाद जब उसे लेकर गोद खिलाता तब अपने गुरुदेव की प्रतिच्छवि उसमें खोजने लगता। सर्वानन्द बालक से किशोर बन गया।

एक दिन पूर्णानन्द कहीं बाहर से वापस आया। घर के बाहर एक वृक्ष के नीचे सर्वानन्द बैठा न जाने क्या सोच रहा था। उसके अस्त-व्यस्त बाल, उद्भ्रांत दृष्टि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखकर पूर्णानन्द को विश्वास हो गया कि उसके गुरुदेव सर्वानन्द के रूप में अवतरित हुए हैं। ठीक वैसी आँखें, वही नाक-नक्शा और वही चाल। ले-देकर एक ही दोष है। वह है--जड़ बुद्धि। इस दोष के कारण न केवल परिवार के लोग, बल्कि सारा कस्बा इसे उपेक्षा की दृष्टि से देखता है। आखिर सर्वानन्द में यह दोष क्यों आ गया? चारों ओर से अपमानित होकर वह पूर्णानन्द की गोद में आकर मुँह छिपा लेता। पूर्णा दादा के स्नेह स्पर्श से सारा अपमान, पीड़ा, सब कुछ दूर हो जाता। स्वयं पूर्णा दादा बड़े स्नेह से उसकी बलैया लेते। दोनों यह भूल जाते सर्वानन्द अब बालक नहीं, किशोर है।

एकाएक पिता शंभुनाथ ने सोचा कि लड़के में जो दोष है, अगर इसका विवाह कर दिया जाय तो बहू के कारण परिवर्तन हो जायगा। इस निश्चय के बाद उन्होंने सर्वानन्द का विवाह कर दिया। पत्नी वल्लभा अच्छे घर से आयी थी। उसके आदर-प्यार में सन जाने पर भी सर्वानन्द में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। चतुर वल्लभा पति की कमजोरी समझ गयी। भाग्य का परिहास समझकर वह अपने पति को झेलने लगी। इसके अलावा और कोई उपाय भी नहीं था। इस बीच वह एक पुत्र का पिता बन गया। बाप की मूर्खता से पुत्र शिवनाथ भी असंतुष्ट रहने लगा।

लेकिन पूर्णानन्द निराश नहीं हुआ था। उसे अपने गुरु के वचनों पर पूर्ण विश्वास था। एक दिन यह सब जंजाल दूर होगा और उसकी आँखों का तारा सर्वानन्द समस्त भूमंडल में चमक उठेगा। उसकी देख रेख और रक्षा करनी है।

भूखा प्यासा पूर्णानन्द गाँव के परिचितों के घर गया। रास्ते में जो मिलता, उसी से पूछता--"सर्व को कहीं देखा है?" सभी सिर हिला देते। एकाएक उसे याद आया कि कहीं झक वश डाकातिया नदी में कूदा न हो या जंगल की ओर भाग न गया हो। पागल ठहरा, उसके दिमाग का क्या भरोसा? इस वक्त उसे सबसे अधिक क्रोध जटाधर पर आ रहा था। इतने पंडितों के रहते उससे तिथि पूछने की क्या जरूरत थी। गुरुजी ने व्यर्थ ही आशीर्वाद दिया। अगर शिवानन्द कमबख्त निपूता रहता तो ठीक था।

पूर्णानन्द को पिछली घटनाएँ याद हैं। गुरुदेव शराब पीते हैं, लोगों की जबानी शिकायत सुनकर स्वयं अपनी आँखों से देखने के लिए शिवानन्द आये थे। दरअसल वासुदेव की ख्याति से जो लोग नाराज रहते थे, उन लोगों ने शिवानन्द को उकसाया था ताकि गुरु वासुदेव को यहाँ से आसानी से भगाया जा सके। शिवानन्द चुपके से एक दिन आये तो देखा--वासुदेव गिलास में शराब उडेलकर पी रहे हैं और झूमते हुए मंत्र पाठ कर रहे हैं। प्रत्यक्ष यह हरकत देख उसने तीखे स्वर में पूछा--"कहिये, गुरुदेव! यह मिथ्याचार क्यों? पात्र में मद्य है, पान भी कर रहे हैं और कहते हैं कि सारी शिकायतें झूठ हैं।"

वासुदेव ने रक्तिम नेत्रों से शिवानन्द की ओर देखते हुए कहा--"गुरु की बात पर विश्वास नहीं हुआ तो स्वयं खोज करने आ गये?" फिर पानपात्र को प्रकाश के सामने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रखते हुए कहा--"कौन कहता है कि यह मद्य है ? अपने गुरु को मद्यप समझने में तुम्हें संकोच नहीं हुआ ? अपने गुरु पर लांछन लगाते हो। जिस मस्तिष्क में यह विकृति उत्पन्न हुई है, वह विभक्त हो जायगा।"

शिवानन्द ने प्रकाश में देखा--उसमें शराब नहीं, चरणामृत था। अब तो भूल हो गयी थी। गुरु का शाप सुनकर वे चुपचाप चले आये। उन दिनों शिवानन्द तालाब बनवा रहे थे। न जाने किस बात पर मजदूरों में लड़ाई हो गयी। बीचबचाव करने के लिए शिवानन्द ज्योंही आगे बढ़े, त्योंही पीछे से किसी ने लाठी मारा। वासुदेव के शाप ने अपना प्रभाव दिखा दिया।

शिवानन्द की पत्नी रोती हुई वासुदेव के पास आयी। उसे अभिशाप की घटना मालूम थी। बोली--"गुरुदेव, अब क्या होगा ? राजा तो अपुत्रक मर गये।"

वासुदेव ने कहा--"नहीं, तुम गर्भवती हो।" इसके बाद शिव की जटा से एक फूल देते हुए बोले--"इसे घर ले जाकर खा लेना। यह पुत्र जटाधारी और तेजस्वी होगा। दासवंश इसी से चलेगा।"

वही जटाधारी इस राज्य का राजा है। शिवानन्द का वंशधर। इसके बाप ने मेरे गुरु का और इसने मेरे गुरु के पौत्र का अपमान किया है। ईश्वर इसे सजा अवश्य देगा।

घर से चलकर सर्वानन्द डाकातिया नदी के किनारे आकर रोने लगा। जड़बुद्धि वालों को भी अपमान से ठेस लगती है। दिन भर भोजन न करने के कारण शरीर थका-थका सा लगने लगा। उसे लगा कि कोई यह नहीं चाहता कि वह जीवित रहे। पत्नी, बच्चे, पूरे परिवार के निकट वह भारस्वरूप है। ऐसे व्यक्ति का रहना या न रहना बराबर है। क्रोध के आवेश में आकर वह नदी के कगार तक आया। उछलकर नदी में कूदने ही जा रहा था कि न जाने कहाँ से आवाज आयी--"ठहरो, तुम्हें अभी जीना है। पढ़-लिखकर विद्वान् बनना है। आज के अपमान का बदला लेना है। आत्म-हत्या पाप है। जाओ, आज से साधना में जुट जाओ।"

सर्वानन्द सकपकाकर चारों ओर देखने लगा कि कौन उसे यह निर्देश दे रहा है ? कहीं कोई दिखाई नहीं दिया। रह-रहकर आवाज आ रही थी--"तुम्हें जीना है, बदला लेना है, साधना में जुट जाओ।" ठीक है, आज से मैं पढ़ूंगा-लिखूंगा। पढ़ने-लिखने के लिए ताड़ पत्रों की जरूरत है।

जंगल के भीतर प्रवेश करते ही एक ताड़ का पेड़ दिखाई दिया। सर्वानन्द ऊपर चढ़कर ज्योंही पत्ता तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाया, त्योंही एक विषधर साँप फन उठाये काटने को तैयार हुआ। यहाँ से भागना या झट नीचे जाना खतरे से खाली नहीं था। सामने और नीचे दोनों ओर मौत थी। भगवान् ने बुद्धि और साहस दिया। झट फन पकड़कर वह पेड़ पर रगड़ने लगा। मृत्यु अनिवार्य है, जानकर साँप हाथ में लिपटकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसे कसने लगा। दोनों में जीवन-युद्ध जारी था। अन्त में साँप की पकड़ ढीली पड़ गयी।

पेड़ से नीचे उतरते ही आवाज आयी—"बेटा, तुम कौन हो ?"

सर्वानन्द ने देखा—सामने एक जटाधारी बाबा खड़े तीक्ष्ण दृष्टि से देख रहे हैं। यह कौन है, कहाँ रहता है, मस्तिष्क में जोर डालने पर वह उन्हें पहचान नहीं सका। पुनः संन्यासी ने पूछा—"क्या नाम है ?"

—"सर्वानन्द भट्टाचार्य।"

—"पेड़ पर क्यों चढ़ने गये थे ?"

सर्वानन्द ने आज की सारी घटनाएँ बताते हुए कहा—"मैं अब पढ़-लिखकर बड़े भाई की तरह विद्वान् बनना चाहता हूँ।"

संन्यासी ने कहा—"समय काफी गुजर चुका है। इस तरह विद्वान् नहीं बन सकोगे। तुम स्वतः विद्वान् बनोगे, पर मंत्र के द्वारा। मैं तुम्हें मंत्र के द्वारा विद्वान् बनाऊँगा।"

सर्वानन्द को मुस्कराते देख संन्यासी ने कहा—"तुम्हें मेरे मंत्र पर विश्वास नहीं हो रहा है। अच्छा ठहरो।" इतना कहने के बाद संन्यासी ताड़ के पेड़ के पास से साँप के दोनों टुकड़ों को उठा लाये। दोनों को आपस में जोड़कर उन्होंने मंत्र पढ़ा। साँप जीवित होकर जंगल की ओर चला गया। सर्वानन्द भयभीत दृष्टि से इस दृश्य को देखता रहा।

—"अब मंत्र पर विश्वास हुआ ? चलो, यहाँ पद्मासन लगाकर बैठ जाओ।"

सर्वानन्द के बैठ जाने के बाद संन्यासी भी उसके सामने बैठ गया। कहा—"आज मैं दीक्षा दूँगा। मेरे बीज मंत्र को तुम सिद्ध करोगे।" कहने के साथ ही उन्होंने सर्वानन्द को स्पर्श किया। सर्वानन्द को लगा जैसे विद्युत गति से कोई लहर सारे शरीर में दौड़ गयी। वह क्या चीज थी, उसे वह नहीं समझ सका।

एकाएक सर्वानन्द बोल उठा—"दीक्षा देंगे ? आखिर क्यों ?"

संन्यासी ने कहा—"मुझे आदेश हुआ है कि तुम्हें संस्कारमुक्त कर आज ही दीक्षा दूँ। वह शुभ मुहूर्त इस समय उपस्थित हुआ है और यही वह असाधारण स्थान है, जहाँ क्रिया संपन्न होगी। जाओ जल्द स्नान करके आओ। देर मत करना।"

सर्वानन्द ने पूछा—"पूजन-सामग्री कहाँ है ?"

संन्यासी ने कहा—"सब कुछ मेरे पास है। जाओ।"

संन्यासी के आदेशानुसार स्नान कर सर्वानन्द भीगे वस्त्रों में आकर बैठ गया। संन्यासी ने झोले में से तरह-तरह की सामग्रियाँ निकालकर क्रिया संपन्न की। सर्वानन्द अवाक् होकर सारी कार्यवाही देखता रहा। यथा रीति दीक्षा देने के बाद संन्यासी ने उसके कान में बीज मंत्र सुनाया। कुछ देर ध्यानस्थ रहने के बाद संन्यासी ने कहा—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"आज तुम्हें अनेक कार्य करने पड़ेंगे। कई जन्मों की साधना वस्तु प्राप्त करोगे। यहाँ तक कि मुझसे भी महान् सिद्ध योगी बनोगे।"

अब तक सर्वानन्द के अंतर का विकास हो चुका था। उसने साष्टांग प्रणाम करते हुए कहा—"मुझे आशीर्वाद दीजिए गुरुदेव! मैं अपने कृतकार्य में सफल हो सकूं।"

संन्यासी ने कहा—"वत्स, वास्तव में मेरा कोई मूल्य नहीं है। समस्त कार्य जगन्माता की कृपा से हुआ है। उन्होंने मुझे यहाँ भेजा और आज वे स्वयं तुम्हें दर्शन देंगी। आज शुक्रवार, मकरसंक्रांति है। रात्रि के अंतिम पहर में तुम गुह्य-साधना करोगे। महाश्मशान स्थित, जहाँ प्रोथित महामुनि द्वारा स्थापित मातंगेश शिव विग्रह है, वहीं शवसाधना करनी होगी। अपनी शवसाधना के माध्यम से उस विग्रह में प्राण-प्रतिष्ठा करोगे। यहीं तुम सिद्ध योगी बनोगे। जन्म-जन्मांतर का फल आज तुम्हें प्राप्त होगा। किसी भी दैवी प्रकोप से तनिक भी भयभीत मत होना और न साधनाच्युत होना। तुम्हें डराया जायेगा, भयानक स्थितियाँ तुम्हारे सामने आयेंगी, पर तुम अपने कार्य में लगे रहना। लेकिन यह बात गुप्त रखना। केवल पूर्णानन्द को सारी बातें बता सकते हो। वह स्वयं योगी पुरुष है, तुम्हारा एक मात्र सहायक है। भक्ति के माध्यम से वह उच्चस्तर तक पहुँच गया है। उस पर भरोसा कर सकते हो। अब जाओ।"

सर्वानन्द ने पूछा—"आपके रहते मैं क्यों पूर्णा दादा से सहायता लूं?"

संन्यासी ने कहा—"मेरा काम समाप्त हो गया। इतना ही करने का मुझे आदेश दिया गया था। शेष कार्य पूर्णानन्द की सहायता से संपन्न करना है। तुम्हें कोई कठिनाई नहीं होगी।"

इतना कहने के पश्चात् संन्यासी द्रुतगति से जंगल के भीतर चला गया और सर्वानन्द घर की ओर चल पड़ा। कुछ दूर आने पर सहसा एक वृक्ष के नीचे से आवाज आयी—"कौन जा रहा है?"

बचपन से जिस आवाज को सर्वानन्द सुनता आ रहा है, उसे पहचानते देर नहीं लगी। दौड़ता हुआ वह अपने पूना दादा के पास पहुँचकर बोला—"मैं हूं, पूर्णा दादा!"

वृद्ध पूर्णानन्द ने उसे कलेजे से लगाते हुए कहा—"कहाँ चला गया था? मैं दोपहर से खोजते-खोजते हैरान हो गया। सुना कि आज तूने खाया तक नहीं खाया। अरे, तेरे कपड़े कैसे भींग गये?"

सर्वानन्द ने आज की सारी घटनाएँ विस्तार से कहते हुए पूछा—"अब क्या करना होगा?"

सर्वानन्द की बातें सुनते ही पूर्णानन्द की आँखें चमक उठीं। आज के पहले सर्वानन्द कभी इस ढंग से बातें नहीं करता था। बिलकुल बोदा लगता था। पूर्णानन्द को विश्वास हो गया कि आज उसके गुरु वासुदेव आचार्य मूर्तरूप धारण करेंगे। वह इसी दिन की प्रतीक्षा में इतने दिनों तक लगा रहा। उसने कहा—"तुम यहीं खड़े रहो। मैं घर से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सारा सामान लेकर अभी आता हूँ ।"

पूर्णानन्द को वापस आया देखकर घर के लोगों ने पूछा--"कुछ पता चला ?"

पूर्णानन्द ने कहा--"हाँ, पता चल गया है । जरा क्रोध ठंडा हो जाय तो अपने आप आ जायगा । चिन्ता की बात नहीं है । कल उसे मनाकर ले आऊँगा ।"

पूर्णानन्द इस वक्त आवश्यक सामग्री की खोज में व्यस्त था । खासकर वासुदेव के दिए हुए ताम्रफलक की आवश्यकता थी । इस समय वह सर्वानन्द से कहीं अधिक उत्तेजित हो गया था । आज उसका स्वप्न पूरा होने जा रहा है ।

पूर्णानन्द से ताम्रफलक हाथ में लेकर सर्वानन्द ने गौर से उसे देखते हुए कहा--"पूर्णा दादा, बड़े आश्चर्य की बात है, इस फलक की सारी बातें गुरुदेव मुझे बता चुके हैं । यही बीज मंत्र, यही दीक्षा मंत्र । हूबहू सब यही था ।"

पूर्णानन्द चकित दृष्टि से सर्वानन्द के मुंह की ओर देखता रह गया । जिस बालक को ठीक से अक्षर ज्ञान नहीं है, आज वही ताम्रफलक पढ़ रहा है ? यह तो साक्षात् भगवती की कृपा है । पूर्णानन्द ने कहा--"यह देवी की कृपा है । आओ, चलो, काम प्रारंभ करें ।"

सर्वानन्द ने कहा--"अब एक सामान बाकी रह गया । चाण्डाल का शव । वह कहाँ है ?"

--"उसकी चिंता छोड़ो । उसका प्रबंध मैं कर दूँगा । इस वक्त हमें जीन वृक्ष के नीचे जल्द पहुँचना है ।"

चलते-चलते सर्वानन्द ने कहा--"बिना शव के बीजमंत्र का उपयोग नहीं हो सकता । आखिर इस जंगल में चाण्डाल का शव तुम्हें कहाँ मिलेगा ?"

पूर्णानन्द ने कहा--"मैं अपना शव तुम्हें दूँगा । वास्तव में मैं चाण्डाल हूँ । मेरे शव के ऊपर बैठकर तुम्हें साधना करनी होगी । मेरे गुरु यानी तुम्हारे दादाजी का यही आदेश था ।"

सर्वानन्द ने कहा--"मुझे यह साधना नहीं करनी है । जिस व्यक्ति को मैं अपने प्राणों से प्यारा समझता हूँ, जिनकी गोद में बड़ा हुआ हूँ, जिसने मुझे अपने माँ-बाप, पत्नी, पुत्र सबसे अधिक स्नेह दिया, उसके शव पर नहीं बैठ सकता । भले ही पुनः जड़-बुद्धि का बन जाऊँ ।"

पूर्णानन्द को क्रोध आ गया । ऐन मौके पर लड़का विमुख हो गया, देखकर उसने कहा--"तब एक ही उपाय है । मैं डाकातिया नदी में जाकर आत्महत्या कर लूंगा । तुम्हारे या मेरे भाग्य में देवीदर्शन नहीं लिखा है ।"

पूर्णा दादा आत्महत्या करेंगे ? सर्वानन्द भय से काँप उठा । कहा--"नहीं पूर्णा दादा, ऐसा मत करो । तुम जो कहोगे, वही करूँगा । पर तुम अगर मर गये तो मैं कैसे जीवित रहूँगा ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्णानन्द ने कहा––"उसकी चिंता छोड़ो। पहले काम शुरू करो। यह याद रखना कि इस साधना में अनेक विघ्न उत्पन्न होंगे। भूत-प्रेत तथा अमानवीय जीव डरावनी स्थितियाँ उत्पन्न करेंगे, पर डरना मत। अगर चूक जाओगे तो मर जाओगे। शव पर से तब तक मत उतरना जब तक देवी प्रत्यक्ष रूप में आकर दर्शन न दें। जब देवी वरदान माँगने को कहें तो कहना कि पूर्णा दादा से पूछिये।"

इतना कहने के बाद पूर्णानन्द योगासन लगाकर बैठ गया। थोड़ी देर बाद उसकी प्राणवायु निकल गयी। मंत्रोच्चार के बाद सर्वानन्द पूर्णा दादा के शव पर बैठ गया। बीजमंत्र का जप प्रारंभ हुआ। चारों ओर अंधियारी रात। दूर डाकातिया नदी कलकल ध्वनि करती हुई बह रही थी। एकाएक तेज आँधी आयी, फिर बिजली चमकने लगी। विद्युत के प्रकाश में अनेक हिंसक जंतुओं का उपद्रव प्रारंभ हो गया। पास का एक वृक्ष जड़ से उखड़कर गिर गया। दूर से आग की एक लहर पास आती गयी। चमगादड़, उल्लू, कुत्ते, बिल्ली तथा शृगालों के चीत्कार से वातावरण भयानक हो उठा। साधक का कलेजा पीपल के पत्ते की तरह काँपने लगा। इन भयानक दृश्यों को देख वह जोर-जोर से बीज मंत्र पाठ करने लगा।

भोर के पहले एक अपूर्व प्रकाश संपूर्ण जंगल में फैल गया। चारों ओर से अपूर्व सुगंध आने लगी। मधुर कंठ से आवाज आयी––"वत्स, आँखें खोलो। भय का अवसान हो चुका है। तुम्हारी साधना पूर्ण हुई।"

सर्वानन्द प्रत्यक्ष रूप से देवी को देखकर विस्मय से भयाक्रांत हो उठा––"माँ, जगदम्बे, मेरी माँ, आ गयी। पूर्णा दादा, माँ आ गयी।"

पूर्णा दादा की ओर से कोई जवाब न पाकर सर्वानन्द व्याकुल हो उठा। देवी ने कहा––"वर माँगों वत्स! तुम्हारी कई जन्मों की साधना आज पूर्ण हुई है। तुम आज से नियत-पुत्र हो गये। अब से जो इच्छा करोगे, वही प्राप्त करोगे।"

सर्वानन्द ने गदगद होकर कहा––"माँ, मैंने तो आपका दर्शन पाकर सब कुछ पा लिया। अब आप मेरे पूर्णा दादा को इच्छित वर दे दीजिये।"

जगन्माता मधुर मुस्कान के साथ बोलीं––'तथास्तु'। इसके बाद पूर्णानन्द के मस्तक को चरण से स्पर्श किया––

उत्तिष्ठ वत्स, मुक्तोऽसि योग निद्रां परित्यज्य।
पश्य मे परमं रूपंषथेप्सितं वरं वृणु॥

"पूर्णानन्द, उठो। अब तुम मुक्त हो गये हो। योगनिद्रा त्यागकर मेरा दर्शन करो। मैं तुम्हें वर दूँगी।"

देवी के चरणस्पर्श से पूर्णानन्द जीवित हो उठा। उसने देवीस्तव पाठ करने के बाद साष्टांग प्रणाम किया। दोनों हाथों को जोड़ते हुए उसने कहा––"आज मेरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साधना सफल हो गयी। आपकी कृपा से, यदि वासुदेव मेरे गुरु न बनते तो मुझे यह सौभाग्य प्राप्त न होता। गुरुदेव ने कहा था कि एक दिन तुझे देवीदर्शन होगा। इसी आशा से मैं अब तक जीवित रहा। अब मुझे कुछ नहीं चाहिए। अगर आप कुछ देना चाहती हैं तो सर्वानन्द के कथन को सत्य रूप में चरितार्थ कर दें। आज जटाधर के दरबार में इसने पूर्णिमा तिथि कहा है, जिसके कारण इसका घोर अपमान हुआ है। इसके कथन को सफल कर दें। आपके लिए कुछ भी असाध्य नहीं है।"

"ऐसा ही होगा।" इतना कहकर देवी अन्तर्धान हो गयीं।

सारा मेहार चौंक उठा। अपनी आँखों पर किसी को विश्वास नहीं हो रहा था। जो सो रहे थे, उन्हें जगाकर दिखाया गया। जो देखता, वही चौंक उठता--"अरे, यह क्या ? अभी आधी रात तक तो घना अंधियारा था और इस वक्त पूर्ण चन्द्रमा कैसे निकल आया ?"

सबसे अधिक आश्चर्य जटाधर को हुआ। नींद खुल जाने के बाद से वे बराबर जागते रहे। वे सोचने लगे--"क्या सर्वानन्द ने ठीक कहा था ? क्या आज वास्तव में पूर्णिमा है ? पर आधी रात तक तो अमावस्या थी। सोने जाने के पहले तक चाँद का कहीं पता नहीं था। काफी ऊहापोह करने पर भी उनकी समझ में कुछ नहीं आया। इसी चिंता में उन्हें फिर नींद नहीं आयी।

दूसरे दिन दरबार में उपस्थित पंडित-मंडली से इसका रहस्य पूछा गया तो लोग एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। संसार के इतिहास में प्रकृति की यह अद्भुत घटना थी। जटाधर ने सोचा--जिस व्यक्ति ने अमावस्या को पूर्णिमा कहा है, संभवतः उसके पास जाने से इसका समाधान हो सकता है।

राजा को अपने घर आते देख आगमाचार्य घबरा उठे। जटाधर ने कहा--"मैं छोटे पंडित सर्वानन्द से एक बार मिलना चाहता हूँ।"

उस वक्त सर्वानन्द अपने कमरे में कोई पुस्तक पढ़ रहा था। उसके चेहरे से अपूर्व आभा निकल रही थी। जटाधर को देखते ही सर्वानन्द ने पूछा--"कहिये राजन, कैसे शुभागमन हुआ ? कुशल है न ?"

सर्वानन्द के रंगढंग से न केवल जटाधर बल्कि बड़े भाई आगमाचार्य को भी विस्मय हुआ ? जड़बुद्धिवाले युवक में सहसा यह परिवर्तन अचानक कैसे हो गया ? हावभाव से यह बोध नहीं हो रहा है कि यह अकाट्य मूर्ख है।

जटाधर ने कहा--"कल दरबार में मुझसे कुछ अभद्रता हो गयी थी। इसके लिए क्षमा माँगने आया हूँ। लेकिन एक शंका भी है। अमावस्या के दिन अर्द्धरात्रि के बाद सहसा पूर्णिमा कैसे हो गयी ? क्या आपको मालूम है कि इसका क्या रहस्य है ?"

सर्वानन्द ने कहा--"यह जगज्जननी की लीला है, अन्यथा अमावस्या कैसे पूर्णिमा के रूप में परिवर्तित हो सकती है ? इसका रहस्य वे ही बता सकती हैं। मैं तो जड़बुद्धि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठहरा। अगर वे न चाहतीं तो इस तरह की अविश्वसनीय और अकल्पनीय घटना क्यों होती ?"

सामान्य वार्तालाप से ही जटाधर को अनुभव हो गया कि जिसे हम जड़बुद्धि वाला समझते रहे, वह युवक भीतर ही भीतर प्रकाण्ड विद्वान् है। हम अपनी मूर्खता के कारण उसे मूर्ख समझते रहे। ठीक यही स्थिति बड़े भाई आगमाचार्य की रही। वे सर्वानन्द में हुए इस परिवर्तन को समझ नहीं पाये।

इस घटना के कारण पूरे राज्य में उसकी ख्याति फैल गयी। उसकी प्रतिभा को समझने के लिए अनेक ज्योतिषाचार्य, वेदाचार्य आदि आने लगे। आगंतुक विद्वान् उसका लोहा मानकर वापस चले जाते।

दीपावली के बाद महानिशा के दिन सर्वानन्द अपने आसन पर देवी की आराधना करने बैठा। इसी दिन उसने देवी के दसों रूपों का दर्शन किया। देवी ने उससे कहा—"आज तुम्हें तुम्हारे पूर्व जन्मों के दृश्य दिखाऊँगी। तुम कब कहाँ-कहाँ जन्म लेकर क्या करते रहे, यह सब इस जन्म में देख लो।"[1]

सर्वानन्द ने देखा कि वे विंध्याचल, वदरीनाथ, सिंधु शैल, गंगासागर, वाराणसी और कामाख्या में साधना करते रहे। एक जन्म में वे पुरी में थे। उन दिनों वहाँ जगन्नाथ मंदिर नहीं था। रात्रि में उन्हें निर्देश मिला—"कल समुद्र के किनारे चले जाना। घूमते घामते जहाँ तुम्हें अश्व के श्वेत बाल दिखाई दे, वहाँ से बालू हटाते रहना। कुछ दूर खोदने के बाद मठ का शिखर दिखाई देगा। वह मठ नील माधव का है।" इस निर्देश के आधार पर उन्होंने कार्य किया जो आज जगन्नाथ मंदिर के नाम से प्रतिष्ठित है। अब इस जन्म में मेहार तीर्थ में पूर्ण साधक बन गये हैं। अब उनका पुनर्जन्म नहीं होगा।

दोपहर का वक्त था। गाँव में एक चूड़ीवाला फेरी लगाता हुआ घूम रहा था। तालाब के किनारे एक वृक्ष के नीचे आने पर चूड़ीवाले ने देखा—लाल किनारे की साड़ी पहने, गौर वर्ण की एक महिला खड़ी है। उसके चेहरे पर मनोहारी मुस्कान थिरक रही है। पास पहुँचते ही महिला बोली—"सुनो बेटा, अगर तुम्हारे पास अच्छी चूड़ियाँ हो तो मुझे पहना दो।"

चूड़ियाँ पहनने के बाद महिला बोली—"यहाँ मेरे पास पैसे नहीं हैं। तुम एक काम करो। वह जो सामने मकान दिखाई दे रहा है, वहाँ चले जाओ। मेरे लड़के से पैसे माँग लेना। मैं तबतक नहाकर आती हूँ।"

न जाने क्यों चूड़ीवाले को संदेह हुआ। उसने पूछा—"अगर न दिया तो ?"

---

१. 'सर्वानन्द तरंगिनी' नामक पुस्तक के लेखक श्री शिवानन्द ने अपने ममेरे भाई षड़ानन के कथनानुसार इन जन्मों का उल्लेख किया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"देगा क्यों नहीं ? उससे कहना ताखे पर हड़िया है, उसमें मेरे पैसे है। कुल दे दे।" इतना कहने के बाद महिला घाट की ओर चली गयी।

मकान के समीप आकर चूड़ीवाला "भीतर कोई है ?" आवाज लगाने लगा। भीतर से सर्वानन्द ने आकर पूछा––"क्या बात है ?"

चूड़ीवाले ने कहा––"आपकी माँ ने मुझसे चूड़ियाँ पहनी हैं। दाम के लिए उन्होंने कहा कि मेरे लड़के से जाकर माँग लो।"

सर्वानन्द ने विस्मय के साथ पूछा––"मेरी माँ ?"

चूड़ीवाले ने सर्वानन्द को चौंकते देख घबराकर कहा––"जी हाँ, उन्होंने तो यही कहा था। यह भी बताया कि सामनेवाले ताखे पर एक हड़िया है जिसमें उनके पैसे रखे हैं, जाकर माँग लूं।"

सर्वानन्द को सारी बातें रहस्यमय लगी। भीतर कमरे में आकर हड़िया उड़ेलते ही उसने देखा––सचमुच उसमें पैसे हैं। सर्वानन्द की माँ का निधन हुए अनेक वर्ष गुजर गये हैं, तब तो यह माँ जगज्जननी ही होगी। बाहर आकर उसने सारे पैसे देते हुए कहा––"चलो तो जरा। देखूं मेरी माँ कहाँ है ?"

चूड़ीवाला तालाब के किनारे आकर चारों ओर देखते हुए कहा––"यहीं पर वे खड़ी थीं। यहीं मैंने उन्हें चूड़ियाँ पहनायी। यह देखिये, एक चूड़ी टूट गयी थी, उसके टुकड़े पड़े हैं।"

इतना सुनते ही सर्वानन्द धम से वहाँ बैठ गया और जमीन से मिट्टी उठाकर सारे शरीर पर मलने लगा। सर्वानन्द की इस हरकत को देखकर चूड़ीवाला भयभीत हो उठा। वहाँ से कुछ दूर हट गया। तभी सर्वानन्द ने कहा––"माँ, तुम कहाँ चली गयी। मुझे क्यों नहीं दर्शन दिया ?"

एकाएक तालाब का पानी हिला और उसमें से दो सुडौल हाथ ऊपर आये जिसमें चूड़ियाँ चमक रही थीं। दूसरे ही क्षण दोनों हाथ गायब हो गये।

सर्वानन्द ने चूड़ीवाले से कहा––"न जाने किस जन्म के पुण्य सें तुझे देवी ने दर्शन दिये। मैं तो अभागा रहा।"

सर्वानन्द को देवी ने दर्शन दिया है ? यह बात जो सुनता, वही चकित रह जाता। तब तो वह परम साधक है। उसके स्पर्श से, आशीर्वाद से, कृपा से हमारा कल्याण हो सकता है। वह चाहे तो हमारा दुःख, पीड़ा, दरिद्रता दूर कर सकता है। सर्वानन्द के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की बातें फैलती गयीं। आर्त-पीड़ित लोग उसकी कृपा पाने के लिए आने लगे।

एक दिन दूर किसी गाँव से डोली पर एक घायल व्यक्ति को लादकर लोग ले आये। सर्वानन्द अपने चिंतन में डूबा रहा। बाहर से करुण आवाज आयी—"ठाकुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुझे बचा लीजिये। गरीब आदमी हूँ। परिवार का अकेला व्यक्ति हूँ।"

बाहर डोली पर लेटे हुए वह तीन दिनों तक गुहार लगाता रहा। चौथे दिन सर्वानन्द ने बाहर आकर पीड़ित व्यक्ति से पूछा--"क्या बात है? इतना कलपता क्यों है?"

साथ आये व्यक्ति ने कहा--"ठाकुर पेड़ पर से गिर जाने के कारण इसका हाथ टूट गया है।"

पास बैठकर सर्वानन्द ने उसके हाथ पर अपना हाथ फेरते हुए कहा--"चल उठ जा।"

रोगी ही नहीं, उसके साथ आये सभी व्यक्ति एक दूसरे का मुँह देखने लगे। क्या ठाकुर का दिमाग खराब हो गया है? जो व्यक्ति दर्द से कराह रहा है, उससे कह रहे हैं--"चल उठ।"

"ठीक तो है, उठ।" पुनः सर्वानन्द गरजे।

इतने पर भी रोगी जब नहीं उठा तो डोली पर से उसे नीचे ढकेल दिया। आकस्मिक ढंग से गिर जाने पर व्यक्ति का हाथ मिट्टी से लग जाता है। रोगी का भी हाथ मिट्टी से लगा और तभी उसने अनुभव किया उसके हाथ में तनिक भी दर्द नहीं है। खुशी से उछलकर उसने सर्वानन्द के चरण पकड़ लिये।

नित्य आर्त-पीड़ित लोगों की भीड़ दरवाजे पर लगने लगी। किसी को देखते ही वे कहते--"अरे काका, आप क्यों दुखी हैं? आपकी लड़की कल तक ठीक हो जायगी। लो यह प्रसाद ले जाकर अभी खिला दो।"

दूसरे को देखकर कहते--"लड़के को इतना मारोगे तो वह घर से भागेगा ही। अब क्यों रोते हो। भाग गया है, जाकर अपना खोजो।"

आगंतुक फफककर रो पड़ा। बोला--"उसे वापस बुला दो ठाकुर। मैं कसम खाता हूँ, अब उसे कुछ नहीं कहूँगा :"

कुछ देर चुप रहने के बाद सर्वानन्द ने कहा--"अब उसे मारना या गाली देना बंद करना पड़ेगा। चौथे दिन अपने आप रात को आ जायेगा। उसे माँ का स्नेह खींच लायेगा। जाओ, मेरी बात याद रखना।"

इसके बाद एक दिन एक युवती को देखने पर कह उठे--"चिंता मत करो दीदी। इस बार चाँद सा बेटा होगा। यह लो, रुद्राक्ष के इस दाने की माला पहना देना। फिर उसकी अकाल मृत्यु नहीं होगी। सुबह शाम भगवती की पूजा करती रहना।"

अगर सर्वानन्द का मूड ठीक है तो लोगों का उपकार हो जाता था। यदि किसी कारण से उनका रूप उग्र हो गया है तो कोई उनके निकट जाने का साहस नहीं करता था। उस समय केवल एक. व्यक्ति उन्हें शांत कर पाता था। वे थे--पूर्णा दादा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्णा दादा ज्योंही सामने आ जाते त्योंही सर्वानन्द भोला भाला शिशु बन जाता। सर्वानन्द की इस कमजोरी को जो लोग जान लेते थे, वे सीधे सर्वानन्द के पास न जाकर पूर्णानन्द के पास आते। उनके माध्यम से अपना दुखड़ा सर्वानन्द के पास पहुँचाते थे।

इस प्रकार बीमार को स्वास्थ्य-लाभ का आशीर्वाद तो, किसी के पति के गायब होने पर बुलाने के लिए प्रसाद देना पड़ता था।

इन सभी कार्यों को करते हुए सर्वानन्द अपनी साधना में लगा रहता था। पूर्णानन्द छाया की भाँति हमेशा पीछे-पीछे लगा रहता था। सच तो यह है कि पूर्णा दादा के बिना सर्वानन्द कुछ कर नहीं पाता था। इधर सर्वानन्द नियमित रूप से जीन वृक्ष के नीचे स्थित सिद्ध आसन पर जाता और वहाँ घंटों योग साधना करता। इस बात को पूर्णा दादा के अलावा अन्य कोई जान नहीं पाता था।

एक दिन देर तक जब सर्वानन्द ध्यानस्थ रहा तब पूर्णानन्द जरा परेशान हो उठा। रात्रि का प्रथम प्रहर बीत चुका था। चारों ओर जंगली जानवर चक्कर काट रहे थे। स्वामीभक्त सेवक अपने गुरु के पौत्र की रखवाली में चौकस था। पूर्णानन्द की परेशानी का कारण वल्लभा थी। जब तक सर्वानन्द भोजन नहीं कर लेगा तब तक वह भी नहीं करेगी। इस जंगल में उसे छोड़कर जाने की इच्छा नहीं हो रही थी।

एकाएक सर्वानन्द की आवाज आयी—"क्या सोच रहे हो, पूर्णा दादा।"

पूर्णानन्द ने कहा—"रात काफी हो गयी है। चलो, घर चलें। बहू थाली परोस-कर इंतजार कर रही होगी।"

सर्वानन्द ने कहा—"आज मैं घर वापस नहीं जाऊँगा। कार्य संपूर्ण होने में देर होगी। मेरे लिए चिंता मत करो। मुझे भूख भी नहीं है। आज का अनुष्ठान मुझे पूर्ण करना है।"

पूर्णानन्द चुप रहा। वह स्वयं भूखा रह गया। जब तक सर्वानन्द नहीं चलेगा तब तक वह यहीं बैठा रहेगा। भोर के समय उसने सोचा—अब डर नहीं है। एक बार घर जाकर लोगों को समाचार दे आऊँ। घर पर आकर देखा—सभी अपने-अपने कार्य में व्यस्त हैं। किसी को सर्वानन्द के बारे में कोई चिंता नहीं है। पूर्णानन्द ने सोचा—शायद सर्वानन्द के न आने के कारण बहू रात को बिना खाये रह गयी होगी। उसने पूछा—"बहू, तुमने रात को भोजन किया था?"

वल्लभा ने कहा—"क्यों? भोजन क्यों नहीं करूँगी? यह ठीक है कि कल जरा देर से भोजन करना पड़ा था, क्योंकि वे अधिक रात गये आये थे।"

पूर्णानन्द ने विस्मय से पूछा—"क्या? सर्व रात को आया था? तब तो उसने किया होगा?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वल्लभा ने कहा––"नहीं, भोजन उन्होंने नहीं किया। बोले––आज वापस आने में जरा देर हो गयी। मैं भोजन नहीं करूँगा। भूख नहीं है। तुम लोग खाना खा लेना। मैं अभी जा रहा हूँ। मेरे साथ पूर्णा दादा हैं। मेरे बारे में चिंतित होने की जरूरत नहीं। पूर्णा दादा भी नहीं खायेंगे।"

पूर्णानन्द को अच्छी तरह याद है कि सर्वानन्द रात भर अपने आसन पर बैठा रहा। एक क्षण के लिए भी नहीं उठा था। वह स्वयं सर्वानन्द की चौकसी करता रहा। अब योगी पूर्णानन्द को विश्वास हो गया कि मेरा 'सर्व' साधना के उच्च शिखर पर पहुँच गया है। उसे अलौकिक शक्ति प्राप्त हो गयी है। मन ही मन देवी भगवती को उसने प्रणाम किया। अगर वल्लभा गौर से देखती तो उसकी आँखों में खुशी के आँसू नजर आते।

इस बीच एक अप्रिय घटना हो गयी। संभवतः यह होना ही था, वर्ना सर्वानन्द मेहार से अन्यत्र न जाते। जटाधर काश्मीर घूमने गये थे। वहाँ से एक कीमती दुशाला सर्वानन्द के लिए खरीद लाये। कभी का जड़ बुद्धिवाला व्यक्ति आज मेहार का गौरव है। एक दिन उन्हें दरबार में बुलाकर सम्मान के साथ दुशाला भेंट किया गया। उस दुशाले को कंधे पर रखकर सर्वानन्द चारों ओर घूमते थे। एक दिन एक वारांगना ने कहा––"ठाकुर, इतनी सर्दी पड़ रही है और दुशाला क्यों नहीं ओढ़ते?"

—"मुझे सर्दी नहीं लगती।"

वारांगना ने कहा––"तब मुझे दे दीजिए। मैं जाड़े में इसका उपयोग करूँगी।"

सर्वानन्द ने दुशाला उसकी ओर फेंकते हुए कहा––"अच्छा, ले माँ, तू ओढ़ना।"

राह चलते लोगों ने इस दृश्य को साश्चर्य देखा। एक वारांगना को सर्वानन्द ठाकुर ने कीमती दुशाला दे दिया। लोगों को संदेह हुआ। बात जटाधर के पास पहुँची। सर्वानन्द के प्रति संचित श्रद्धा इस अपमान के कारण गायब हो गयी। मेरा उपहार एक वारांगना को सर्वानन्द ने कैसे दे दिया? उन्हें एक दिन दरबार में बुलाया गया।

जटाधर अपमान से पीड़ित था। तुरत प्रश्न हुआ––"कहिये आचार्यजी, आपके लिए उतनी दूर से श्रद्धापूर्वक दुशाला खरीद लाया और आप उसका उपयोग भी नहीं करते?"

सर्वानन्द के जवाब देने के पहले ही एक पार्षद ने व्यंग्य किया––"जब दुशाला पास में हो तभी तो उपयोग करेंगे। सुना है कि आपने अपनी किसी चहेती को दे दिया है।"

सर्वानन्द को रहस्य समझते देर नहीं लगी। उसने कहा––"दुशाला तो मेरे घर पर है।"

जटाधर इस झूठ पर और चिढ़ गये। बोले––"आपके घर पर है? सुना है कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपने किसी वारांगना को दे दिया है। अगर आपके घर है तो उसे मँगवाइये। जरा मैं भी देखूं।"

सर्वानन्द ने साथ आये अपने भांजे से कहा—"षड़ानन, तुम घर जाकर अपनी मामी से दुशाला माँग लाओ।"

षड़ानन घर आकर आंगन में खड़े होकर पुकारने लगा—"मामी, ओ मामी। घर में राजा साहब ने जो दुशाला मामा को दिया था, उसे दे दो।"

थोड़ी देर में एक हाथ दरवाजे के संध से बाहर निकला जिसमें दुशाला था। षड़ानन के पास आने के पहले ही मामी ने उसे आँगन में फेंक दिया। मामी का व्यवहार षड़ानन के लिए विस्मयजनक था। उसने यह भी अनुभव किया कि यह हाथ मामी का नहीं था। देर होते देख वह दुशाला लेकर झटपट चल पड़ा। बाहर कुछ दूर आते ही मामीजी से मुलाकात हुई। षड़ानन को देखकर वल्लभा ने पूछा—"क्या बात है षड़ानन ? कैसे आये थे ?"

लहमे भर में षड़ानन सारा रहस्य समझ गया। दुशाला देनेवाली मामी नहीं, स्वयं माँ जगदम्बा थीं जो पुत्र के सम्मान की रक्षा के लिए मामी की भूमिका निभा रही थीं। षड़ानन ने कहा—"कुछ नहीं मामी।" इतना कहकर वह तेजी से आगे बढ़ गया।

षड़ानन के आने के पहले ही जटाधर ने उस गणिका के यहाँ से सर्वानन्द द्वारा दिये दुशाले को मँगा लिया था। दोनों दुशालों को ठीक से परखने पर जरा सा भी अन्तर दिखाई नहीं दिया। यह देखकर जटाधर को अपार आश्चर्य हुआ। बड़े ही मुलायम स्वर में जटाधर ने कहा—"यह कैसे हुआ ठाकुर ? मैं अपनी गलतफहमी के लिए क्षमा चाहता हूँ।"

सर्वानन्द का चेहरा कठोर हो गया। उसने कहा—"जहाँ का अधिपति मुझे अविश्वास की दृष्टि से देखता है, उसके राज्य में न रहना ही मेरे लिए मंगलकारी है।"

इतना कहकर सदानन्द दरबार से बाहर चले आये। इस समाचार से वल्लभा काफी चिंतित हुई। उसे सांत्वना देते हुए सर्वानन्द ने कहा—"तुम्हें चिंता करने की जरूरत नहीं। यहाँ का कार्य मैं पूरा कर चुका हूँ। शिवनाथ को शक्ति-मंत्र आज ही दे दूँगा। उसके कारण तुम्हारा कोई अमंगल नहीं होगा। स्वयं तुम भी अधिक दिनों तक यहाँ नहीं रहोगी।"

सर्वानन्द को हमेशा के लिए मेहार छोड़कर जाते देख परिवार तथा पुरजन के लोगों ने काफी समझाया। स्वयं जटाधर भी अनुरोध करने आये। सभी लोगों के अनुरोध को ठुकराकर एक दिन सर्वानन्द मेहार से चल दिये। इस यात्रा में उनके सहयोगी हुए पितृ तुल्य योगी पूर्णानन्द और भांजा षड़ानन।

तीनों व्यक्ति यात्रा करते हुए जैसोर आये। यहाँ के राजा थे—प्रतापादित्य।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपकी सभा के सभा पंडित थे--चंद्रचूड़ तर्कालंकार आगमवागीश। आप अधिकतर सेनहाटी गाँव में रहते थे। वहाँ एक चतुष्पाठी की स्थापना कर छात्रों को पढ़ाया करते थे। संपूर्ण बँगाल में आगम शास्त्र के प्रकांड विद्वान् थे।

एक दिन आगमवागीश ने देखा कि एक गौर वर्ण का युवक उनके पास आया। प्रणाम करने के बाद उसने कहा--"मेरा नाम सर्वानन्द भट्टाचार्य है। आपसे आगमशास्त्र पढ़ने के लिए आया हूँ। कृपया मुझे शिष्य के रूप में ग्रहण करें।"

"यह तो प्रसन्नता की बात है, वत्स! आओ।" आगमवागीश ने सादर स्वागत किया।

सर्वानन्द अपने को छिपाकर यहाँ अध्ययन करते रहे। कुछ दिनों बाद आगमवागीश ने अनुभव किया कि उनका छात्र अत्यन्त मेधावी है।

दिन को आगमवागीश से आगमशास्त्र का अध्ययन और रात को यौगिक क्रियाएँ करते कई वर्ष व्यतीत हो गये।

एक दिन स्नान के बाद जब सर्वानन्द गुरुदेव के पास आये तो देखा--वे उदास बैठे हैं।

उसने पूछा--"क्या बात है गुरुदेव? आज आप बड़े विषण्ण मालूम पड़ रहे हैं।"

आगमवागीश ने कहा--"बात ही कुछ ऐसी है। दक्षिण भारत से एक विद्वान् यहाँ शास्त्रार्थ करने आया है। कल दरबार में उससे शास्त्रार्थ होगा।"

सर्वानन्द ने कहा--"तब चिंता किस बात की। आप तो महान् शास्त्रज्ञ हैं।"

आगमवागीश ने कहा--"बात ठीक है। मुश्किल यह है कि वृद्ध होने के कारण स्मृति कमजोर हो गयी है। कहीं पराजित हो गया तो मेरा ही नहीं, जसोर का सम्मान समाप्त हो जायगा।"

सर्वानन्द को समझते देर नहीं लगी कि भावी आशंका से गुरुदेव भयभीत हैं। अब इनमें युवावस्था का आत्मबल नहीं है। सर्वानन्द ने कहा--"जसोर का सम्मान अक्षुण्ण रहेगा। राजा से कहकर शास्त्रार्थ की तिथि एक दिन आगे बढ़ा दीजिये। उनसे कहिये कि आगंतुक विद्वान् को पहले मेरे शिष्य से शास्त्रार्थ करना पड़ेगा जब वह पराजित हो जायेगा तब मुझसे शास्त्रार्थ होगा।"

आगमवागीश की आँखें फैल गयी। जो विद्वान् दिग्विजयी होकर मुझसे शास्त्रार्थ करने आया है, उससे मेरा छात्र शास्त्रार्थ करेगा। उन्होंने सोचा, इस शास्त्रार्थ से वे आगंतुक विद्वान् की विद्वता का आकलन कर लेंगे।

दूसरे दिन दरबार में सभी लोग उपस्थित हुए। एक ओर सर्वानन्द और आगमवागीश, मध्य में राजा और दूसरी ओर का सिंहासन आगन्तुक विद्वान् के लिए था। समय उत्तीर्ण होने पर भी जब आगन्तुक विद्वान् नहीं आये तब लोग आलोचना करने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लगे। एकाएक एक व्यक्ति ने दरबार में उपस्थित होकर महाराज को एक पत्र दिया। महाराज की आज्ञा से उस पत्र को मंत्री ने पढ़कर सुनाया——

"महाराजधिराज, कल रात मैंने एक स्वप्न देखा। मेरे इष्टदेव ने मुझे बताया कि कल तुम जिस व्यक्ति से शास्त्रार्थ करोगे, वह सामान्य पंडित नहीं है। उसकी जिह्वा पर सरस्वती का वास है। वह जगन्माता का पुत्र है। उससे शास्त्रार्थ करने पर विजयी नहीं हो सकोगे। मैं बिना शास्त्रार्थ किये अपनी पराजय स्वीकार कर रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि आप तथा जसोर की विद्वत्-मंडली मुझे क्षमा कर देगी।"

पत्र पाठ के बाद देखा गया——सर्वानन्द का सिंहासन खाली था।

चिंतित रूप में आगमवागीश घर लौटे। छात्र के रूप में यह कौन सिद्ध पुरुष उनके यहाँ आ गया? एक अव्यक्त आनन्द से उनका हृदय उल्लसित हो उठा। सर्वानन्द को देखते ही उसे गले से लगाते हुए उन्होंने कहा——"आज तुम्हारे कारण मेरा सम्मान बढ़ा है।"

इस घटना के कारण सर्वानन्द की चर्चा सर्वत्र होने लगी। सर्वानन्द यहाँ बिना आत्म परिचय दिये अध्ययन करता रहा। लेकिन अब बढ़ती भीड़ के कारण वह परेशान हो उठा। एक दिन उसने आगमवागीश से कहा——"आपकी कृपा से मेरा अध्ययन कार्य पूर्ण हो गया है। अब मैं वाराणसी जाने की अनुमति चाहता हूँ।"

इधर एक अर्से से आगमवागीश सर्वानन्द को यहाँ स्थायी रूप से रखने का उपाय सोच रहे थे। आज मौका पाकर वे बोल उठे——"जाना चाहते हो बेटा? पर अभी तक तुमने गुरु दक्षिणा नहीं दी।"

सर्वानन्द ने विनीत भाव से कहा——"आज्ञा कीजिए गुरुदेव।"

——"मैं चाहता हूँ कि मुझे कन्यादान से मुक्ति दो। एक मात्र कन्या को तुम ग्रहण कर लो।"

आगमवागीश के इस प्रस्ताव को सुनकर वह चौंक उठा। कहा——"गुरुदेव मैं विवाहित ही नहीं, एक पुत्र का पिता हूँ और मेरी उम्र काफी हो गयी है।"

आगमवागीश ने कहा——"इससे क्या हुआ? कुलीन ब्राह्मण एक से अधिक विवाह करते हैं। पुरुष की कोई उम्र नहीं होती। एक बात बता दूँ, मेरी बेटी तुम्हारे मार्ग में बाधक नहीं बनेगी। मैं गुरु दक्षिणा के रूप में यही स्वीकार करूँगा।"

सर्वानन्द कुछ देर तक मौन रहा। जगज्जननी का ध्यान करने के बाद उसने कहा——"ठीक है गुरुदेव, आपकी इच्छा पूर्ण हो।"

गौरी देवी से विवाह के बाद सर्वानन्द तांत्रिक साधना में निमग्न हो गये। कई वर्ष बाद गौरी देवी को एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जसोर के निवासी सर्वानन्द को अकेले में बड़बड़ाते देखते तो उन्हें आश्चर्य होता। कभी कभी कोई पूछ बैठता—"किससे बातें कर रहें हो, ठाकुर ?"

—"मैं अपनी माँ से बातें करता हूँ।"

आसपास किसी को न देखकर अनजान व्यक्ति उन्हें पागल समझता और जानकार यह समझते कि तांत्रिक व्यक्ति है, कुछ भी कर सकता है। धीरे-धीरे बालक बड़ा हुआ। आगमवागीश की इच्छा हुई कि अपने नाती का अन्नप्राशन धूमधाम से करें। एक तो वे स्वयं प्रतिष्ठित पंडित हैं, दूसरे जामाता कम प्रतिभावान नहीं है। वे अपनी सामर्थ्य के अनुसार प्रबंध करने लगे। सर्वानन्द इस ओर से पूर्ण उदासीन रहा। अन्नप्राशन का दिन समीप आ जाने पर भी जब सर्वानन्द बेखबर रहा तब आगमवागीश ने कहा—"बेटा, इस तरह निस्पृह रहोगे तो कैसे काम चलेगा। प्रथम नाती का अन्नप्राशन है, गाँव भर के लोग आयँगे।"

सर्वानन्द ने कहा—"आप जो कार्यभार मुझे देंगे, उसे कर दूँगा। मेरी ओर से आप निश्चित रहें।"

आगमवागीश बरतनों, सामानों तथा कार्य करनेवाले लोगों की सूची देते हुए कहा—"कल ही आयोजन है। मैं कैसे निश्चित रहूँ ?"

इतना कहकर वे भुनभुनाते हुए भीतर चले गये। उन्होंने समझ लिया कि कल सब गुड़ गोबर होगा। अचानक भोर के समय कलरव सुनकर उनकी नींद खुल गयी। तालाब के किनारे आकर उन्होंने देखा कि सैकड़ों लोग मौजूद हैं। कोई कड़ाही मांज रहा है, तो कोई पौना, कलछुल साफ कर रहा है। बड़े-बड़े चूल्हे बन रहे हैं। लकड़ी चीरी जा रही है। तरकारी, आटा, चावल, दूध आदि का भरपूर प्रवंध हो गया है। सारा दृश्य देखकर आगमवागीश को चक्कर सा आ गया।

समारोह में नवजात शिशु का अन्नप्राशन हुआ। उसका नाम रखा गया—शिवानन्द। यह सब कैसे हुआ और किसने रातभर में किया, इसे सर्वानन्द के अलावा अन्य कोई जान नहीं सका। अपने जामाता के प्रभाव को देखकर आगमवागीश स्वतः चमत्कृत थे।

शिवानन्द भी अपने पिता से बीज मंत्र प्राप्त कर दिग्विजयी पंडित हुआ था। उन्होंने अपने पिता के संबंध में 'सर्वोल्लास तन्त्र' पुस्तक लिखी। इसके अलावा 'त्रिपुरार्चन दीपिका', 'नवार्णव-पूजा पद्धति' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं जो तन्त्र-साहित्य की अमूल्य निधि है। शिवानन्द के सौतेले बड़े भाई ने अपने पिता के बारे में विस्तार से विवरण तैयार किया है—'सर्वानन्द तरंगिणी' में। सर्वानन्द के वंश में अधिकतर उत्तर पुरुष तांत्रिक हुए और वे लोग बंगाल के विभिन्न शहरों में रहते थे।

वरसात वीत जाने के वाद पुनः एक दिन सर्वानन्द ने अपने श्वसुर से कहा—'अब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुझे आज्ञा दीजिये, गुरुदेव। यहाँ का काम समाप्त हो गया है। मेरी बहुत दिनों से इच्छा है कि वाराणसी जाकर पठन-पाठन करूँ।"

आगमवागीश तथा गौरी ने काफी अनुनयविनय किया, पर सर्वानन्द सभी की बातों की उपेक्षा कर वाराणसी की ओर रवाना हो गये। साथ में पूर्णानन्द और षड़ानन थे।

वाराणसी नगर में प्रवेश करते ही उन्हें सर्वप्रथम एक ध्वनि सुनाई दी—"जय शिव शंभो।"

इस ध्वनि को सुनते ही उनका हृदय आनन्द से पुलकित हो उठा। उन्हें लगा जैसे इसी ध्वनि की तलाश में वे अब तक बेचैन थे। गंगा-स्नान के बाद तीनों व्यक्ति शारदा मठ में आये। यहाँ उन्हें सादर आश्रय दिया गया। मठ के भीतर भद्रकाली की प्रतिमा थी। सर्वानन्द नित्य इस देवी की तांत्रिक पद्धति से पूजा करने लगे। जगन्माता की कृपा इन पर सर्वदा रही।

थोड़े ही दिनों में काशी के नागरिकों में इनकी प्रतिभा, वाक् सिद्धि की ख्याति बढ़ गयी। काशी में तांत्रिकों का प्रभाव कभी नहीं रहा। बौद्धों के बाद शंकराचार्य के अनुयायियों का दबदबा था। ज्ञातव्य है कि काशी की ख्याति बाहरी विद्वानों के कारण बढ़ी है। स्थानीय पंडितों का कोई महत्व नहीं रहा।

सर्वानन्द की बढ़ती प्रतिष्ठा से दंडी स्वामी लोग नाराज हो उठे। उन लोगों ने सर्वानन्द के विरुद्ध षड़यंत्र करना प्रारंभ किया। उन्होंने कहना शुरू किया—सर्वानन्द स्वामी नहीं, भंड है। साधु समाज का कलंक है, आदि आदि।

इस अप्रतिष्ठा से सर्वानन्द चिंतित हो उठे। उसने सोचा कि इन मूढ़ लोगों को बुलाकर समझाना चाहिए। उन्होंने भंडारे का आयोजन किया। निमंत्रण भेजने पर दंडी स्वामियों ने आने से इन्कार कर दिया।

अन्त में पूर्णानन्द और षड़ानन दोनों प्रत्येक दंडी स्वामी के पास जाकर हाथ जोड़कर विनय करने लगे। महंतों को मनाया गया। सर्वानन्द को इतना नरम होते देख सभी ने उनके द्वारा आयोजित भंडारे में आना स्वीकार किया।

असली घटना भोजन के समय हुई। सभी यह देख रहे थे कि पत्तल पर पूरी, कचौड़ी, रायता, लड्डू, चटनी आदि परोसे गये हैं; पर जब कौर मुँह के पास ले जा रहे हैं तो वही मांस मछली बन जा रहा है। जल शराब बन गया है। सारा दंडी समाज इस चमत्कार से हतप्रभ हो गया।

तभी एक वृद्ध स्वामी ने कहा—"अगर सर्वानन्द स्वामी चमत्कार दिखा रहे हैं तो आप लोग भी दिखाइये। पत्तल पर तो सात्त्विक भोजन परोसा जा रहा है। आपके स्पर्श दोष से तामसिक पदार्थ बन रहा है। इसमें सर्वानन्द का क्या दोष ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"आप लोग केवल भंड साधु हैं। वास्तविक योगी को पहचान नहीं पा रहे हैं। वह देवी का भक्त है। उनका वरद पुत्र है। देवी की असीम कृपा उस पर है। अच्छा हो, हम सब उससे क्षमा माँग लें।"

सर्वानन्द भी यही चाहते थे। दंडी स्वामियों का अहम दूर हो गया। उन्हें समझते देर नहीं लगी कि सर्वानन्द उच्चकोटि का साधक है। उससे बैर रखना, अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने के बराबर है। इस घटना के बाद दंडी स्वामियों का उपद्रव शांत हो गया। वे सर्वानन्द का आदर करने लगे।

लेकिन यह आदर सर्वानन्द को रास नहीं आया। वे और ऊपर उठाना चाहते थे। एक दिन षड़ानन और पूर्णानन्द को बिना कोई सूचना दिये वे अंतर्धान हो गये। फिर उनकी कोई सूचना इन्हें कभी प्राप्त नहीं हुई।

सर वुडरफ ने (जिन्होंने स्वामी सर्वानन्द की जीवनी लिखी है) कहा है—"सर्वानन्द आज भी कायव्यूह योगाभ्यास करते रहने के कारण जीवित हैं। मेरे एक संवाददाता से एक सिद्ध महापुरुष की मुलाकात एक बार हुई थी। बातचीत के सिलसिले में सिद्ध महापुरुष ने मेरे संवाददाता को बताया कि चम्पकारण्य में स्वामी सर्वानन्द से मेरी मुलाकात हुई थी।"

बाद में उक्त सिद्ध महापुरुष न जाने कहाँ चले गये वर्ना सर्वानन्द के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त होती।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

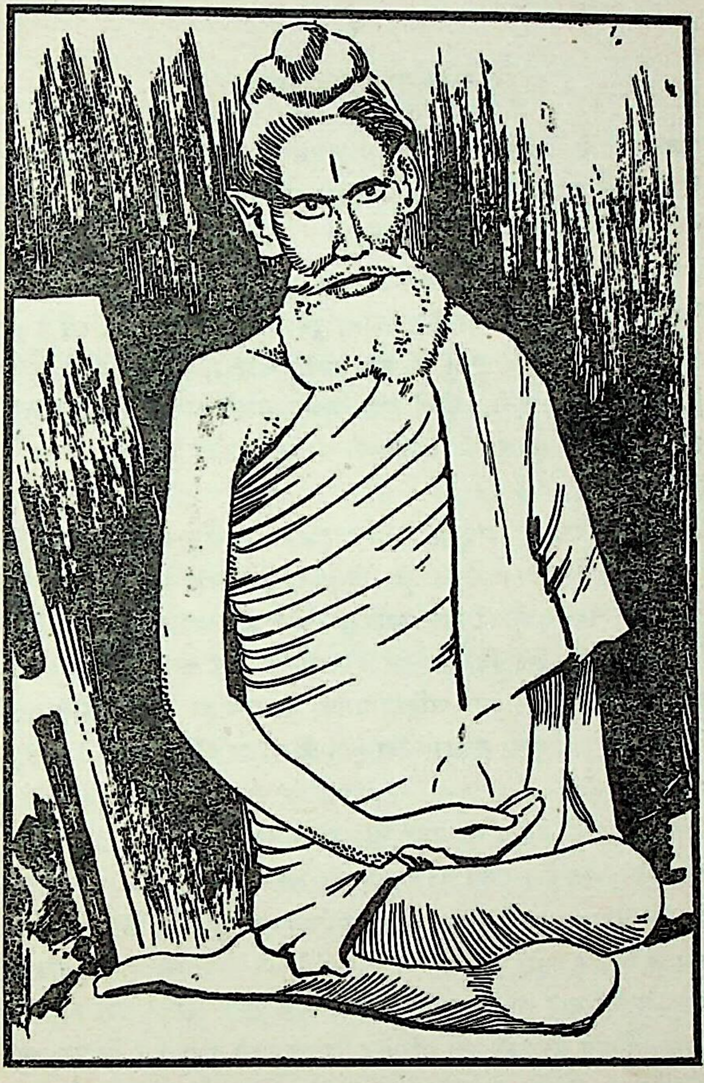

लोकनाथ ब्रह्मचारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२

लोकनाथ ब्रह्मचारी

दामोदर नदी के किनारे स्थित एक छोटा सा गाँव है जिसका नाम है––बेड़ू। शान्त परिवेश। आम, जामुन, अमरूद, कटहल आदि के अनेक वृक्ष हैं। ब्राह्मण, ठाकुर, वैश्य और शूद्र सभी वर्णों के लोग हिल मिलकर रहते हैं। कृषि प्रधान क्षेत्र होने के कारण अधिकतर लोग खेती करते हैं। यहाँ की मुख्य उपज है––धान और पाट। प्रत्येक किसान के घर में कुठिल्ला है। ग्वाला दूध और तंतुवाय कपड़ा देते हैं। कुम्हार मिट्टी के बरतन और लोहार कुल्हाड़ी, हल, तावा, कढ़ाही, कलछुल आदि मुहैया करते हैं। इनके अलावा नाई, धोबी, मोची आदि अपना अपना काम करते हैं। सप्ताह में दो बार हाट लगती है। लोग अपनी जरूरत की सामग्री खरीद लेते हैं। झगड़ा होने पर आपस में समझौता कर लेते हैं।

गाँव के एक किनारे बारहदरी है, जहाँ प्रायः जात्रा, कवियाल, गाना-बजाना होता है। अपने दैनिक कार्यों से खाली होने पर लोग यहाँ आकर अपना मनोरंजन करते हैं। इसी गाँव में बनर्जी बाबू सपरिवार रहते हैं। इस समय वे ओसारे में चुप-चाप बैठे हुक्का पी रहे हैं। चिंतित मुद्रा में कभी-कभी घर की ओर देख लेते हैं।

सहसा घर के भीतर से एक महिला प्रसन्न बदन बाहर आकर बोली––"बधाई हो बनर्जी महाशय, चाँद का टुकड़ा पैदा हुआ है। अब गाँव के लोगों का मुँह मीठा कराना पड़ेगा।"

चिंतित चेहरे पर आनन्द की लहरें नृत्य करने लगीं। बोले––"जरूर-जरूर। यह भी कोई कहने की बात है। सबसे पहले तुम कर लो।"

महिला ने कहा––"अभी तो सौरी (प्रसूति) का छूत है। फिर आऊँगी।"

लड़का धीरे-धीरे बड़ा होने लगा। अन्नप्राशन के बाद उसका नाम रखा गया–– सीतानाथ। बनर्जी बाबू का यह सबसे कनिष्ठ पुत्र था। बालक ज्यों ज्यों बड़ा होता गया त्यों त्यों माँ-बाप ही नहीं पूरा परिवार चिंतित रहने लगा। न तो वह अपने किसी मित्र से मिलता या खेलता था और न किसी से हंसता बोलता था। अक्सर घर के एक ओर चुपचाप बैठा न जाने क्या सोचा करता था। व्यंग्य डाँट फटकार का उस पर कोई असर नहीं होता था। पिता को कोई कारण समझ में नहीं आता। इधर लड़का बालक से किशोर बन गया।

गाँव के अनुभवी बूढ़ों ने राय दी कि घर के सभी लड़के विवाहित हैं। केवल यही क्वारा है। आप इसका विवाह कर दीजिये। पत्नी के आने पर इसका वैराग्य भाव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूर हो जायेगा। कुलीन ब्राह्मण का लड़का है। लड़की वालों की लाइन लग जायेगी। किसी सद्गृहस्थ लड़की को चुन लीजिए।

बनर्जी बाबू को यह राय पसन्द आ गयी। वे उपयुक्त लड़की की तलाश करने लगे। घर की बहुओं में इस विषय पर चर्चा होने लगी। अपने विवाह की भनक लगते ही सीतानाथ नाराज हो गया। उसने दृढ़ता के साथ अपने पिता से कहा––"मैं विवाह नहीं करूँगा। आप कृपया भविष्य में इसके लिए कष्ट न करें।"

लड़के का विरोध देखकर बनर्जी बाबू को पुनः जोर देने का साहस नहीं हुआ। जो लड़का विवाह नहीं करना चाहता, उसके मत्थे लड़की मढ़ना ठीक नहीं है। एक दिन माँ का निधन हो गया। पत्नी के जाने के बाद बनर्जी बाबू उदास रहने लगे। अन्त में एक दिन वे भी चले गये। धीरे-धीरे सभी भाई वृद्ध हो गये। नाती-पोतों से घर भर गया। एक दिन सभी भाइयों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि सबके पीछे आने वाला सीतानाथ सबसे आगे चला गया। केवल चालीस वर्ष की उम्र में।

अपनी मृत्यु के बाद सीतानाथ ने आश्चर्य के साथ देखा कि वह एक अनजाने देश में आ गया है। यहाँ न रोग है और न शोक। जरा भी नहीं है। सभी चिर युवा हैं, प्रसन्न हैं। इस लोक को वह जितनी धीरता से देखता, उसे उतना ही आश्चर्य होता। लेकिन पता नहीं, कौन अलक्ष्य भाव से अक्सर उसके कानों के पास आकर कहता–– "इतनी जल्दी तुम क्यों चले आये? अभी तुम्हें वहाँ अनेक कार्य करना है। जब तक शेष कार्यों को पूरा नहीं कर लोगे तब तक यहाँ नहीं रह पाओगे। पुनः तुम्हें वापस जाना पड़ेगा। वहाँ कुछ ऐसी समस्याएँ हैं जिन्हें तुम्हें सुलझाना है। जाओ, अब देर मत करो।"

मनुष्य को अपने कर्मभोग के लिए बार-बार जन्म लेना पड़ता है। सीतानाथ को अपने पूर्व कर्मों के लिए पुनः इस पृथ्वी पर जन्म लेना पड़ा। इस बार वे उसी बंगाल प्रांत में लोकनाथ की भूमिका में अवतरित हुए।

चौबीस परगना जिला के कचुआ ग्राम में पंडित रामनारायण घोषाल की ख्याति दूर-दूर तक है। कट्टर हिन्दू, देव द्विजों के प्रति निष्ठावान। मकान के बाहर बैठे इष्ट नाम जप रहे थे। भीतर से पत्नी की प्रसव वेदना की आवाज आ रही थी। थोड़ी देर बाद शंख तथा मंगल ध्वनि की आवाजें आने लगीं। घोषाल महाशय को समझते देर नहीं लगी कि परिवार में एक नये प्राणी का आगमन हो गया है। प्रसूति गृह में आकर उन्होंने देखा––जमीन पर चाँद का एक टुकड़ा है जिसकी आभा से पत्नी का चेहरा चमक रहा है। यह सन् १७३१ ई० की घटना है।

प्रसूति-गृह से बाहर आते ही उनकी आँखें एक अनजाने आनन्द से चमक उठी। बहुत दिनों से उनके मन में एक आकांक्षा पल रही थी। वे स्वयं भी चाह रहे थे कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस बार भगवान् उन्हें पुत्र दें ताकि उनकी इच्छा पूर्ति हो सके। मन में संदेह था कि कहीं पुत्री हुई तो उनकी कामना पूरी न हो सकेगी। भगवान् की असीम कृपा से अब अपनी उस इच्छा को अवश्य पूर्ण करेंगे। दर असल वे अपने एक पुत्र को संन्यासी बनाना चाहते थे। हर बार पत्नी विरोध करती रही। लगातार तीन पुत्रों के बारे में विरोध होता रहा। इस बार गर्भवती होते ही पत्नी ने कहा--"अब तक मैं तुम्हारी बात नहीं मानती थी। अगर इस बार लड़का हुआ तो तुम उसे संन्यास में दीक्षित कर लेना। मैं विरोध नहीं करूँगी।"

माँ की स्नेह के साये में बच्चा बड़ा होता गया। अन्नप्राशन और नामकरण हुआ। नाम रख गया--लोकनाथ। घोषाल महाशय उसे देखकर प्रसन्न होते। कभी-कभी उसके साथ खेलनेवाली लड़की आकर कहती--"ताऊजी, लोकनाथ भैया को न जाने क्या हो गया है। वे न बोल रहे हैं और न आँखें खोल रहे हैं। धक्का देने पर भी कुछ नहीं बोलते।"

लोकनाथ के साथ अहरह खेलनेवाली लड़की सुमित्रा लोकनाथ के लिए झाड़ू लगाकर जगह साफ करती, आसन बिछाती, खेल का सामान लाती, पूजा के लिए फूल, बेलपत्ती, दूर्वा लाती। लोकनाथ पूजा करते समय अक्सर ध्यानस्थ हो जाता। उसकी आँखें स्थिर हो जाती और सारा शरीर जड़वत हो जाता था। यह दृश्य देखकर सुमित्रा घबरा उठती थी। पंडित रामनारायण घोषाल ने एक दिन स्वयं अपनी आँखों से यह दृश्य देखा। लोकनाथ के भाव को देखकर समझ गये कि उनका संकल्प ठीक है। संन्यासी के सारे लक्षण बालक में है। शायद इसलिए पत्नी दैवकृपा से राजी हुई है।

शुभ दिन देखकर घोषाल महाशय एक दिन भारत प्रसिद्ध मनीषी भगवान् गांगुली के यहाँ अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिये गये। गांगुलीजी उस समय ताड़पत्रों का अध्ययन कर रहे थे। इन्हें देखते ही उन्होंने पूछा--"कहिये, घोषाल महाशय, कैसे कष्ट किया आपने ? आसन लेकर बैठ जाइये।"

घोषाल महाशय ने प्रणाम करने के बाद सारी कहानी सुनाते हुए कहा--"पत्नी भी राजी हैं। इस समय आपके बराबर विद्वान् बंगाल में अन्य कोई नहीं है। आप मेरे बालक का गुरु बनकर उसे संन्यास दें।"

"मैं ?" भगवान् गांगुली चौंके। पुनः उन्होंने कहा--"इसके लिए मुझे कुछ सोचने का अवसर दें।"

आज वह शुभ दिन है जब लोकनाथ का उपनयन संस्कार सम्पन्न होगा। गाँव के अधिकांश लोग इस समारोह को देखने आये थे। अपने बालक को कोई जल्द संन्यासी नहीं बनाता। यह एक अद्‌भुत घटना है। ठीक इसी दिन गाँव में एक और घटना हो गयी। लोकनाथ के एक साथी का नाम बेनीमाधव था। उसका भी आज ही उपनयन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हो रहा था। न जाने क्यों वह भी जिद्द कर बैठा कि लोकनाथ के साथ संन्यास लेगा। उसके माँ-बाप तथा अन्य लोगों ने काफी समझाया, पर वह अपनी जिद्द पर अड़ा रहा। लाचारी में लोगों ने अनुमति दे दी।

यज्ञोपवीत संस्कार के बाद लोकनाथ घोषाल, बेनीमाधव बनर्जी तथा भगवान् गांगुली यात्रा पर निकल पड़े। इनके पीछे गाँव के लोग आ रहे थे। गाँव की सीमा के पास आकर गुरु भगवान् गांगुली ने पीछे की ओर मुड़कर कहा—"अब इसके आगे केवल हम तीनों जायेंगे। आप लोग अपने घर वापस चले जाइये।"

इस आदेश को सुनते ही रामनारायण घोषाल ने कहा—'शिवास्ते सन्तु पंथानम्।'

लेकिन माँ से यह दृश्य सह्य नहीं हो सका। वह फफककर रोती हुई बोल पड़ी—"अरे मेरे लाल, मेरे राजा, लौट आ, माँ की गोद में।" इसके साथ ही वह पछाड़ खाकर गिर पड़ी। उस समय सूर्यास्त हो रहा था और तीन यात्री अनजाने पथ की ओर बढ़ रहे थे। परिजन, पुरजन, गृह और जन्मभूमि को त्यागकर। यह घटना सन् १७४२ ई० में हुई थी।

मुगलों के शासन का सूर्यास्त होने के कारण मार्ग विपदाओं से भर गया था। भगवान् गांगुली अपने दोनों शिष्यों को आगत आपदाओं से बचाते हुए एक दिन कलकत्ता स्थित कालीघाट आये। उन दिनों कालीघाट के पास घनघोर जंगल था जहाँ अनेक साधु तपस्या करते थे। दिन में भी लोग यहाँ आने में डरते थे।

संन्यासियों को कौपीन पहने तथा सिर पर जटा रखे देखकर लोकनाथ को आश्चर्य हुआ। आचार्य भगवान् ने कहा—"आगे चलकर तुम्हें कौपीन पहनना पड़ेगा और भीख माँगना पड़ेगा। कुछ दिनों बाद तुम्हारे सिर पर जटाएँ होंगी।"

सहसा लोकनाथ ने प्रश्न किया—"जब हम गृहत्यागी हो गये हैं तब परिवारवालों का अन्न या उनकी कृपा क्यों ग्रहण करते हैं?"

एक तेजस्वी बालक के मुँह से इस तरह की बातें सुनकर आचार्य महाशय समझ गये कि लोकनाथ असाधारण बालक है। उसी दिन तीनों व्यक्तियों ने निश्चय किया कि यहाँ से कहीं दूर चला जाय जहाँ परिवार का एक भी सदस्य न आ सके और न निश्चित स्थान का पता बताया जाय। दूसरे दिन लोग अन्यत्र चले गये। भगवान् गांगुली अपने शिष्यों को कर्ममार्ग में लाकर अनासक्त कर्मयोग की शिक्षा देने लगे। ज्यों ज्यों समय व्यतीत होता गया त्यों त्यों भगवान् गांगुली को अनुभव होने लगा कि उनके दोनों शिष्य असामान्य हैं। बुढ़ापे में ऐसे शिष्यों को पाकर वे प्रसन्न हो उठे। इस प्रकार वे नित्य पैदल चलते रहे। दिन भर पैदल चलने के बाद गुरु शिष्यों से कहते—"तुम लोग यहीं आराम करो। मैं गाँव से आहार माँग लाता हूँ।" कुछ देर बाद गुरु तिल और दूध लाते। सभी एक साथ भोजन करते। आहार के बाद अध्ययन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का सिलसिला प्रारंभ हो जाता। शास्त्र, उपनिषद, दर्शन, वेदान्त आदि पढ़ाते। इस प्रकार तीस साल कठोर जीवन व्यतीत करने के बाद एक दिन लोकनाथ ने कहा—"गुरुदेव, अब तक आप आहार-वस्तु माँगकर लाते थे। अब हम युवा हो गये हैं। आज से आपको कष्ट करने की जरूरत नहीं है। हम दोनों आहार-वस्तु माँग लायेंगे।"

इस प्रकार तीनों यात्री माँगते, खाते, साधना करते, अध्ययन करते हुए गया आये जहाँ तथागत को ज्ञान प्राप्त हुआ था। गया से काशी आये। बाबा विश्वनाथ का दर्शन कर मथुरा चले गये। मथुरा, वृन्दावन दर्शन करने के बाद हरिद्वार आये।

गृहत्यागी संन्यासियों को बारह वर्ष बाद एक बार अपनी जन्मभूमि अवश्य जाना चाहिए। यह शास्त्रीय विधान है। यहाँ तो कई बारह वर्ष बीत गये हैं। सहसा एक दिन जब गुरु को इस बात का ध्यान आया तो वे घर की ओर लौट चले। बहुत दिनों बाद पुनः घर जाना पड़ेगा सुनकर दोनों शिष्य चकित रह गये। गुरु ने कहा—"गृहवासी बनने नहीं, बल्कि उसका मोह हमेशा के लिए त्यागकर आना पड़ेगा।"

दोनों शिष्य साधना के उच्चस्तर तक पहुँच चुके थे। अब उन्हें जन सामान्य के बीच जाने में संकोच नहीं होता था। राह चलते लोग इन्हें देखकर दूर से प्रणाम करते और इनके हाथ आशीर्वाद के लिए उठ जाते थे। आजकल 'नक्त व्रत' कर रहे हैं। एक दिन उपवास के बाद दूसरे दिन भोजन। इसके बाद दो दिन उपवास एक दिन भोजन, फिर तीन दिन उपवास और एक दिन भोजन करते हैं। इसी प्रकार ५, ७, ९ दिन का व्रत पालन कर रहे हैं। केवल यही नहीं, चींटी, मच्छर तथा कीड़े मकोड़ों के हमलों को सहन करना पड़ रहा है। एक दिन लोकनाथ ने चींटियों के काटने की शिकायत की, क्योंकि ध्यान के समय हिलना मना था। दूसरे दिन लोकनाथ ने देखा कि गुरुदेव उसके आसन के चारों ओर चीनी गिरा रहे हैं। लोकनाथ समझ गया कि चीटियों के हमले को सहन करते हुए साधना करनी होगी। इस प्रकार अध्ययन साधना करते हुए ये लोग बंगाल में आये।

सहसा लोकनाथ ने एक अद्भुत स्वप्न देखा। इस जन्म के पहले वह क्या था, कहाँ उत्पन्न हुआ था, आदि बातें उसने देखी। निद्रा भंग होने पर उसने गुरुदेव से कहा—"गुरुदेव, मैं पूर्व जन्म में वेड़ू गाँव में पैदा हुआ था। जीवन भर अविवाहित था। कर्मभोग पूरा न होने के कारण मेरा पुनर्जन्म हुआ है। उस जन्म मे मेरा नाम सीतानाथ बनर्जी था। दामोदर नदी के किनारे छोटा सा गाँव है।"

शिष्य की बात सुनकर भगवान् गांगुली चौंके। अपने मन का संशय दूर करने के लिए वे शिष्यों के साथ वेड़ू गाँव आये। गाँव के वृद्धों से अद्भुत जानकारी मिली। गुरु को समझते देर नहीं लगी कि शिष्य को जातिस्मरता प्राप्त हो गयी है। उस दिन उन्हें लगा जैसे उन्हें प्रत्यक्ष भगवत-दर्शन हुआ है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँव के समीप आते-आते शाम हो गयी। गुरु ने आदेश दिया कि रात यहीं वृक्ष के नीचे गुजारेंगे। गाँव में सुबह जायेंगे। दूसरे दिन सवेरे गाय चरानेवाले बालकों ने देखा कि एक वृक्ष के नीचे तीन साधु बैठे हैं। उन लोगों ने घर जाकर यह समाचार दिया। देखते-देखते लोगों की भीड़ एकत्रित हो गयी। भीड़ से एक महिला आगे बढ़ आयी और तेज नजरों से देखती हुई बोली—"अरे, यह तो लोकनाथ दादा हैं और वेनी दादा भी हैं।"

धीरे-धीरे सभी लोगों ने तीनों व्यक्तियों को पहचान लिया। लोकनाथ की माँ स्वर्गवासी हो गयी हैं। पिता अभी तक जीवित हैं। उनके साथ तीनों पुत्र तथा पौत्र पौत्रियाँ आये। यहाँ कई दिन रहने के बाद आचार्य भगवान् दोनों शिष्यों को लेकर काबुल चले गये।

महीनों यात्रा करने के बाद तीनों व्यक्ति काबुल पहुँचे। यहाँ आने का उद्देश्य था—मौलाना सादी से ज्ञान प्राप्त करना। उनकी गणना विश्व विश्रुत विद्वानों में की जाती थी। भगवान् आचार्य अपने दोनों शिष्यों के साथ उन्हें अपना गुरु बनाकर कुरान की शिक्षा लेने लगे। कई महीने अध्ययन करने के बाद इन लोगों ने अनुभव किया कि यहाँ आना व्यर्थ हुआ। सारी तपस्या का मूल है—ब्रह्मचर्य जीवन। गुरु ने निश्चय किया कि अपने शिष्यों को योगी बनाऊँ। इनके कर्ममार्ग को प्रशस्त करने के लिए अष्टांग-योग की शिक्षा देनी चाहिए—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा और समाधि। इसके द्वारा ही ये अष्टैश्वर्य प्राप्त कर लेंगे। बाह्य जगत् से दोनों का संबंध विच्छेद करके शिष्यों को योग सिखाने लगे। योगाभ्यास करते चालीस वर्ष गुजर गये। लोकनाथ की जटाएँ जमीन चूमने लगी। उसके चेहरे से दिव्य ज्योति प्रकट होने लगी। एक दिन एक अपूर्व आभा से वह गुफा आलोकित हो उठी जिसमें लोकनाथ साधना करता रहा।

लोकनाथ के सिद्धावस्था प्राप्त होते देख गुरु आनन्द से विभोर हो उठे। उनका प्रत्येक रोम हर्ष से उत्फुल्ल हो उठा। लोकनाथ को गले से लगाते हुए उन्होंने कहा—"आज मेरी साधना सार्थक हो गयी।"

लोकनाथ ने कहा—"आपकी अपार करुणा से मैं पार हो गया, गुरुदेव। लेकिन आप तो उस पार रह गये। मैं यह दृश्य सहन नहीं कर पा रहा हूँ।"

गुरु मुस्काये। बोले—"कोई चिंता नहीं वत्स। आज जिस सत्य को तुमने प्राप्त किया है, उसे मैं प्राप्त नहीं कर सका। अब समय भी नहीं है। शीघ्र ही मैं इस शरीर को छोड़ने वाला हूँ। अगले जन्म में तुम मेरे पथ-प्रदर्शक बनोगे यानी मेरे गुरु होगे, मेरे कर्मों का संचालन करोगे।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुछ दिनों बाद लोकनाथ ने कहा––"गुरुदेव, चलिये, और कहीं चला जाय। यहाँ आपका स्वास्थ्य गिरता जा रहा है।"

गुरुदेव––"ठीक है। जैसी तुम्हारी इच्छा। मेरे विचार से काशी उत्तम स्थान है।"

हिमालय से ये लोग काशी की ओर रवाना हुए। मार्ग में हितलाल मिश्र नामक एक योगी से मुलाकात हुई। काशी आने के कई दिनों बाद अचानक भगवान् गांगुली ने हितलाल मिश्र से कहा––"महाराज, यह शरीर अनित्य है। पता नहीं कब यह छूट जाय। मुझे अपने इन दोनों बच्चों की चिंता सता रही है। मेरा अनुरोध है कि भविष्य में इनकी देखभाल आप करते रहें। आज मैं आपके हाथ इनका भार सौंप रहा हूँ।"

गुरु के दोनों बच्चों की उम्र उन दिनों ९०-९२ वर्ष की थी। माता-पिता और गुरु के आगे बूढ़े बालक भी बच्चे होते हैं। एक दिन गुरु को गंगा स्नान करके वापस न आते देख दोनों शिष्य चिंतित हो उठे। निश्चित घाट पर आकर उन दोनों ने देखा––वे समाधिस्थ हैं। पास जाने पर ज्ञात हुआ कि वे अनन्तधाम चले गये हैं।

गुरुदेव के निधन के बाद लोकनाथ ने निश्चय किया कि अब पर्यटन करता रहूँगा। हितलाल मिश्र, बेनीमाधव बनर्जी को लेकर वे अरब मुल्क में आये, जहाँ एक सिद्ध फकीर से उनकी मुलाकात हुई। उसने लोकनाथ को देखते ही पूछा––"कितना जानते हो?" लोकनाथ समझ गये कि कितने जन्मों का ज्ञान है, यही सवाल पूछ रहे हैं। लोकनाथ ने कहा––"दो।"

फकीर ने कहा––"मैं चार।" लोकनाथ को आश्चर्य हुआ। इसका अर्थ यह है कि यह फकीर ऊँचे दर्जे का साधक है।

यहाँ मक्केश्वर का दर्शन करने के बाद लोग यरुशलम आये। वहाँ से पुनः उत्तर पूर्व सुमेरु पर्वत की ओर आये। चीन आते ही हितलाल मिश्र ने कहा––"मैं ध्रुव की ओर जाऊँगा। मेरा विचार है कि तुम लोग वापस लौट जाओ।"

मिश्रजी से अनुमति पाकर दोनों योगी हिमालय की घाटियों से भारत की ओर आने लगे। कई दिन चलने के बाद बेनीमाधव ने कहा––"मैं कामाख्या जाऊँगा। आप शायद बंगाल जायेंगे। बंधुवर, अब मुझे आज्ञा दें।" इतना कहकर दोनों मित्र गले मिले और सदा के लिए अलग हो गये।

लोकनाथ अकेला चुपचाप अनजाने मार्ग की ओर चलता गया। काफी दूर आने पर एक दिन उन्होंने देखा––सामने के जंगल से अनेक हिंसक पशु चारों तरफ भाग रहे हैं। पक्षियों का समूह आकाश में चीख रहा है। गौर करने से ज्ञात हुआ कि जंगल में आग लग गयी है। जंगल के भीतर एक संन्यासी ध्यानमग्न बैठा है। यह दृश्य देखते ही वे उनकी ओर दौड़े। तुरत उन्हें गोद में उठाकर दावानल के बाहर आये। आग को अपनी ओर बढ़ते देख एक कगार पर से नीचे कूद गये। वह संन्यासी थे––प्रभुपाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विजयकृष्ण गोस्वामी—नदिया जिले के गोस्वामी वंश के कुल दीपक।

इधर-उधर कई जगह घूमने के बाद लोकनाथ त्रिपुरा जिले के दाऊद कांदी नामक गाँव में आये। यहाँ एक वृक्ष के नीचे आसन लगाया। त्रिपुरा जिले में कई स्थान सिद्धों की तपोभूमि रही है। गरमी, बरसात और जाड़े में भी वे कहीं नहीं जाते। ऐसे महात्माओं के प्रति किसान सहज ही आकृष्ट हो जाते हैं। लोगों ने उनके भोजन का प्रबंध किया। सुबह-शाम पास आकर बैठने लगे। इस प्रकार लोकनाथजी की ख्याति फैल गयी।

ढाका जिला में एक नगण्य गाँव है जिसका नाम है——बारिदी। इसी गाँव का एक लोहार दाऊद कांदी में अपना कारबार करता था। दुर्भाग्य से फसाद हो जाने के कारण वह फौजदारी के मुकदमें में फँस गया। उसे यह जानकर और भी कष्ट हुआ कि इस अपराध के कारण उसे सख्त सजा मिलेगी। फलतः वह बराबर मानसिक कष्ट से पीड़ित रहने लगा। लोकनाथ बाबा की ख्याति सुनकर उसने सोचा कि बाबा से जाकर प्रार्थना करूँ। महात्माओं की कृपा से बहुत कुछ संभव होता है। शायद मैं बेदाग बच जाऊँ।

फैसला वाले दिन भोर के वक्त वह पैदल ही महापुरुष के सान्निध्य में आया। साष्टांग प्रणाम करने के बाद अपनी पीड़ा को व्यक्त किया। घर से वह यह निश्चय करके चला था कि जब तक बाबा अभय वरदान नहीं देंगे, वहाँ से हटेगा नहीं। अन्तर्यामी बाबा उसके मन की बात समझ गये। मुस्कराते हुए बोले——"तुम्हारा विपद दूर हो गया है। आज तुम बिना शर्त रिहा कर दिये जाओगे। निडर होकर जाओ।"

महापुरुष के चरणों पर माथा नवाकर वह प्रसन्न चित्त चला गया। एक ओर मन शंकित था तो दूसरी ओर आशीर्वाद जोर दे रहा था। अदालत से छूटते ही वह दौड़ता हुआ आया और बाबा के पैरों को पकड़ कर आँसुओं से धोने लगा। कहा——"बाबा, मुझे क्षमा कर दें। आपके आशीर्वाद के प्रति मेरे मन में शंका उत्पन्न हो गयी थी। दया कीजिए प्रभु!"

बाबा मुस्कराते रहे। कुछ देर बाद गदगद भाव से उसने कहा——"मेरा एक अनुरोध है, महाराज। आपको एक बार मेरे गाँव में चरणरज देना पड़ेगा। आपकी कृपा से मेरे गाँव के लोगों का कष्ट दूर हो जायगा। हम सब आपके आगमन से पवित्र हो जायेंगे।"

भक्त की आकुल प्रार्थना असर कर गयी। महापुरुष ने मंद-मंद मुस्कराते हुए अपनी सम्मति दी। आखिर एक दिन दाऊदकांदी से चलकर बाबा लोकनाथ बारिदी गाँव आकर बस गये। यहाँ बसने के कारण वे 'बारिदी के ब्रचारी' के नाम से प्रसिद्ध हुए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बारिदी गाँव उनके चरण रज से धन्य हो उठा। उक्त लोहार उन्हें आग्रह के साथ ले आया था, इसलिए बाबा लोकनाथ उसकी बनायी कुटिया में रहने लगे।

कभी-कभी बाहर निकलते तो पूर्ण दिगम्बर रूप में। उन्हें इस तरह टहलते देख गाँव के लोगों ने पागल समझा। कभी-कभी कोई बीमार या कष्ट से पीड़ित व्यक्ति आता तो आशीर्वाद प्राप्त कर चला जाता था। उनकी प्रतिमा को आजमाने के लिए एक सज्जन ने इच्छा प्रकट की कि इस बेमौसम में मेरे पेड़ पर अगर कटहल लग जाय तो वह फल मैं बाबा को दे दूँगा।

दूसरे दिन सुबह उठकर उसने देखा कि उसके पेड़ पर एक कटहल लटक रहा है। सहसा उसे विश्वास नहीं हुआ। घरवाली को बुलाकर पूछा तो उसने भी कटहल बताया। असमय में कटहल फलते देख पड़ोसी भी चकित रह गये। उसे तोड़कर वह बाबा के पास ले आया। उसे समझते देर नहीं लगी कि मेरे गाँव में एक महान् विभूति निवास कर रही है।

बारिदी गाँव के जमींदारों की उपाधि नाग है। बाबा की कुटिया से कुछ दूरी पर न जाने किस बात पर मालिकों में झगड़ा हुआ। मामला अदालत पहुँचा। बाबा की कुटिया के समीप घटना होने के कारण गवाही के लिए बाबा को सम्मन भेजा गया। विरोध पक्ष के मुख्तार ने पूछा--"बाबा, आपकी उम्र इन दिनों कितनी है ?"

--डेढ़ सौ वर्ष।

मुख्तार ने चौंककर कहा--"यह अदालत है, मजाक मत करिये। उम्र डेढ़ सौ वर्ष और स्वास्थ्य इतना अच्छा है ? बहरहाल यह बताइये कि घटना के समय आप कुटिया के भीतर थे तब इस अवस्था में आपकी नजर इतनी तेज कैसे हो गयी कि आपने देख लिया ?"

बाबा ने इस प्रश्न का जवाब न देकर पूछा--"मुख्तार साहब, सामने मैदान में वह पेड़ किस चीज का है ?"

सभी लोगों को मालूम था और देख रहे थे कि आम का पेड़ है। मुख्तार ने कहा-"आम का पेड़ है।"

तुरत दूसरा प्रश्न हुआ--"उस पेड़ पर कौन चढ़ रहा है ?"

काफी लोगों की आँखें पेड़ की तरफ उठ गयी। किसी को कुछ नजर नहीं आया। सभी लोगों ने कहा--"हमें कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है। आप बताइये।"

बाबा ने कहा--"मैं साफ तौर से देख रहा हूँ। हजारों माटा चीटियाँ चढ़ रही हैं। उनकी चार पंक्तियाँ देख रहा हूँ। आड़ में और भी होंगी।"

यह बात सुनकर जज साहब चकित रह गये। तुरत कई लोगों को भेजा गया। जानेवालों ने लौटकर बताया कि बाबा का कथन सही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसी नाग परिवार में एक और घटना हो गयी । जमींदारी के कृषकों ने विद्रोह किया कि अब लगान नहीं देंगे । नाग परिवार के सदस्यों ने निश्चय किया कि इस विद्रोह को सख्ती से कुचल दिया जाय, अन्यथा सारे इलाके में यह जहर फैल जायगा । युवकों का यह निर्णय एक बूढ़े सदस्य को पसन्द नहीं आया । उसने सुझाव दिया कि इस बारे में बाबा लोकनाथ से राय ले ली जाय और उनके सुझाव के अनुसार काम किया जाय । तुरत उत्तेजित एक युवक सदस्य ने कहा—"जमींदारी हमारी है । इसके लिए जो उचित है, उसका निर्णय हम करेंगे । लोकनाथ बाबा से क्या मतलब ?"

इस प्रकार विवाद बढ़ता गया । एक वृद्ध सदस्य ने सुझाव दिया कि सलाह लेने में हर्ज क्या है । मन लायक राय न हुई तो मत मानना । इस निश्चय के बाद नाग-परिवार के सदस्य बाबा के पास पहुँचे । अभी लोग अपनी बात कह भी नहीं पाये थे कि बाबा बोल उठे—"जमींदारी तुम लोगों की है । मुझसे राय लेने की क्या जरूरत है ?"

इतना सुनना था कि सभी लोग सन्नाटे में आ गये । इस बारे में चर्चा घर पर हो रही थी, बाबा को कैसे ज्ञात हो गयी ? निश्चित रूप से बाबा अन्तर्यामी हैं । सारी बातें सुनने के बाद बाबा ने कहा—"तुम लोगों को कुछ करने की जरूरत नहीं है । सभी किसानों के लगान की रकम आश्रम से आकर ले जाना ।"

इस सुझाव को सुनकर नाग-परिवार के लोग वापस चले आये, पर बाबा की बातों पर उन्हें विश्वास नहीं हुआ । प्रजा जब विद्रोह कर चुकी है, तब बिना भय के प्रीति नहीं होगी । जमींदारों के यहाँ गुण्डे रहते हैं । उनकी सहायता से लगान वसूल किये जाते हैं । उसी का सहारा लिया गया । लगान न देने के कारण खेतों से सन (पाट) काटकर जमींदार के कर्मचारी ले गये । मामला अदालत में पहुँचा । कई गुण्डे फौजदारी करने के सिलसिले में गिरफ्तार हुए । नाग बाबुओं को समझते देर नहीं लगी कि संत का आदेश न मानने के कारण यह घटना हो गयी । लोकनाथ बाबा से माफी माँगने के लिए लोग आश्रम पर आये ।

इन्हें गोल बनाकर आते देख बाबा ने तुरत कहा—"पहले जो कहा था, उसे नहीं माना । मैं जानता था तुम लोग फसादी आदमी हो, जरूर उपद्रव करोगे । इसीलिए पहले ही मना किया था । तुम लोगों का अपराध अक्षम्य है ।"

संत को नाराज होते देख नाग बाबुओं ने उनके चरण पकड़ लिए । वृद्धों ने मिन्नत करते हुए क्षमा याचना की । आखिर शिव संतुष्ट हुए । उन्हें क्षमा करते हुए बाबा ने कहा—"मुकदमे में वकील-मुख्तार मत करना । फरियादी को आश्रम से ले जाना ।"

नाग बाबुओं को इस बार भी संत की बातों पर विश्वास नहीं हुआ । मुकदमा जब अदालत में है तब बिना वकील-मुख्तार के कैसे काम बनेगा ? जब तक अदालत अपनी राय नहीं देगी तब तक मुजरिम को कैसे छुटकारा मिलेगा ? इसी ऊहापोह में बाकायदा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वकील-मुख्तार के जरिये मुकदमा प्रारंभ हुआ। अदालत ने मुजरिम को छह महीने की सजा दी।

दो बार बाबा की अवज्ञा करने के कारण यह गति हुई। अब नाग-परिवार के लोगों को बाबा के निकट जाने का साहस नहीं हुआ। कौन सा मुँह लेकर जाते? नाग बाबुओं ने नीचे की अदालत के विरुद्ध अपील की। अभी मुकदमा चल ही रहा था कि फरियादी की मौत हो गयी। उसकी ओर से कत्ल का मुकदमा दायर किया गया। इस अभियोग के कारण नाग बाबुओं की हालत पतली हो गयी। वे समझ गये कि अब बचना मुश्किल है। लाचारी में डरते-डरते पुनः बाबा की शरण में आये।

उपर्युक्त समय देखकर बाबा ने अपनी शक्ति का प्रयोग किया। दरअसल नाग-परिवार के सदस्य एक दूसरे से असंतुष्ट रहते थे। बाबा के शक्ति-प्रयोग से उनका अन्तर शुद्ध हो गया। तब बाबा ने कहा—"तुम लोगों में से प्रत्येक को सौ-सौ रुपये दण्डस्वरूप देना होगा। अब तुम लोग घर चले जाओ। फैसलावाले दिन यहाँ आना।"

इस आश्वासन को पाकर लोग मुँह लटकाकर वापस चले गये। निर्दिष्ट दिन लोग बाबा के आश्रम पर आये। सभी के चेहरे पर कालिमा की छाप थी। तभी बाबा ने कहा—"जज बीमार हो गया है। उसे इस हालत में उठाकर राय लिखवा आया हूँ। कल तुम लोगों को बरी होने का तार मिल जायगा।"

चकित भाव से सभी लोगों ने बाबा की बातें सुनीं। बाबा आश्रम छोड़कर कहीं नहीं जाते। पता नहीं, इन्हें कैसे मालूम हो गया कि वह बीमार है। तिस पर बरी होने की राय लिखवा आये। दूसरे दिन जब उन्हें तार मिला तब लोगों को बाबा की शक्ति पर विश्वास हुआ।

संतों के निकट कब, कौन, किस रूप में आता है और उसका लौकिक-पारलौकिक क्या सम्पर्क होता है, इसे संत अपने इष्ट की कृपा से तुरत जान लेते हैं। नाग परिवार पर कृपा करने के कारण बाबा की ख्याति बढ़ गयी। इसी गाँव में एक गरीब अहीर जाति की बुढ़िया रहती थी। एक दिन वह बाबा का दर्शन करने के लिए दूध लेकर आयी। यहाँ आकर देखा कि आश्रम में बड़ी भीड़ है। बड़े असमंजस में पड़ गयी कि कैसे बाबा तक पहुँचूंगी।

बुढ़िया के पास एक गाय है, जो अगले साल मृत बछड़ा को जन्म देकर ठांठ हो गयी। इस साल पुनः गर्भवती हुई है। इसने बाबा के नाम पर मनौती की कि अगर प्रसव ठीक रहा तो बाबा को नित्य दूध पहुँचाया करेगी। प्रसव ठीक से हो गया। आज वह बाबा के लिए दूध लायी है।

बाबा का दर्शन करते ही न जाने क्यों उसका मन चंचल हो उठा। उसे लगा कि यह तो अपना बेटा है। जाने कब, कहाँ खो गया था। इससे बिछुड़े एक युग बीत गया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है। आनन्द की अधिकता से उसके पैर काँपने लगे। बाबा अपना आसन छोड़कर किसी की अगवानी नहीं करते। पर इस वृद्धा को देखते ही दौड़कर पास आकर बोले—"माँ, मेरे लिए दूध लायी है?" इसके बाद दूध की हड़िया उससे लेकर बोले —"मेरी प्यारी माँ, इतने दिनों के बाद तुझे अपने बेटे की याद आयी? मैं कब से तेरी बाट जोह रहा था कि मेरी माँ अब तक क्यों नहीं आयी?"

इन शब्दों ने वृद्धा की ममता को उद्वेलित किया। जिस प्रकार माँ अपने बच्चे को गोद में लेकर प्यार करती है, ठीक उसी प्रकार बाबा को अंक में भरकर वह दुलार करने लगी—"मेरा मुन्ना, मेरा गोसाईं।"

लोकनाथ ने उपस्थित भक्तों से कहा—"पूर्व जन्म में यह वृद्धा मेरी माँ थी। कर्मफल के कारण इस बार इसे ग्वाला के घर जन्म लेना पड़ा है।"

इस अलौकिक दृश्य का आनन्द सभी लोग ले रहे थे। उसी दिन से आश्रम का सारा भार वृद्धा को दे दिया गया और वह आश्रमवासियों के निकट माताजी के रूप में प्रतिष्ठित हो गयी।

कभी-कभी बाबा इस प्रकार का तमाशा करते थे, जिसे देखकर लोग चकित रह जाते थे। एक बार अपनी कुटिया में बैठे एक दरोगा से बातें कर रहे थे। इसी समय एक महिला एक कटोरा दूध उनके सामने रखकर चली गयी। सहसा बाबा बोल उठे—"आजा। आजा।"

दरोगा साहब यह समझ नहीं पाये कि बाबा किसे बुला रहे हैं। सहसा उन्होंने देखा कि सामने एक नाग फन उठाये चला आ रहा है। इस दृश्य को देखते ही दरोगा की हालत खराब हो गयी। बाबा लोकनाथ ने साँप की गर्दन पकड़ दूध की कटोरी में डाल दिया। थोड़ी देर बाद बोले—"अब अपनी जगह चला जा।"

यह आदेश सुनते ही साँप कटोरी से निकल कर चला गया। बाबा ने दूध से थोड़ी सी मलाई निकालकर स्वयं खायी और शेष भाग दरोगा की ओर बढ़ाते हुए कहा—"ले, प्रसाद है, खा ले।"

प्रसाद खा ले, सुनकर दरोगाजी की घिग्घी बँध गयी। जिस दूध को साँप पी रहा था, उसकी मलाई खाने पर क्या जीवित रहूँगा? उसे ऊहापोह करते देख मुस्कराते हुए बाबा ने कहा—"डरने की जरूरत नहीं। ले, खा जा।"

मरता क्या न करता। बाबा की आज्ञा मानकर उन्होंने प्रसाद ग्रहण किया।

इसी प्रकार की एक घटना और हुई थी। आश्रम में भजल राम नामक एक सेवक रहता था, उसने जीवन में कभी बाघ नहीं देखा था। बाबा जैसे महापुरुष के निकट रहते हुए अगर बाघ नहीं देखा तो व्यर्थ है, बाबा की सेवा करना। बाबा को उसके मन की बात समझते देर नहीं लगी। एक दिन भोर के वक्त उसे जगाते हुए बोले—"क्यों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रे भजला, तू बाघ देखना चाहता था न ? देख, आश्रम में बाघ आ गया है। देख ले।"

भजला आँखें मलता हुआ बाहर आया। उसे बाघ देखकर आश्चर्य नहीं हुआ। यह तो आश्रम में रहनेवाली बिल्ली की मौसी है। इसी को बाघ कहते हैं ? वह चारों ओर घूम-घूमकर देखने लगा। उस समय आश्रम में और जितने लोग थे, वे लोग आड़ से यह दृश्य देख रहे थे। थोड़ी देर बाद बाबा ने कहा--"अब बस। उसे जाने दे।"

आश्रम के बरामदे पर बैठे बाबा भक्त कामिनी कुमार से बातें कर रहे थे। सहसा बोल उठे--"कामिनी, विजय आ रहा है।"

बाबा की बातें सुनकर कामिनी बाबू चौंक उठे। प्रभुपाद विजय कृष्ण गोस्वामी बारिदी आने के पहले उन्हें पूर्व सूचना जरूर भेजते थे। आज तक उन्हें कोई सूचना नहीं मिली। लेकिन बाबा जब कह रहे हैं तब बात सही हो सकती है। उन्होंने पूछा--"किस रास्ते से आ रहे हैं ? मेघना या ब्रह्मपुत्र से ?"

--ब्रह्मपुत्र से।

--तब तो चमारटोली के पास उनकी नाव लगेगी। कहने के साथ ही कामिनी बाबू स्वागत के लिए चले गये।

घाट पर आते ही उन्होंने गोस्वामीजी को नाव से उतरते देखा। उन्हें अपने साथ लेकर आश्रम में आये। बाबा से नजर मिलते ही विजयकृष्ण गोस्वामी ने अनुभव किया तड़ित वेग से कोई शक्ति उनके शरीर में प्रवेश कर गयी। उनका सारा शरीर काँप उठा। बाबा लोकनाथ ने आगे बढ़कर उन्हें अपने अंक में भर लिया।

--अब तक आपकी कृपा से मैं क्यों वंचित रहा बाबा ?

बाबा ने कहा--"तू तो पत्थर रहा। जा, अब देर मत कर। तू केवल मेरा नहीं है। बारिदी के लोग तुझे देखने के लिए व्याकुल हैं।"

बाबा का आदेश पाकर विजयकृष्ण गोस्वामी कामिनी बाबू के साथ उनके घर की ओर रवाना हो गये। मार्ग में कामिनी बाबू ने पूछा--"बाबा में आपने क्या देखा ?"

गोस्वामीजी ने कामिनी बाबू की ओर देखते हुए पूछा--"क्या आप मेरी बात पर विश्वास करेंगे ? बचपन से अब तक अनेक साधु-संन्यासियों के साथ रहा हूँ ? कहीं एक आना तो कहीं दो आना प्रभाव देखा। कुछ ऐसे आश्रमों में भी गया हूँ, वहाँ जब तक रहा तब तक प्रभाव देखता रहा। वहाँ से बाहर आते ही सारा प्रभाव समाप्त हो गया। यहाँ तो जितना सोचकर आया था, उससे बढ़कर प्रभाव देखा। मुझे अपने गले से लगाते हुए उन्होंने कहा--"तू मेरा भार ले ले। मैं यहाँ से जाना चाहता हूँ।" दूसरे ही क्षण उन्होंने कहा--"नहीं, तू मेरा भार नहीं ले सकता। इसके लिए तुझे तैयार करना होगा।" इनके रोम कूप में देवताओं का निवास है।

गोस्वामीजी को याद है, बाबा ने एक बार जंगल में आग लगने पर उन्हें बचाया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

था। दूसरी बार जब वे दरभंगा में अस्वस्थ हुए तब उन्हें जाना पड़ा था। बात यह हुई कि गोस्वामीजी के शिष्य बख्शीजी अचानक लोकनाथ बाबा के आश्रम में आकर उनके चरणों पर गिर पड़े। बोले—"मेरे गुरु को बचा लीजिए। आपके अलावा और कोई मेरी मदद नहीं कर सकता।"

सहसा बाबा गंभीर हो गये। बोले—"अब तक क्या करता रहा? अब कुछ नहीं हो सकता।"

बख्शीजी सीधे गोस्वामीजी के पास आये हैं। उन्हें पहले ही आना चाहिए था। बाबा की बातें सुनकर वे व्याकुल होकर बोले—"आप दयालु हैं। आप दया करेंगे तो सब ठीक हो जायगा।"

बाबा ने सिर हिलाते हुए कहा—"अब कुछ नहीं होगा। उसकी आयु समाप्त हो गयी है।"

"मेरे गुरु की आयु समाप्त हो गयी है?" बख्शीजी घबरा उठे। क्षण भर बाद बोले—"कोई हर्ज नहीं। आप मेरी आयु लेकर मेरे गुरुदेव को बचा लीजिए।"

शिष्य की निष्ठा और अचल भक्ति देखकर बाबा का हृदय पिघल गया। शिष्य हो तो ऐसा। औढरदानी शिव के चेहरे पर संतोष की रेखा खिंच गयी। बोले—"तेरे कारण इस बार जीवन कृष्ण (बाबा इसी नाम से गोस्वामीजी को संबोधन करते थे)। बच जायगा। तू ढाका चला जा। मैं उसके पास जा रहा हूँ। परसों तुम लोगों को समाचार मिल जायगा।"

श्यामाचरण बख्शी ढाका आकर बड़ी बेसब्री के साथ समाचार की प्रतीक्षा करते रहे। अन्त में एक दिन उनके पास समाचार आया कि प्रभुपाद गोस्वामीजी स्वस्थ हो गये हैं और ढाका आ रहे हैं। वहाँ से सपरिवार बाबा का दर्शन करने आये। यहाँ आने पर उन्हें ज्ञात हुआ कि बाबा यहाँ से स्थूल शरीर से नहीं, बल्कि सूक्ष्म शरीर से गये थे।

जन्माष्टमी के दिन बाबा के दो पुराने भक्त बाबा का दर्शन करने आये। उस समय बाबा लोकनाथ भोजन कर रहे थे। बचा हुआ प्रसाद शिष्य को खिलाते हुए बाबा ने पूछा—"बताओ तो कौन किसे खिला रहा है?"

रजनीकान्त ने कहा—"गुरु शिष्य को खिला रहा है?"

बाबा ने कहा—"अरे रहने भी दे गुरु शिष्य का पचड़ा। बाप बेटे को खिला रहा है।" अन्य भक्त यामिनी राय से उन्होंने पूछा—"तुम्हारा क्या विचार है?"

यामिनी राय ने कहा—"आप मेरे मुंह में डाल रहे हैं और मैं उसे चबा रहा हूँ।"

बाबा ने कहा—"गुरु शिष्यों के लिए यही करते हैं। मुंह तक पहुँचा देते हैं। शिष्य स्वयं उसे चबाकर उसके तत्वों से देह-मन को पुष्ट बनाने की जिम्मेदारी गुरु की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नहीं है। गुरु द्वारा प्रदत्त वस्तु की सार्थकता तभी आयेगी जब शिष्य अपने प्रयत्नों से अपनी उन्नति के लिए सहायक के रूप में उसे ग्रहण करेगा।" आगे एक प्रश्न के उत्तर में बाबा ने कहा--"जो जी में आये करो, पर ताप लगने न पाये।"

"ताप क्या है ?"

--"सुख-दुःख और जय-पराजय की मन पर जो प्रतिक्रिया होती है, वही ताप है। कोई भी स्थिति आये, उसे पूर्ण निर्विकार रूप में ग्रहण करना चाहिए। सुख के समय न उच्छ्वास और न दुःख के समय कष्ट की भावना मन में उत्पन्न हो। विजय प्राप्त करने पर उल्लसित और पराजय पर ग्लानि अनुभव न हो। जब मन की यह स्थिति हो तब कुछ करो। मनुष्य अपनी मानसिक उन्नति के साथ-साथ अच्छे-बुरे कर्मों की समीक्षा करता है। जो कुछ बुरा है, समाज में जो कुछ निंदित है, उसे नहीं करना चाहिए।"

--गुरु किसे कहते हैं ?

--ठेका को। ठेका ही गुरु है। बिना ठेका के कुछ भी नहीं सीखा जा सकता।

--गुरु शिष्य के लिए क्या करते हैं ?

--शिष्य की आँखें खोल देते हैं। अज्ञानी अंधा होता है। अज्ञानरूपी अंधे की आँखें गुरु खोल देते हैं।

--वेद, शास्त्र, उपनिषद, पुराण, गीता, चंडी के रहते गुरु की क्या आवश्यकता है ?

--शास्त्र शास्त्रज्ञान की शिक्षा दे सकता है, पर उससे विज्ञान की प्राप्ति नहीं होती। प्रत्यक्ष अनुभूति के अलावा किसी भी शास्त्र की सम्यक् उपलब्धि नहीं होती। इसी अनुभूति के लिए गुरु की आवश्यकता होती है। शास्त्रों ने भी कहा है कि गुरु से पाठ लेना चाहिए।

--बंधन और मुक्ति के कारण क्या हैं ?

"माया। माया देवी ने स्थावर जंगम आदि की सृष्टि की है। आराधना के माध्यम से अगर देवी को प्रसन्न किया जाय तो वे कृपा करके जीव को मुक्ति देती हैं। भूख मिटाने के लिए जितने भोजन की आवश्यकता होती है, उतना ही खाना चाहिए। बिना भूख के भोजन नहीं करना चाहिए। क्षुधा की पूजा करें, लोभ की नहीं। भोग्य-वस्तुओं के उपयोग से कामना की निवृत्ति नहीं होती। यह तो आग में घी गिरने की तरह होता है। बिना भोग के कर्म नहीं होता। यह सारी बातें परस्पर विरोधी प्रतीत हो रही हैं, पर ऐसा है नहीं। उपयोग द्वारा कर्म की वृद्धि होती है और भोग के द्वारा कर्म का क्षय होता है। भोग और उपभोग में पति-उपपति या यों कहो कि पत्नी-उपपत्नी की तरह जैसा भेद है। विचारपूर्वक किया जानेवाला भोग, भोग होता है और इच्छा-नुसार भोग ही उपभोग है। उदाहरण के लिए कोई खाद्यवस्तु खाने की इच्छा हुई,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर बिना उसे खाये उलट-पुलट कर रख दिया--यह भी एक प्रकार का उपभोग है। प्रकृति वास्तव में द्विविध है--विद्या और अविद्या। विद्या की पूजा से मुक्ति मिलती है और अविद्या से बंधन। समय पर इन दोनों की सीमा का निर्देश कठिन हो जाता है। इस संशय को गुरु सुलझा देते हैं। जीव की तीन अवस्थाएँ होती हैं। मुक्तावस्था, बृद्धावस्था और मुक्तावस्था। प्रथम अवस्था में माता, पिता, बंधु आदि का कोई बंधन नहीं रहता जैसे पशु, पक्षी और पार्वतीय लोग। बाद में बंधनावस्था आती है, जैसे तुम सब हो। इसके बाद पुनः मुक्तावस्था आती है, जैसे मैं और तैलंग स्वामी। ज्ञान द्वारा विचार करते रहने पर तृतीय स्थिति आती है।

सच तो यह है कि यह संसार त्रिविध ताप से पूर्ण है। वाक्यवाण, वित्त विच्छेद वाण और बंधु विच्छेद वाण। जो इन तीनों वाणों को बरदाश्त कर लेता है, उसके लिए मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लेना कठिन नहीं होता। इन त्रिविध पापों से डरकर जो लोग संन्यास लेते हैं, उन्हें संन्यासी नहीं मानना चाहिए। कर्मत्याग करने की अपेक्षा कर्म करना श्रेयष्कर है।"

दार्जिलिंग के डिप्टी मैजिस्ट्रेट पार्वतीचरण राय सहसा बीमार हो गये। डाक्टरों की दवा असफल सिद्ध होने लगी। ज्यों-ज्यों इलाज होता गया त्यों-त्यों मर्ज बढ़ता गया। धीरे-धीरे परिवार के लोगों की यह धारणा बन गयी कि राय साहब का अंतिम समय आ गया। एक दिन अर्द्धरात्रि के समय रायसाहब को प्यास लगी। वे पानी पीने के लिए उठे, तभी उन्हें अपने गुरु महाराज लोकनाथ बाबा की याद आ गयी। जमीन पर बैठकर हाथ जोड़ते हुए कहने लगे--"गुरुदेव, मेरी गृहस्थी कच्ची है। अब इसका भार आप पर छोड़ता हूँ। क्योंकि आपके चरणों में स्थान लेने के लिए मुझे आना पड़ रहा है।"

अचानक कमरे में अद्भुत प्रकाश हुआ, उस प्रकाश के भीतर रायसाहब ने देखा कि बाबा लोकनाथ उन्हें अभय दे रहे हैं। यह दृश्य देखकर पार्वतीचरण विस्मयाभूत हो उठे। उन्हें यह ज्ञात था कि इन दिनों बाबा बारिदी में हैं। प्रणाम करने के बाद ज्योंही वे उठने लगे त्योंही उन्हें लगा कि कोई कड़ी वस्तु उनकी मुट्ठी में आ गयी है। बाबा ने इशारे से बताया कि इसे खा ले।

दूसरे दिन जब डाक्टर आया तो उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि जिस व्यक्ति के जीने की आशा वे छोड़ चुके थे, इस वक्त वह प्रसन्न भाव से बरामदे में टहल रहा है। रात भर में कौन सा चमत्कार हो गया ?

कुछ दिनों बाद बाबा का दर्शन करने के लिए पार्वतीचरण बारिदी आये। बात-चीत के सिलसिले में उन्होंने पूछा--"गुरुदेव, दार्जिलिंग में स्मरण करते ही आप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बारिदी से कैसे वहाँ पहुँच गये ? यह रहस्य समझ नहीं पाया। इतना कष्ट करने की क्या जरूरत थी ?"

बाबा ने कहा—"अगर बेटा बीमार हो तो बाप को तब तक शांति नहीं मिलेगी जब तक वह स्वस्थ न हो जाय।"

बाबा के बारे में यह सब बातें सुनकर कलकत्ता के एक उद्योगपति सीतानाथ बारिदी आये। वे कई वर्षों से गठिया से पीड़ित थे। शायद बाबा की कृपा से वे रोग-मुक्त हो सकें। यहाँ आकर उन्होंने नदी पर डेरा डाला। नित्य लोगों का सहारा लेकर आश्रम जाते और रात नाव पर व्यतीत करते थे। लेकिन बाबा ने इनकी ओर ध्यान नहीं दिया। एक दिन सीतानाथ के मन में आया कि जब बाबा की कृपा पाने के लिए यहाँ आया हूँ तब उनके आश्रम में रहना चाहिए। व्यर्थ ही रोज आता-जाता हूँ।

वे बाबा के आश्रम के समीप एक पेड़ के नीचे जम गये। ऊपर खुला आकाश, दिन को कड़ी धूप, रात को सर्दी सहते रहे। इस प्रकार साधना करते कई दिन बीत गये। एक दिन भोर के वक्त बाबा की कृपा हुई। वे आये और उनके सिर पर हाथ फेरते हुए बोले—"तुझे बड़ा कष्ट दिया मैंने। अब उठकर खड़ा हो जा।"

बाबा के स्पर्श करते ही उन्हें लगा जैसे सारे शरीर में बिजली दौड़ गयी। आदेश पाते ही वे उठकर खड़े हो गये। लगा, जैसे कभी गठिया नहीं हुआ था।

इसी प्रकार की एक और घटना हुई थी। माणिकगंज में एक मुसलमान रहता था। संतान के नाम पर एकमात्र लड़की थी और वह भी अंधी। बारिदी के बाबा की प्रशंसा बराबर सुनते रहने के कारण एक दिन वह अपनी लड़की को लेकर आश्रम में आया। उसे यह मालूम था कि उच्चकोटि के फकीर और संत मानव में भेद नहीं करते। उनके निकट सभी समान होते हैं। जिस प्रकार विशाल वृक्ष के नीचे अमीर-गरीब, हिन्दू-मुसलमास छाया पाते हैं, उसी प्रकार इनके यहाँ कोई विचार नहीं होता।

बाबा के पास आकर उसने विनय पूर्वक कहा—"बाबा, आपके आशीर्वाद से न जाने कितने गूंगे-बहरे ठीक हो गये। आज मैं आपकी शरण में आया हूँ। मेरी बेटी पर कृपा कीजिये। कम से कम वह इस दुनिया को देख ले। आपकी कृपा होने पर मेरी बेटी को नयी जिन्दगी मिलेगी।"

बाबा बड़ी देर तक लड़की को देखते रहे। इसके बाद पास बुलाकर उसके मुँह तथा आँखों पर हाथ फेरने लगे। फिर बोले—"जाओ, बेटी, घर जाओ। भगवान् तुम्हारा कल्याण करेगा।"

मुसलमान भक्त ने समझा कि बाबा की कृपा हो गयी है। अब जब तक इसकी आँखें नहीं खुलती, बराबर आता रहूँगा। कभी तो कृपा होगी। दूसरे दिन वह अपनी बेटी को लेकर पुनः आश्रम में आया। आश्रम से अभी कुछ दूर था कि सहसा लड़की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोल उठी––"अब्बा जान, वह देखो। बेल के पेड़ के पास ही बाबा का आश्रम है न?"

इतना सुनना था कि मुसलमान भक्त हर्ष से पागल हो उठा। बच्ची को गोद में उठाकर दौड़ता हुआ आया और बाबा के चरणों को पकड़कर जमीन में लोटने लगा।

बारिदी के जमींदार उमा प्रसन्न नाग की पत्नी एक बच्चे को जन्म देकर प्रसूति में मर गयी। नाग महाशय बड़े संकट में फँस गये। नवजात-शिशु को अगर स्तनपान न कराया गया तो वह मर जायगा। परिवार में अन्य कोई दुग्धवती महिला नहीं थी। गाँव में एक मुसलमान महिला थी जो दूध पिला सकती थी, पर बच्चा उसका दूध पचा नहीं पा रहा था। अन्त में उमा प्रसन्न की बहन सिंधु इस समस्या का निराकरण कराने के लिए बाबा के पास आयी।

सारी बातें सुनने के बाद बाबा ने कहा––"तू अपना दूध पिला सकती है।"

"मैं?" सिंधु चौंक उठी। घर के सभी लोग इस बात से परिचित थे कि सिंधु बांझ है।

बाबा अंतर्यामी थे। बोले––"माँ, मेरे पास आकर बैठ। बहुत दिन हुए माँ स्तन नहीं पान कर सका। आज माँ का स्तनपान करूँगा।" कहने के साथ उन्होंने सिंधु के स्तन में मुंह लगाया और उसमें से दूध निकलने लगा।

जाली काम करने के कारण एक व्यक्ति फँस गया। अदालत में शपथ लेने के बाद उसने अपराध को अस्वीकार कर दिया। लेकिन अपराधी-मन शंकित रहता ही है। प्रमाण भी मौजूद थे। न जाने क्यों उसके मन में आया कि अगर बारिदी के ब्रह्मचारी बाबा कृपा कर दें तो वह इस जुर्म से मुक्त हो सकता है। इस निश्चय के बाद वह बाबा के आश्रम में आकर उनके पैर पकड़कर रोते हुए बोला––"प्रभु, मैं निरपराध हूँ। शत्रुओं के जाल में फँस गया हूँ। मेरी रक्षा कीजिए।"

अपराधी को कलपते देख बाबा ने कहा––"तुम छूट जाओगे।"

बाबा के पास एक सज्जन बैठे थे। उन्हें इस बात की जानकारी थी कि यह व्यक्ति अपराधी है और इस वक्त झूठ बोल रहा है। जब अपराधी व्यक्ति बाहर निकला तब उक्त सज्जन ने उससे कहा––"आपने बाबा से झूठ क्यों कहा? मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि आप अपराधी हैं। अपना भला चाहते हैं तो बाबा के पास जाकर अपना अपराध स्वीकार कर लीजिए, वर्ना परिणाम उल्टा हो सकता है।"

अपराधी के मन में यह बात जम गयी। बाबा अन्तर्यामी संत हैं। मुझे इनके सामने अपना अपराध व्यक्त करना चाहिए था। वापस आकर उसने बाबा से कहा––"मैंने आपसे झूठ कहा है। वास्तव में मैं अपराधी हूँ। मेरी रक्षा करें।"

बाबा ने कहा––"मैं जो कुछ कहूँगा, उसे मानोगे?"

––मान लूंगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

——ठीक है। अब जिस दिन पेशी होगी, उस दिन जज के सामने अपना अपराध स्वीकार कर लेना। जब मेरे मुँह से निकल गया है तब तुम अवश्य छूट जाओगे।

बाबा की आज्ञा मानकर अपराधी व्यक्ति ने पेशी के दिन अपना बयान बदल डाला। विचारक ने सोचा——शायद भय के कारण यह व्यक्ति अपने को अपराधी कह रहा है। उसके वकीलों ने उसे सलाह दी कि यह क्या कर रहे हो। अपराध स्वीकार मत करो। लेकिन वह अपने निश्चय पर दृढ़ रहा। रह रहकर उसे बाबा की बातें याद आती रहीं। जब बाबा ने कहा है, तब मैं उनकी आज्ञा मानकर बेदाग छूट जाऊँगा। यहाँ तक कि हाईकोर्ट में जाकर भी उसने अपना बयान नहीं बदला। उसके इस बयान के आधार पर उसे मुक्ति मिल गयी।

इसी प्रकार कुमिल्ला के निवारण राय को हत्या के अपराध से मुक्ति मिल गयी थी। सेशन जज ने प्राप्त प्रमाण तथा साक्ष्य के आधार पर निवारण राय को फाँसी की सजा दी। राय के वकीलों ने हाईकोर्ट में अपील की। निवारण राय जेल में बन्द थे। वे स्वयं अनुभव कर रहे थे कि इस अपराध के कारण हाईकोर्ट भले ही फाँसी की सजा न दे, परन्तु आजीवन कैद की सजा जरूर देगी। मुसीबत के वक्त ही लोगों को भगवान् और संतों आदि की याद आती है। अचानक उसके मुँह से निकल पड़ा——"बाबा लोकनाथ, मेरी रक्षा करो। मैं अपने पापों का प्रायश्चित करूँगा।"

सहसा जेल की उस कोठरी में प्रकाश हुआ और राय के सामने कौपीन पहने एक साधु खड़ा हो गया। कोठरी में लोहे का फाटक है, जिसमें ताला लगा है। चारों ओर पहरेदार हैं। यह बाबा भीतर कैसे आ गया? डरते हुए उसने प्रश्न किया——"आप कौन हैं?"

——मुझे नहीं पहचाना बेटा? मैं बारिदी का ब्रह्मचारी हूँ। तेरे बारे में राय लिखवा आया हूँ। तुझे बिना शर्त छोड़ दिया जायगा।

——आप बाबा लोकनाथ हैं?

बाबा ने मुस्कराते हुए सिर हिलाया। यह देखकर वह बेहोश हो गया। दूसरे दिन उसे मुक्ति मिल गयी।

अगर कोई वास्तव में संत है तो उसके पास जाने पर कुछ न कुछ अलौकिक बात होती है। ऐसे साधक योगी की कृपा से कष्ट दूर हो जाता है। मुश्किल यह है कि हम ऐसे संतों को पहचान नहीं पाते। मैमनसिंह के रजिस्ट्रार आफिस में एक क्लर्क संतों की तलाश में अक्सर दूर-दूर तक यात्रा करते रहते थे। एक दिन उन्होंने अपने सहयोगी मित्रा बाबू से कहा——"प्रति वर्ष मैं चन्द्रनाथ दर्शन करने जाता हूँ। शायद इस बार नहीं जा पाऊँगा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मित्र महाशय बारिदी के ब्रह्मचारीजी बाबा लोकनाथ का चमत्कार देख चुके थे। अचानक उनके मन में आया कि पास में इतना महान् योगी के रहते अभय बाबू चारों तरफ चक्कर काटते रहते हैं। उन्होंने कहा––"अभय बाबू, अब तक आप पत्थर के देवता का पूजन करते आये हैं। मैं आपको सलाह दूँगा कि इस वर्ष आप जीवंत शंकर का दर्शन कर आइये। बारिदी यहाँ से दूर नहीं है। किराये के लिए मुझसे एक रुपया लीजिए।"

अभयाचरण बाबा लोकनाथ का नाम सुन चुके थे। अपने मित्र कृष्णचन्द्र के साथ बारिदी रवाना हो गये। अभय बाबू को गाँजा पीने की आदत है। सहसा उन्हें ख्याल आया कि कल शिवरात्रि है और जीवंत शंकर का दर्शन करने जा रहा हूँ। जब तक उनका दर्शन नहीं करूँगा तब तक कुछ नहीं खाऊँगा। बाबा के दर्शन के बाद गांजा पिऊँगा।

बारिदी पहुँचकर बाबा को ज्योंही उन्होंने साष्टांग दण्डवत किया त्योंही बाबा ने कहा––"तू तो गाँजा पीता है। जा, एक चिलम तैयार कर।"

अभय बाबू ने सोचा––बाबा का दर्शन हो गया। अब गाँजा का दम लगाया जा सकता है। चिलम भर कर बाबा के पास लाये। एक बार दम खींचने के बाद बाबा ने चिलम वापस करते हुए कहा––"ले, बाकी तू पी ले। यहीं बैठकर पी।"

गाँजा पीने के बाद अभय बाबू ने बाबा को पुनः प्रणाम किया और चल पड़े। वहाँ एक वकील साहब मौजूद थे। उन्हें यह ज्ञात था कि आज दो दिन से अभय बाबू उपवास कर रहे हैं। उन्होंने कहा––"अभय बाबू, प्रसाद बिना खाये चले जा रहे हैं?"

अभय बाबू का ख्याल था कि जब आश्रम में आया हूँ तब यहाँ भोजन मिलेगा। जब किसी ने कुछ नहीं पूछा तब वे भन्नाकर चल पड़े। वकील साहब के प्रश्न पर उन्होंने जवाब दिया––"ब्राह्मण का लड़का हूँ, दो-चार रोज उपवास कर सकता हूँ। अगर भूख अधिक सतायेगी तो किसी गृहस्थ से दो मुट्ठी अन्न माँगकर खा लूंगा।"

बाबा लोकनाथ ने मुस्कराते हुए कहा––"तुझे अभी भोजन मिलेगा। जरा ठहर जा।"

इतना कहना था कि एक विधवा महिला अपनी सधवा बेटी के साथ बाबा के पास आयी। वह बाबा के लिए मिष्ठान-फल आदि लेकर आयी थी। बाबा ने कहा––"ले, तेरा भोग आ गया।"

इस आह्वान को सुनते ही अभय बाबू का सारा क्रोध दूर हो गया। वे चुपचाप खाने लगे। एकाएक बाबा बोल उठे––"खा तो रहा है, पर यह भी मालूम है कि यह भोजन कायस्थ के हाथ का बना है।"

अभयचरण भी कम नहीं थे। तुरत जवाब दिया––"होगा। मैं तो देवता का प्रसाद खा रहा हूँ, भले ही इसे चाण्डाल ने बनाया हो।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस उत्तर को सुनकर बाबा प्रसन्न हो उठे। उन्होंने कहा--"तू सत्रह साल से पहाड़ों पर चक्कर काट रहा है। जो चीज खोज रहा था, मिली ?"

--नहीं।

बाबा ने उसके हाथ को अपने हाथ में लेकर कहा--"तू जिस चीज की तलाश में था, आज तेरे हाथ में बांध दे रहा हूँ। अब तुझे चक्कर काटने की जरूरत नहीं पड़ेगी।"

बाबा की ख्याति जैसे-जैसे फैलती गयी, वैसे-वैसे दर्शनार्थियों की भीड़ बढ़ती गयी। कुछ लोग कई दिनों तक आश्रम में ठहर जाते थे, ताकि बाबा के सत्संग का लाभ उठा सके। ऐसे लोगों में एक सज्जन थे--ईश्वरचन्द्र घोष। मठ, धर्मशाला या किसी परिवार में ठहरने पर लौकिकता के नाते लोग चलते समय कुछ रकम देते हैं। घोष महाशय आज घर वापस जाने को तैयार हुए तो सोचा कि इतने दिनों तक आश्रम में ठहरा, भोजन किया, अतएव बाबा को कुछ दक्षिणा दे दूँ। पाँच रुपये जेब में रखकर वे बाबा के पास आये।

बाबा के पास आकर वे ज्योंही बैठे, त्योंही बाबा कहने लगे--"तुम लोग यहाँ कृपा करके आते हो, खाते हो, ठहरते हो। यह आश्रम तुम लोगों का है, सारी सामग्री तुम लोगों की हैं, मेरा कुछ भी नहीं है। अतएव ऐसा कोई कार्य या व्यवहार मत करना जिसमें खरीद-फरोख्त की भावना हो।"

इतना कहकर बाबा चुप हो गये। इधर घोष महाशय के होश उड़ गये। उन्होंने लोगों से सुन रखा था कि बाबा अन्तर्यामी हैं। सो उन्हें प्रत्यक्ष प्रमाण मिल गया।

रात को बाबा के पास आकर प्रणाम करने के बाद घोष महाशय ने कहा--"अनुमति के लिए आया हूँ।"

बाबा ने कहा--"मेघना नदी के घाट पर आपकी नाव है। यहाँ से कोई ज्यादा दूर नहीं है, फिर भी एक आदमी साथ ले जाओ। रात का वक्त है, रास्ता भूल सकते हो।"

घोष महाशय ने कहा--"हम लोग ८-१० व्यक्ति हैं। डरने की कोई बात नहीं। साथ में दो-दो लालटेन है। सामने केवल मैदान है। इसे पार करते ही नदी का किनारा आयेगा। आप परेशान न हों।"

बाबा मुस्कराकर चुप हो गये। फलतः ये लोग रास्ता भूल गये और रातभर जंगल में चक्कर काटने के बाद एक अपरिचित गाँव में हाजिर हुए। बाद में गाँववाले इन्हें आश्रम तक पहुँचाने आये। इन्हें वापस आया देख बाबा ने पूछा--"कहिये वकील साहब, कल मैंने तुमसे कहा था कि साथ में एक आदमी भेज दूँ, पर तुम्हें स्वीकार नहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किया। बाघवाले जंगल में बहककर चले गये थे। अगर मैं साथ न रहता तो आज यहाँ न आ पाते।"

इसी प्रकार की एक घटना ढाका शहर से आये कुछ युवकों के साथ हुई थी। गर्मी का मौसम था। धूप के कारण लोग वापस नहीं जा पा रहे थे। उनकी समस्या बाबा को समझते देर नहीं लगी। थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा—"अब तुम लोग आराम से जा सकते हो। बादलों ने सूर्य को ढाँक लिया है।"

तुरत लोग चलने की तैयारी करने लगे। एकाएक एक युवक पूछ बैठा—"आपकी कृपा से बादलों ने सूर्य को ढक लिया है। कितनी दूर जाने पर पुनः धूप दिखाई देगी?"

बाबा ने हँसकर कहा—"जब ढाका पहुँच जाओगे तब धूप दिखाई देगी।"

बारिदी से ढाका १८-२० मील दूर है। कहने की आवश्यकता नहीं कि बाबा की बात सही निकली।

१९ ज्येष्ठ, सन् १८९१ ई०। बाबा को घेरकर कुछ भक्त बैठे थे। उस समय इस बात की चर्चा चल रही थी कि मृत्यु के बाद शव का संस्कार किस प्रकार करना चाहिए। जमीन में गाड़ देने पर कीड़ों को आहार मिलता है। पानी में फेंक देने पर नदी के जानवरों को आहार मिलता है। इन दोनों पद्धतियों से मानव शरीर की सद्गति होती है।

बाबा ने कहा—"मेरी राय में अग्नि-संस्कार सर्वश्रेष्ठ है। इससे शीघ्र लय प्राप्त होता है वर्ना शरीर के आकर्षण के कारण जीव को असीम यंत्रणा भोगनी पड़ती है। मेरे निधन के पश्चात मेरा अग्नि संस्कार करना। अगर मैं उत्तरायण काल में, दिन के समय शरीर छोड़ दूँ, उस समय आकाश में किरण फेंकता रहे तो समझ लेना कि मैं सूर्य रश्मि अवलम्बन करता हुआ चला गया। पुनः इस संसार में वापस नहीं आऊँगा।"

बाबा अपने बारे में कभी इस तरह की बातें नहीं करते थे। आज शव-संस्कार की बातें चलने पर अपने बारे में लोगों को आगाह किया। एकाएक पास बैठे एक व्यक्ति से उन्होंने पूछा—"क्यों रे, कितना बजा है?"

आश्रम के एक कर्मचारी ने कहा—"दस बजे हैं, बाबा।"

—दस बज गये? जल्दी से सभी के लिए खाना परसो। देखो तो कितनी देर हो गयी।

बाबा की बातें सुनकर लोग चौंक उठे। एक तो देहात में कोई बंधे समय पर भोजन नहीं करता। दूसरे बाबा कभी दस बजे भोजन के लिए आदेश नहीं देते थे। यह ठीक है कि वे देर से भोजन करना पसन्द नहीं करते थे।

रसोइये ने कहा—"आप क्यों परेशान हो रहे हैं? अभी तो सिर्फ दस बजे हैं।"

—बजने दे। मैं जो कह रहा हूँ, वही कर। सभी लोगों के लिए भोजन परोस दे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रसोई तैयार थी। रसोइये को कोई परेशानी नहीं थी। इधर भोजन करने वाले तैयार थे। थाली परोसी गयी। लोग खा-पीकर हाथ धोने लगे। यह देखकर बाबा ने पुनः कहा कि कोई अभुक्त न रहे। सभी से पूछ लो। थोड़ी देर बाद उन्हें सूचना दी गयी कि सभी लोग भोजन कर चुके हैं।

इसके बाद बाबा योगासन लगाकर बैठ गये। समय गुजरता गया। गर्मी बढ़ती गयी। लोग सख्त गर्मी के कारण व्याकुल होने लगे। दूसरी ओर आश्रम के स्थायी निवासियों के चेहरे पर चिन्ता की रेखाएँ गहरी होने लगीं। बाबा इतनी देर तक समाधिस्थ नहीं रहते। भक्तों की परेशानी पर तुरत ध्यान देते थे। लोग आपस में कानाफूसी करने लगे। आश्रम के निवासी बाबा के पास आये तो उन्हें ज्ञात हुआ कि वे शरीर छोड़ चुके हैं।

बिजली की तरह यह समाचार पूरे गाँव में ही नहीं, बल्कि काफी दूर तक फैल गया। अपार जन समूह आश्रम के पास आकर खड़ा हो गया। आश्रम के दक्षिण दिशा की ओर चिता सजायी गयी। हजारों कंठ से बाबा के नाम की जय ध्वनि हुई। पंडितजी के साथ-साथ भक्त गण कहने लगे——

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्त येन चराचरम
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः
गुरोर्ब्रह्म गुरोर्विष्णु गुरोर्देवो महेश्वरः
गुरु देव परमब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३

प्रभुपाद विजयकृष्ण गोस्वामी

श्री सतीशचन्द्र मुखर्जी के बारे में श्रद्धेय महामहोपाध्याय ने लिखा है—"एक प्रकार से उन्हें भारतीय स्वतंत्रता को नयी दिशा देनेवाले युग प्रवर्तक पुरुष कहा जा सकता है। बंग-भंग आन्दोलन के समय 'डान सोसायटी' की स्थापना करनेवाले उद्यमी कार्यकर्ता और स्वदेशी आन्दोलन के कर्मठ लोगों में आप अग्रणी थे। राष्ट्रीय आन्दोलन को तेज करने के लिए आपने बड़ौदा से श्री अरविन्द को बुलाया था। डा० राजेन्द्र प्रसाद गांधीजी के प्रिय भक्त थे, पर सतीशचन्द्र मुखर्जी के अनुगत शिष्य थे।"

सतीशचन्द्र मुखर्जी ने अपने जीवन में जितने महत्वपूर्ण कार्य किये, उन सभी के पीछे प्रभुपाद विजयकृष्ण गोस्वामी का हाथ रहा है। एक अलौकिक घटना के कारण सतीश बाबू जैसे विद्रोही व्यक्ति को गोस्वामीजी से दीक्षा लेने को बाध्य होना पड़ा। गोस्वामीजी का एक शिष्य सतीशचन्द्रजी का घनिष्ठ मित्र था। अचानक एक दिन उसके मन में आया कि अगर मैं सतीश को अपने गुरुदेव के पास ले चलूँ तो इसका भला होगा। गोस्वामीजी से आज्ञा लेकर वह सतीश बाबू के पास आया। उन दिनों सतीश बाबू उग्र मिजाज के थे। उन्हें धर्म, साधु, भक्ति के प्रति लगाव नहीं था। उन्होंने प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

उसी दिन रात को उन्होंने सोचा कि मित्र कल सवेरे मुझे ले जाने के लिए आनेवाला है। मैं भोर में कहीं निकल जाऊँगा। न रहेगा बाँस और न बजेगी बाँसुरी। जब मैं नहीं रहूँगा तब किसे ले जायेगा। वे दूसरे दिन भोर के समय गोस्वामीजी के भवन के विपरीत दिशा में घूमने निकल गये। लेकिन भगवान् की मंशा कुछ और थी। सतीश बाबू के भविष्य का लेखा तैयार हो चुका था। काफी देर तक बेमतलब घूमते रहने के कारण उन्हें प्यास महसूस हुई। पानी पीने की इच्छा से सामने के भवन के बाहर बैठे एक हमउम्र युवक के पास आकर उन्होंने निवेदन किया। युवक ने कहा—"कृपया भीतर आइये।"

उस भवन के भीतर जाकर उन्होंने देखा कि सामने के कमरे में दो आसन बिछे हुए हैं। गौर से देखने पर ज्ञात हुआ कि इस समय वे प्रभुपाद विजयकृष्ण गोस्वामी के भवन में हैं और पानी पिलानेवाला युवक उनका पुत्र योगजीवन है। सतीश बाबू को बड़ा आश्चर्य हुआ कि इस भवन के विपरीत दिशा में जाने पर भी वे कैसे यहाँ आ गये?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रभुपाद विजयकृष्ण गोस्वामी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहसा एक मधुर स्वर सुनाई दिया--"सतीश, ठीक समय पर आ गये हो। सामने वाले आसन पर बैठ जाओ।"

सतीश बाबू ने पूछा--"कृपया मुझे एक बात ठीक से समझा दीजिये। मैं आपके यहाँ नहीं आना चाहता था। आपके घर के विपरीत दिशा में चला गया, फिर भी यहाँ कैसे आ गया?"

गोस्वामीजी ने मधुर मुस्कान के साथ कहा--"आज इसी समय तुम्हें मुझसे दीक्षा लेनी थी। भवितव्य होकर ही रहता है। उसे कोई टाल नहीं सकता।"

सतीश ने चुपचाप दीक्षा ग्रहण की और उसी दिन से उनके आध्यात्मिक जीवन का नया सूत्रपात हुआ। गोस्वामीजी असाधारण योगी थे। उन्हें अपने जीवन में अनेक चमत्कारों का सामना करना पड़ा था।

× × ×

मृत्यु आसन्न है समझकर गोपी माधव ने घर के लोगों से आग्रह किया कि उन्हें गंगा किनारे ले चलें। पतित पावनी गंगा के किनारे आते ही उनमें आश्चर्य जनक परिवर्तन हुआ। उन्हें दिव्यदृष्टि प्राप्त हुई। चारों ओर चकित दृष्टि से सभी को देखने के बाद उनकी आँखें चचेरे भाई आनन्दचन्द्र के चेहरे पर जम गयी।

हाथ के इशारे से उन्हें पास बुलाकर गोपी माधव ने कहा—"आनन्द, मैं जा रहा हूँ। जाने के पहले मैं तुमसे एक अनुरोध करना चाहता हूँ, क्या तुम अपने बड़े भाई का यह आग्रह स्वीकार करोगे?"

अपने उमड़ते हुए आँसुओं को रोककर आनन्दचन्द्र ने कहा--"आज्ञा दीजिए। यदि असंभव न हुआ तो उसे स्वीकार कर लूंगा।"

गोपीमाधव ने कहा--"वंश-रक्षा के लिए आवश्यक है कि तुम पुनर्विवाह कर लो। यही मेरा अंतिम अनुरोध है।"

आनन्दचन्द्र चुप हो गये। अपनी दूसरी पत्नी के निधन के बाद से वे इतने दुःखी हुए कि अब पुनर्विवाह नहीं करेंगे, यही निश्चय किया था। अभी तक दोनों भाई अपुत्रक थे। आनन्दचन्द्र ने कहा था कि मैं बाकी समय में छात्रों को पढ़ाऊँगा। पूजा-पाठ और भगवत्-चर्चा मेरा मुख्य कार्य होगा। इधर लंबे अर्से से वे एकाकी जीवन व्यतीत कर रहे थे।

गोपी माधव ने कहा--"इसके पूर्व कभी मैंने तुमसे कुछ नहीं कहा। यहाँ आने के बाद सहसा मेरे मन में यह बात उत्पन्न हुई कि इस बारे में तुमसे अनुरोध करूँ। हम दोनों को संतान नहीं है। इस अनुरोध को स्वीकार कर लो। एक और विवाह कर लो। इस विवाह से तुम्हें दो पुत्र होंगे। बड़े पुत्र को अपने पास रखना। उससे तुम्हारा वंश चलेगा और छोटे पुत्र को अपनी भाभी को दत्तक पुत्र के रूप में दे देना।"

मरणासन्न भाई के इस अंतिम अनुरोध को आनन्दचन्द्र ने स्वीकार कर लिया। इसके बाद वे परमधाम को चले गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़े भाई के आदेशानुसार आनन्दचन्द्र ने तीसरा विवाह किया। समयानुसार उन्हें दो पुत्र हुए। बड़े का नाम व्रज गोपाल और छोटे का नाम विजयकृष्ण रखा गया। बड़े भाई को दिये गये वचन के अनुसार आनन्दचन्द्र ने एक दिन गाँव के संभ्रांत व्यक्तियों की उपस्थिति में, अपने छोटे पुत्र विजयकृष्ण गोस्वामी को, दत्तक-पुत्र के रूप में, बड़े भाई की विधवा पत्नी को दान कर दिया।

गोस्वामीजी की सगी माता स्वर्णमयी देवी अत्यन्त दयालु और परोपकारी थीं। अपनी पूजनीय माता के बारे में पूज्य गोस्वामीजी कहा करते थे--"मेरी माँ में जितनी दया है, अगर उसका एक बूंद भी मुझे मिलता तो मैं धन्य हो जाता। सच पूछो तो मुझमें जितनी दया है, वह मेरी माँ की देन है। मेरी दया तो उसी सिंधु का एक क्षुद्र बिंदु है।"

भगवान् श्रीकृष्ण और महाप्रभु चैतन्य की भाँति विजयकृष्ण का आविर्भाव हुआ था। उनकी माँ स्वर्णमयी का कथन है--"मेरे विजय के जन्म के पूर्व उसके पिता ने वीर्याधान नहीं किया था। केवल इच्छा प्रकट की कि मेरा गर्भ-संचार हो। उनकी इच्छा-शक्ति के प्रभाव से मैं गर्भवती हुई। जिन दिनों विजय मेरे गर्भ में था, उन दिनों मुझे बराबर भगवत्-दर्शन होते थे। सूर्य की रश्मि में राधाकृष्ण के दर्शन होते थे।"

झूलन पूर्णिमा के दिन स्वर्णमयी देवी को प्रसव-वेदना आरंभ हुई। वे शौच के लिए अरुई के जंगल में गयीं और वहीं विजय का जन्म हुआ। गोस्वामीजी ने बड़े होने पर अक्सर स्वर्णमयी देवी परिहास करती हुई कहतीं--"तू तो अरुई के जंगल में पैदा हुआ था।"

गोस्वामीजी के जन्म का समाचार पाते ही स्वर्गीय गोपी माधव की पत्नी कृष्णमणि देवी ने बड़े उत्साह के साथ समारोह किया। अन्नप्राशन के अवसर पर इनका नामकरण हुआ। बाद में वे दत्तक-पुत्र घोषित हुए। गोस्वामीजी अपनी जन्मदात्री को 'दुदुमा' और दत्तक ग्रहणकारिणी को 'माँ जननी' कहा करते थे।

'होनहार विरवान के होत चीकने पात' के अनुसार आप बचपन से ही तेजस्वी, मेधावी, दयालु प्रकृति के हुए। आपकी सरलता से लोग मुग्ध हो उठते थे। किसी को मुसीबत में देखकर उसे सहायता करने के लिए दौड़े जाते थे। कमजोर वर्ग के प्रति अत्याचार करते देख स्वयं खड्गहस्त हो जाते थे।

अवतारी पुरुषों पर प्रारंभ से ही भगवान् की अनुकंपा रहती है। माँ के साथ आप किसी रिश्तेदार के यहाँ विवाह में गये हुए थे। पास ही डाकुओं का एक दल काली-पूजा की तैयारी कर रहा था। उन्हें नर बलि देने के लिए एक नर की आवश्यकता थी। उस समय गोस्वामीजी विवाहवाले कमरे में अकेले सो रहे थे। डाकुओं ने आपका अपहरण कर लिया। ज्योंही आपको मारने के लिए डाकू तैयार हुए त्योंही न जाने कहाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से एक पागल वहाँ आ गया। उसने बलि देनेवाले से गंड़ासा छीनकर शेष लोगों को मारने के लिए दौड़ाया। इस अप्रत्याशित घटना से भयभीत होकर डाकुओं का दल भाग खड़ा हुआ। बाद में पागल उन्हें गोद में उठाकर माँ के पास छोड़ आया।

गोस्वामीजी जब अढ़ाई वर्ष के थे तभी इनके पिता तथा बाद में दत्तक लेनेवाले 'माँ जननी' का देहांत हो गया। फलतः उनकी माता स्वर्णमयी देवी को गृहस्थी चलाने के लिए शिष्यों के घर जाना पड़ता था। इसी बीच गोस्वामीजी का उपनयन हो गया था और पाठशाला की शिक्षा समाप्त कर वे टोल में पढ़ने लगे थे। प्रत्येक प्रतिभावान बालक बचपन में वाचाल होता है। गोस्वामीजी बचपन में काफी शैतानी करते थे। पेड़ पर चढ़कर राह चलते व्यक्ति पर पेशाब कर देना, नदी में स्नान करते समय लोगों पर पानी के छींटे डालना, डुबकी लगाकर स्नान करनेवालों के पैर पकड़ कर खींचना आदि शरारतें किया करते थे।

पकड़ जाने पर रिरियाते हुए कहते—"मुझे छोड़ दीजिये, अब ऐसी बदमाशी कभी नहीं करूँगा।"

इनके कहने के ढंग में ऐसा शिशु सुलभ भाव रहता कि मारनेवालों को दया आ जाती थी। एक बार आपने अद्भुत स्वप्न देखा। अपने स्वप्न की चर्चा करते हुए उन्होंने माँ से कहा—"माँ, कल पिताजी मुझे गोद में लेकर चन्द्रलोक गये थे। वहाँ अनेक नदी, वृक्ष, पहाड़ और अद्भुत दृश्य थे। उन्होंने मुझसे पूछा कि तू साधु बनेगा? मेरे वंश मे एक व्यक्ति साधु बनेगा। मैंने उनसे कहा—'अगर आपका आशीर्वाद मिला तो जरूर बनूँगा।' मेरी बात सुनकर वे बड़े प्रसन्न हुए। बाद में मुझे यहाँ छोड़ गये।"

सारी बातें सुनते ही माँ अनजाने भय से काँप उठी। परलोकवासी आत्मा से साक्षात् होना अशुभ मानकर उन्होंने बच्चे के गले में रक्षा-कवच पहना दिया।

रंगपुर जिले में काफी तादाद में ग्वाले रहते हैं जो गोस्वामीजी के शिष्य हैं। इनमें से एक ग्वाले को किसी अपराध के कारण गोस्वामीजी के पट्टीदार गोस्वामियों ने समाज से बहिष्कृत कर दिया था। गुरु घराने के आदेश के कारण लोगों ने उसे भोज में बुलाना बंद कर दिया। यहाँ तक कि नाई-धोबी आदि की सेवाएँ बंद हो गयीं। उसकी स्थिति अत्यंत शोचनीय हो गयी।

कुछ दिनों बाद परम्परा के अनुसार गोस्वामीजी रंगपुर स्थित अपने शिष्यों के यहाँ आये। गुरुजी के आगमन का समाचार सुनकर सभी शिष्य एकत्रित हुए। केवल समाज से बहिष्कृत ग्वाला नहीं आया। उसे न देखकर गोस्वामीजी ने उसके बारे में प्रश्न किया।

एक व्यक्ति ने खड़े होकर कहा—"मालिकों ने किसी अपराध के कारण उस पर तीन सौ रुपये जुर्माना किया है। बेचारा इतना रुपया कहाँ से लायेगा? जुर्माना न

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चुकाने के कारण उसे समाज से निकाल दिया गया है। मालिकों के आदेश के कारण हम लोगों ने उसके साथ सम्पर्क तोड़ लिये हैं। धोबी-नाई आदि की सेवाएं बंद है। इन दिनों वह बड़ी मुसीबत में है।"

इस घटना को सुनते ही विजयकृष्ण गोस्वामी रो पड़े। तुरत उठकर खड़े होते हुए बोले—"मैं उसके घर जाना चाहता हूँ। तुम लोग मुझे उसके घर ले चलो।"

दूर से गोस्वामीजी को अनेक लोगों के साथ आते देख वह व्यक्ति घर के भीतर छिप गया। काफी देर तक अनुनय करने के बाद वह घर से बाहर आया। गोस्वामीजी के चरणों पर माथा रखकर रोने लगा। उसे उठाकर गले से लगाते हुए स्वयं गोस्वामीजी रो पड़े। बोले—"तुम्हें डरने की जरूरत नहीं। जुर्माना भी नहीं देना पड़ेगा। आज ही सभी लोग तुम्हें अपने समाज में ले लेंगे।"

इसके बाद गोस्वामीजी ने साथ आये लोगों से पूछा—"इस व्यक्ति को अपनी बिरादरी में पुनः वापस लेने में किसी को कोई आपत्ति है?"

लोगों ने कहा—"हमें कोई आपत्ति नहीं है। प्रभुओं के आदेश से हमने इसे जाति-च्युत किया था। इससे हमें स्वतः कष्ट हो रहा था। आपकी आज्ञा से हम आज ही इसे अपनी बिरादरी में ले लेंगे।"

उसी दिन नाई बुलाकर उसका मुंडन कराया गया। स्नान के बाद उसने गोस्वामीजी को प्रणाम किया। सभी बिरादरी के लोगों के साथ भोजन किया। सारा कार्य गोस्वामीजी के सामने संपन्न होने पर सभी गोप प्रसन्न हो उठे। वहाँ से रवाना होने के पूर्व गोस्वामीजी ने अपने पट्टीदारों को कहा—"केवल अर्थ के लिए किसी को इतना कष्ट नहीं देना चाहिए। गुरु को शिष्यों के प्रति इतना कठोर नहीं होना चाहिए। यह मनुष्योचित कार्य नहीं था।"

सांतरागाछी में रहते हुए गोस्वामीजी संस्कृत कालेज पढ़ने जाते थे। उन्हीं दिनों उनका विवाह स्वर्गीय रामचन्द्र भादुड़ी की कन्या योगमाया देवी से हुआ। उन दिनों आपकी उम्र सतरह और योगमाया देवी की छह वर्ष थी। छह वर्ष की बालिका घर-गृहस्थी का हाल क्या जानती। अक्सर वह गोस्वामीजी के पठन-पाठन में व्याघात पहुँचाने लगी। पुस्तक छीन लेती, इनके ऊपर चढ़ जाती, कहने का मतलब इन्हें हर प्रकार से परेशान करती थी। गोस्वामीजी के नाराज होने पर कहती—"क्या दिन-रात पढ़ते रहते हो। आओ, मेरे साथ खेलो।"

एक दिन वह पूछ बैठी—"तुम्हें किस नाम से पुकारूँ?" गोस्वामीजी ने कहा—"आर्यपुत्र कह सकती हो।" उसी दिन से योगमाया देवी गोस्वामीजी को आर्यपुत्र कहने लगीं।

विवाह के बाद गोस्वामीजी हिंदू शास्त्रों का अध्ययन करने लगे। फलस्वरूप घोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वेदांतिक बन गये। मायावादी हो जाने के कारण पूजा-पाठ बंद कर दिया। ठीक इन्हीं दिनों एक महिला इनके पास आकर बोली––"गुरुदेव, मैं त्रिपाप के कारण त्रस्त हूँ। कृपया मेरा उद्धार कीजिये।"

शिष्या की बातें सुनकर गोस्वामीजी चौंक उठे। उन्होंने सोचा कि मैं स्वयं माया-पाश में आवद्ध हूँ, ऐसी स्थिति में दूसरे का उद्धार कैसे करूँगा? आखिर मैं यह सब क्या कर रहा हूँ? अब आज से मुझे गुरुगिरी छोड़ देना चाहिए। शिष्य-व्यवसाय मेरे लिए उचित नहीं है। इसी प्रकार चिंता करते हुए एक दिन आप किसी शिष्य के घर से वापस लौट रहे थे कि अचानक एक ओर से आवाज आयी–'परलोक की चिंता करो।'

किसने कहा, क्यों कहा? कहाँ है वह व्यक्ति? चकित भाव से चारों तरफ देखने के बाद भी अलक्ष्य व्यक्ति दिखाई नहीं दिया। इस अद्‌भुत घटना के बाद आप कलकत्ता चले आये।

कलकत्ता आने के पूर्व आप एक बार बगुड़ा गये थे। वहाँ के ब्रह्म-समाजियों के निकट वायदा किया था कि अगर कलकत्ता गया तो वहाँ का ब्रह्म-समाज जरूर देखूंगा। यहाँ आने पर उन्हें इस बात की याद आयी। एक दिन वे जोड़ासांको स्थित ठाकुर भवन में गये। वहाँ जाकर उन्होंने देखा कि लोग भक्ति के स्तोत्र पाठ कर रहे हैं। संगीत के माध्यम से उपासना कर रहे हैं। यह सब देखकर ब्रह्म-समाज के प्रति उनकी जो पूर्व धारणा थी, गायब हो गयी। महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर के भाषण का इन पर व्यापक प्रभाव पड़ा। देवेन्द्रनाथ को गुरु मानकर उन्होंने ब्रह्म समाज को स्वीकार कर लिया।

ब्रह्म समाजी होते ही गुरुगिरी और शिष्यों के घर जाना बंद कर दिया। एक दिन आप अपने कमरे में बैठे ईश्वर और जीव के बारे में चर्चा कर रहे थे। आपने कहा–– "प्रत्येक जीव ईश्वर से ही उत्पन्न हुआ है। पृथ्वी की समस्त जातियों के पिता ईश्वर हैं। जाति-भेद तो हमारी देन है। एक ओर हम किसी को पूज्य और पवित्र समझते हैं और वहीं दूसरी ओर किसी को अछूत समझकर स्पर्श नहीं करते। यह अन्याय है।"

इस गोष्ठी में एक ग्यारह वर्ष का बालक उपस्थित था। सहसा उसने पूछा––"जब आप जाति-भेद को नहीं मानते तब अपने गले में जनेऊ क्यों पहन रखा है? ब्राह्मणपन का नाटक करने की क्या जरूरत? क्या यह छलावा नहीं है?"

इस बात को सुनते ही गोस्वामीजी चौंक उठे। अब तक उनका ध्यान इस ओर नहीं गया था। बात माकूल थी। उन्होंने कहा––"तुम्हारा कहना ठीक है। जनेऊ धारण करने का अर्थ है––जाति-भेद मानना। अब मैं आज से जनेऊ धारण नहीं करूँगा।"

गोस्वामीजी को जनेऊ उतारते देख उस बालक ने तुरत उनकी माँ के पास जाकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह समाचार सुनाया। यह समाचार पाते ही माँ दौड़ी हुई आयीं। गोस्वामीजी ने माँ के अनुरोध को अस्वीकार कर दिया। फलतः माताजी इतनी कुपित हुईं कि आत्महत्या करने को उद्यत हो गयीं। इस घटना से भयभीत होकर उन्होंने जनेऊ पुनः पहन लिया।

सन् १८६० ई० में 'संगत-सभा' नामक एक संस्था की स्थापना हुई। यहाँ ब्राह्म-सदस्य एकत्रित होकर धर्म-चर्चा किया करते थे। गोस्वामीजी इस संस्था के सदस्य बन गये। पूर्ण ब्रह्म-समाजी बनने के कारण पुनः जनेऊ पहनना बंद कर दिया। कट्टरपंथियों को यह बात पसंद नहीं आयी। उन लोगों ने इनका उग्र रूप से विरोध ही नहीं किया, बल्कि बिरादरी से अलग कर दिया। इससे गोस्वामीजी नाराज नहीं हुए। वे और भी तीव्र गति से ब्रह्म-समाज के उत्थान में जुट गये। यहाँ तक कि उन्होंने 'साधारण ब्रह्म-समाज' की स्थापना कर डाली।

ठीक इन्हीं दिनों आप एक बार भगवानदास बाबाजी के यहाँ गये। गोस्वामीजी को देखते ही उन्होंने इन्हें साष्टांग प्रणाम किया। गोस्वामीजी को प्यास महसूस हुई। बाबाजी अपने कमंडल को अच्छी तरह धोकर पानी ले आये।

गोस्वामीजी ने कहा—"मैं ब्रह्मज्ञानी हूँ। कृपया आप अपने कमंडल में पानी मत दीजिए। सभी के यहाँ कच्चा भोजन करता हूँ।"

बाबाजी ने कहा—"प्रभु, जाति-बुद्धि विद्यमान रहने पर धर्म-प्राप्ति नहीं होती। केवल भक्ति-देवी प्राप्त होती है। रहा ब्रह्म-ज्ञान का प्रश्न, वही तो भक्ति-प्राप्ति की जड़ है। बिना ब्रह्म-ज्ञान के भक्ति कैसे प्राप्त होगी। कृपया आप मेरी परीक्षा न लें। अब जल ग्रहण करें।"

गोस्वामीजी के पानी पीने के बाद शेष पानी बाबाजी ने पी लिया। यह दृश्य देखकर वहाँ बैठे एक सज्जन ने कहा—"बाबाजी, आपको मालूम है या नहीं? गोस्वामीजी ने जनेऊ फेंक दिया है।"

बाबाजी—"अद्वैतवादी जनेऊ नहीं रखते। यह क्यों नहीं देखते कि अद्वैत का संतान ब्रह्म-समाज में जाकर भी आचार्य पद पर प्रतिष्ठित है।"

दूसरे व्यक्ति ने कहा—"कुर्ता-जूता पहननेवाला आचार्य है?"

बाबाजी—"प्रभु को सुसज्जित करना हमारा कार्य है। हमारे लिए यह दुर्भाग्य की बात है कि हम ऐसा नहीं करते। इन्होंने स्वयं इन सामग्रियों का संकलन किया है। यह देखकर हम प्रसन्न हों, ऐसा सौभाग्य भी हमारे पास नहीं है।"

इस उत्तर को सुनकर सभी लोग चुप हो गये। गोस्वामीजी के विरुद्ध लोग अपना मंतव्य प्रकट करते हैं, यह बात उनसे छिपी नहीं रही, पर वे इन बातों को लेकर परेशान नहीं होते थे। यहाँ तक कि ब्रह्म-समाज की सेवा में लगे रहने के कारण कभी-कभी इन्हें भूखा रह जाना पड़ता था। एक बार इनका एक पड़ोसी इनसे मिलने आया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तो उसे ज्ञात हुआ कि पूरा परिवार कई दिनों से अनाहार है। तुरत उन्होंने अपनी जेब में हाथ डाला। उसमें डेढ़ पैसे थे डेढ़ पैसे की लाई से उस दिन का काम चला।

ब्राह्म-धर्म के प्रचार के सिलसिले में आप लाहौर आये। यहाँ आपकी मुलाकात एक अपूर्व सुंदरी से हुई। उसे देखकर आपके मन में विकार उत्पन्न हो गया। मन में ज्ञान का झटका लगते ही बड़ी ग्लानि हुई। इस पाप का प्रायश्चित करने के लिए उन्होंने कमर में पत्थर बांधकर, रावी में आत्महत्या करने का निश्चय किया। ज्योंही वे कूदने को प्रस्तुत हुए त्योंही पीछे से किसी ने उन्हें पकड़ लिया। पलटकर गोस्वामीजी ने देखा——वह एक फकीर था।

फकीर ने कहा——"ज्ञान देने से पाप प्रवृत्ति का नाश नहीं होगा। धीरज धरो। मुझे खुदा से हुक्म मिला कि मेरा एक बंदा खुदकशी करने जा रहा है। जा, उसे रोक। मैं बहुत दूर से यहाँ आया हूँ। तुम्हारा भला होगा। खुदा ने तुम्हारे लिए सब ठीक कर रखा है। आगे तमाशा देखना।"

धर्म-प्रचार के सिलसिले में आप काशी आये और यहाँ वे लोकनाथ मैत्रेय के यहाँ ठहरे। काशी में रहते समय गोस्वामीजी अक्सर तैलंग स्वामी के यहाँ जाते थे। तैलंग स्वामी को काशी विश्वनाथ का अवतार समझा जाता था। नगर के लोग स्वामीजी की पूजा करते थे। एक दिन तैलंग स्वामी गोस्वामीजी को लेकर वरुणा नदी की ओर चल पड़े। नदी किनारे आकर उन्होंने गोस्वामीजी से कहा——"जाओ, नदी में स्नान कर आओ। मैं तुम्हें दीक्षा दूँगा।"

गोस्वामीजी ने कहा —"आप मुझे दीक्षा क्यों देंगे? मैं दीक्षा आपसे क्यों लूंगा? आप तो खड़े-खड़े शिवलिंग पर लघुशंका करते हैं।"

तैलंग स्वामी ने कहा——"मैं तुम्हें दीक्षा दूँगा, गोकि मैं तुम्हारा असली गुरु नहीं हूँ। मेरा जितना कर्तव्य है, वही करूँगा। बाद में असली गुरु तुम्हें दीक्षा देंगे।"

गोस्वामीजी ने कहा——"मैं यह सब नहीं मानता।"

यह सुनकर तैलंग स्वामी ने उन्हें पकड़कर जबरन नहलाया। इसके बाद दीक्षा देते ही गोस्वामीजी की मनःस्थिति बदल गयी। तैलंग स्वामी ने कहा——"यह तुम्हारी आखिरी दीक्षा नहीं है। तुम्हारे गुरु उपयुक्त समय पर दीक्षा देंगे। वे समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। मुझे जितना करना था, उसे पूरा कर दिया।"

काफी दिनों के बाद गोस्वामीजी की मुलाकात एक सौम्य मूर्तिवाले संन्यासी से हुई। उन्हें प्रणाम करते ही उन्होंने गोस्वामीजी के सिर पर हाथ फेरते हुए आशीर्वाद दिया। उनके स्पर्श से गोस्वामीजी का सारा तन-मन स्निग्ध हो उठा। देर तक उनसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धर्म-संबंधी चर्चा होती रही। बातचीत के सिलसिले में गोस्वामीजी ने कहा--"जाने क्यों मुझे शांति नहीं मिलती। बराबर बेचैन रहता हूँ।"

स्वामीजी ने कहा--"यह बात अपने गुरु से कहो। वे इसका उपाय बतायेंगे।"

गोस्वामीजी ने कहा--"एक तो मैं गुरुवाद नहीं मानता, दूसरे मेरा कोई गुरु नहीं है।"

स्वामीजी ने हँसकर कहा--"बिना गुरु के धर्म की प्राप्ति नहीं होती। स्वयं भगवान् राम और कृष्ण को गुरुओं के निकट जाकर दीक्षा लेनी पड़ी थी।"

स्वामीजी की बातें सुनकर गोस्वामीजी अपने आप में खो गये। इसके बाद धीरे से बोले--"गुरु के बिना अगर धर्म की प्राप्ति नहीं होती तो आप मेरे गुरु बन जाइये।"

स्वामीजी--"मैं तुम्हारा गुरु नहीं बन सकता। जो गुरु तुम्हें दीक्षा देंगे, वे समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

इस घटना के कुछ दिनों बाद आप दार्जिलिंग गये। एक दिन रात के वक्त जंगल के भीतर से आ रहे थे। सहसा एक दिव्य ज्योति देखकर आप रुक गये। पास जाकर आपने देखा--एक बौद्ध योगी अपने आसन पर ध्यानस्थ है। उसके मस्तिष्क से ज्योति निकलकर चारों ओर प्रकाशमान है। यह दृश्य देखकर वे विस्मयाभूत हो उठे। काफी देर तक वे अपलक दृष्टि से योगी को देखते रहे। कुछ देर बाद जब योगी का ध्यान भंग हुआ तब उन्हें प्रणाम करने के बाद गोस्वामीजी ने पूछा--"आपके मस्तिष्क से एक अद्भुत ज्योति निकल रही थी। इस वक्त वह गायब हो गयी। ऐसा कैसे हुआ?"

योगी ने कहा--"साधना के माध्यम से जब कुंडलिनी-शक्ति षटचक्र भेद करती हुई मस्तिष्क के सहस्रदल कमल में पहुँचती है तब वह ज्योति निकलती है।"

इस अद्भुत तथ्य को सुनने पर गोस्वामीजी समझ गये कि यह योगीजी उच्चकोटि के साधक हैं। इनसे दीक्षा लेनी चाहिए। उनका मंतव्य सुनकर योगी ने कहा--"मुझे दीक्षा देने का अधिकार प्राप्त नहीं है। नर्मदा के किनारे मेरे गुरुदेव रहते हैं, आप उनके निकट जाइये।"

योगीजी के द्वारा बताये स्थान पर गोस्वामीजी आये। योगी के गुरु से अपनी इच्छा प्रकट करते ही उन्होंने कहा--"वास्तव में तुम्हारा गुरु मैं नहीं हूँ। तुम्हारे जो गुरु हैं, वे समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। घबराने की बात नहीं है, जल्द वह समय आने वाला है।"

गोस्वामीजी का अतृप्त हृदय बराबर उस गुरु की तलाश में लगा रहा जिसके बारे में अधिकांश साधक आश्वासन देते आ रहे थे। ब्राह्म-समाज की ओर से धर्म-प्रचार के लिए वे गया शहर में आये। यहाँ वे गोविन्दचन्द्र रक्षित के घर ठहरे। इनकी प्रवृत्ति-प्रकृति देखकर एक दिन रक्षित महाशय ने कहा--"यहाँ के आकाश गंगा पहाड़ पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबा रघुबर दास रहते हैं। सुनता हूँ कि बड़े सिद्ध पुरुष हैं। असल में गगा पहाड़ सिद्ध योगियों के लिए उपयुक्त है।"

अंधे को क्या चाहिए, दो आँखें। रक्षितजी की बातों ने उन्हें आकर्षित किया। गोस्वामीजी ने कहा--"चलो, कल सबेरे वहाँ चलेंगे। सिद्ध योगियों से ज्ञान की प्राप्ति होगी।"

आकाश गंगा पहाड़ पर आते ही गोस्वामीजी ने देखा--बहुत दूर एक बाबा बैठें हाथ के इशारे से उन्हें बुला रहे हैं। बाबा के समीप आते ही गोस्वामीजी उनके चरणों पर गिर पड़े। बोले--"मेरे ऊपर दया करें। मैं धर्म के बारे में कुछ नहीं जानता।"

बाबा ने कहा--"निराश होने की जरूरत नहीं, बेटा। तुम्हें सिद्धि प्राप्त होगी। तुम तो देवी के कृपा पात्र हो। समय आने दो।"

इसके बाद दोनों व्यक्ति धर्मालोचना करने लगे। बाबा के पास एक ब्रह्मचारी भी रहते थे। गोस्वामीजी यहाँ नित्य बाबा से मिलने आते थे। एक दिन वे बाहर बैठे ब्रह्मचारी से बातें कर रहे थे। कुछ चरवाहे बालक पास आये। उनमें से एक ने कहा--"इस पर्वत के ऊपर एक साधु महाराज बैठे हैं।"

गोस्वामीजी के मन में उत्सुकता हुई। अपने मित्र को साथ लेकर वे पहाड़ पर गये। वहाँ जाने पर गोस्वामीजी ने देखा कि एक संत बैठे हैं। उनके शरीर से दिव्य ज्योति निकल रही थी। आँखें चार होते ही गोस्वामीजी के अन्तर में भक्ति का ज्वार उमड़ पड़ा। साथ लाये फल-फूल उनके चरणों के पास रखकर बैठ गये। कुछ देर बात-चीत करने के बाद चले आये। इसके बाद नित्य ब्रह्मचारीजी के साथ दर्शन करने जाते रहे।

एक दिन अकेले जाना पड़ा। ब्रह्मचारीजी किसी कार्य से शहर गये हुए थे। उस दिन वहाँ जाते ही गोस्वामीजी व्याकुल हो उठे। यहाँ तक कि रो पड़े। इन्हें अचानक रोते देखकर महात्माजी ने पास बुलाया, फिर गोद में बैठाकर दीक्षा दी। बीज मंत्र दिये। बीज मंत्र पाते ही गोस्वामीजी को लगा जैसे बिजली का एक झटका सारे शरीर के तंत्रियों को झकझोर गया। बाद में महात्माजी उन्हें साधना की विभिन्न प्रणालियों के बारे में बताने लगें।

सहसा यह सब करते-करते गोस्वामीजी बेहोश हो गये। काफी देर बाद होश आने पर उन्होंने चकित भाव से देखा--महात्माजी अन्तर्धान हो गये हैं। इधर-उधर काफी देर तक वे महात्माजी की तलाश में चक्कर काटने के बाद वापस आ गये।

आखिर एक दिन उनके हृदय की तृष्णा शांत हुई। उस दिन वे रामशिला पहाड़ पर घूमने गये थे। सहसा उनके गुरु वहाँ दिखाई दे गये। गोस्वामीजी के हाथ को पकड़कर बोले--"मेरे लिए इतना व्याकुल होने की जरूरत नहीं। वक्त आने पर तुम्हें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सब कुछ मिल जायगा। साधना करते रहो। कठोर-साधना से ही साधक को इच्छित सामग्री मिलती है।"

गुरु के दर्शन मात्र से ही वे आनन्द से विभोर हो उठे थे। गोस्वामीजी के गुरु का नाम ब्रह्मानन्द स्वामी था। नानकपंथी यानी पंजाबी थे। अधिकतर वे मानस सरोवर में रहते हैं। कभी-कभी शिष्यों से मिलने चले आते हैं।

गुरु की आज्ञा शिरोधार्य कर गोस्वामीजी आकाश गंगा पहाड़ पर कठोर-साधना करने लगे। आहार-निद्रा त्यागकर नये साधन में जुट गये। कुछ दिनों बाद एक दिन गुरुजी आये और कहा--"वत्स, अब तुम्हें संन्यास ग्रहण करना पड़ेगा। काशी में हरिहरानन्द एक संन्यासी रहते हैं। तुम शीघ्र उनके पास चले जाओ। उनसे संन्यास ले लो। उनके निकट कोई बात मत छिपाना। इसके बाद वे जो आज्ञा दें, बिना मीन-मेष किये, उसे मान लेना। इससे तुम्हारा भला होगा।"

गुरुदेव की आज्ञा मानकर गोस्वामीजी काशी चले आये। हरिहरानन्द के पास जाकर अपनी सारी राम कहनी सुनाने के बाद संन्यास देने की प्रार्थना की।

स्वामीजी ने कहा--"तुम अत्यन्त पवित्र और सदाचारी हो, परन्तु शास्त्रों की मर्यादा का पालन करना जरूरी है। तुम्हें प्रायश्चित करने के बाद यज्ञोपवीत धारण करना पड़ेगा। बात यह है कि संन्यास ग्रहण करते समय ब्राह्मणों को शिखासूत्र त्याग करना पड़ता है। इतने कार्य करके आओ तब आगे का कार्य किया जायेगा।"

स्वामीजी के आज्ञानुसार गोस्वामीजी ने प्रायश्चित किया। यज्ञोपवीत धारण किया, बाद में शिखा-सूत्र त्याग कर उन्होंने संन्यास-धर्म ग्रहण किया। संन्यास लेने के बाद उन्होंने निश्चय किया कि अब मुझे हमेशा के लिए गृहस्थाश्रम त्याग देना चाहिए, क्योंकि अब मैं संन्यासी हो गया हूँ। तभी उनके गुरुदेव प्रकट हुए और कहा--"नहीं, तुम्हें गृहस्थाश्रम नहीं छोड़ना है। तुम पत्नी, पुत्र-पुत्रियों के साथ रहकर साधना करते रहो। ब्राह्म-समाज को भी मत छोड़ो। समयानुसार एक-एक कर सब अलग हो जायेंगे।"

एक दिन बातचीत के सिलसिले में गोस्वामीजी ने अपने गुरुदेव से पूछा--"शास्त्रों में जितनी सिद्धि की बातें हैं, क्या वह सब सत्य हैं?"

"क्या तुम्हें विश्वास नहीं होता?"

गोस्वामी--"जी, नहीं।"

गुरुदेव ने कहा--"शास्त्रों में जिन सिद्धियों का वर्णन है, वह सब तपस्या के जरिये प्राप्त किया जा सकता है। आओ, आज तुम्हें कुछ दिखाता हूँ।"

इसके बाद गोस्वामीजी को अपने साथ लेकर गुरुदेव एक निर्जन स्थान में आये। एक के बाद एक करके उन्होंने सभी सिद्धियाँ दिखायीं। कभी हवा से छोटा बनकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पक्षी की तरह आकाश में उड़ने लगे। कभी अणु बनकर, पहाड़ को भेदते हुए दूसरी ओर निकल गये। इस प्रकार अष्ट सिद्धियों का प्रयोग उन्होंने किया। यहाँ तक कि सूक्ष्म शरीर के रूप में वे मृत शरीर में प्रवेश कर गये जबकि उनका शरीर यहाँ मृतावस्था में पड़ा रहा।

यह सारा दृश्य देखकर गोस्वामीजी रोमांचित हो उठे। गुरुदेव ने मुस्कराते हुए पूछा--"अब भी विश्वास हुआ या नहीं ?"

गोस्वामीजी ने सिर हिलाकर स्वीकार करते हुए गुरुदेव को प्रणाम किया।

इधर उनके मित्रों ने एक नया गुल खिलाया। गोस्वामीजी को गेरुआ वस्त्र पहनते देख सभी भयभीत हो गये। उन्हें भय हुआ कि वे गृहस्थी छोड़कर अन्यत्र न चले जाँये। तुरत इस आशंका की सूचना योगमाया देवी को दी गयी। योगमाया देवी अविलम्ब गया आयीं और उन्हें साथ लेकर कलकत्ता चली गयीं।

कलकत्ता आने के बाद गोस्वामीजी की ख्याति बढ़ने लगी। उनके विचार तथा भाषणों का प्रभाव लोगों पर पड़ा। बंगाल धर्म-प्राण प्रांत है। फलतः लोग इनसे दीक्षा लेने के लिए आने लगे। इस कार्य के लिए उन्होंने गुरुदेव से आज्ञा प्राप्त की। आज्ञा प्राप्त होते ही वे अपने शिष्य को दीक्षा देने लगे। गोस्वामीजी जब किसी व्यक्ति को दीक्षा देते थे तब दीक्षित व्यक्ति के अलावा अन्य कोई वहाँ नहीं रहता था। प्रत्येक व्यक्ति को दीक्षा देने के पहले सर्व प्रथम गुरुदेव से आज्ञा लेते थे। यह आज्ञा आध्यात्मिक ढंग की होती थी। अपने आसन पर बैठे ही बैठे वे सूक्ष्म रूप में गुरु से बातें करते थे। जब तक गुरु से आज्ञा नहीं मिलती थी तब तक वे किसी को दीक्षा नहीं देते थे। दीक्षा देने के बाद गोस्वामीजी प्रत्येक शिष्य को चेतावनी देते थे--"स्त्री जाति से जितना अधिक दूर रहोगे, साधना ठीक चलेगी। उनके संस्पर्श से दूर रहना।"

गोस्वामीजी की गुरुगिरी ब्राह्म-समाजियों की आँखों में खटकी। अधिकांश लोगों ने इनके विरुद्ध प्रचार करना प्रारंभ किया। उनका आरोप था--आजकल ब्रह्मचारीजी जो कार्य कर रहे हैं, उससे ब्रह्म-समाज का अनिष्ट हो रहा है। इनके कमरे में तरह-तरह की अश्लील तस्वीरें रखी हैं। गोस्वामीजी छिपाकर दीक्षा देते हैं। इनके शिष्य आपके चरणों पर माथा टेककर प्रणाम करते हैं। इन सभी प्रकरणों से मनुष्य भगवान् के पद पर प्रतिष्ठित हो रहा है, अतएव इन्हें प्रचारक-पद से हटाया जाय।

गोस्वामीजी ने इन आरोपों का कोई उत्तर नहीं दिया। धीरे-धीरे इनके विरुद्ध विरोध इतना उग्र हो गया कि १७ मई को एक विशेष सभा बुलायी गयी। इस सभा में गोस्वामीजी ने अपना त्याग-पत्र दे दिया। इस प्रकार उन्हें ब्राह्म-समाज से मुक्ति मिल गयी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बंगाल के कई नगरों का भ्रमण करते हुए आपने बिहार में प्रवेश किया। यहाँ दरभंगा जिले में आकर आप पेट की पीड़ा से परेशान होने लगे। डाक्टरी सेवा असफल हो गयी। मेजबान ज्ञान बाबू चिंतित हो उठे। गोस्वामीजी को देखने के लिए संन्यासी भी आते थे। एक दिन मकान से बाहर निकलते ही ज्ञान बाबू ने देखा—बाहर चौकी पर एक गोरे रंग का संन्यासी बैठा है। आलखल्ला (एक प्रकार का वस्त्र जो गर्दन से पैर तक कुर्ते की भाँति होता है।) पहने हुए हैं। उन्होंने सोचा कि गोस्वामीजी को देखने आये होंगे। चूंकि वे जल्दी में थे, इसलिए उन्हें प्रणाम कर अपने कार्य से चले गये।

इसके बाद गोस्वामीजी के स्वास्थ्य में अचानक तेजी से सुधार होने लगा। शाम होते-होते वे पूर्ण रूप से ठीक हो गये।

बातचीत के सिलसिले में ज्ञान बाबू ने कहा—"आज सबेरे एक बाबाजी आये थे। उन्हें भीतर आते नहीं देखा। बाहर ही बैठे रहे और फिर न जाने कहाँ चले गये। व्यस्त रहने के कारण आपको यह समाचार अभी तक कह नहीं सका।"

गोस्वामीजी ने कहा—"मुझे मालूम है। वे स्वयं परमहंसजी थे। उचित समय न होने के कारण उन्होंने अपना परिचय नहीं दिया।"

काफी दिनों तक बीमार रहने के कारण उसी दिन जब गोस्वामीजी स्नान की तैयारी कर रहे थे तब उनके निकट उनकी, पुत्री शांतिसुधा खड़ी थी। अचानक वह चीख उठी—"ब्रह्मचारीजी।"

उसे डाँटते हुए गोस्वामीजी ने कहा—"चुप-चुप। देख, तू ने ब्रह्मचारीजी को देखा है, यह बात किसी से मत कहना। भूलना नहीं।"

शांतिसुधा ने बारिदी के लोकनाथ ब्रह्मचारी को देखा था। इसके पूर्व वह उनका दर्शन कर चुकी थी, इसलिए उन्हें तुरत पहचान गयी थी। उलंग स्थिति में देखने के कारण वह चीख उठी थी।

उस दिन गोस्वामीजी अपने बच्चों को समझा रहे थे कि जीवन में झूठ नहीं बोलना चाहिए। जो लोग झूठ नहीं कहते, हमेशा सत्य कहते हैं, उन्हें भगवान् के दर्शन होते हैं।

शांतिसुधा ने कहा—"मैं तो कभी झूठ नहीं बोलती, पर मुझे कभी दर्शन नहीं हुआ।"

गोस्वामीजी ने कहा—"होगा री, होगा।"

शांतिसुधा ने जिद् पकड़ ली—"तब मुझे दिखाओ।"

गोस्वामीजी ने कहा—"कल दिखाऊँगा।"

दूसरे दिन स्नान करते समय गोस्वामीजी ने कहा—"कुछ खाने लायक सामान लेती आ।" शांतिसुधा घर में जाकर माँ से खाद्य सामग्री माँग लायी। उस वस्तु को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाथ में लेकर गोस्वामीजी कुछ देर तक स्तव पाठ करते रहे। थोड़ी देर बाद पानी में से दिव्य आभूषणों से सज्जित एक हाथ ऊपर उठ आया। गोस्वामीजी ने खाद्य वस्तु को उस हाथ पर रख दिया। तुरत ही वह हाथ गायब हो गया। शांतिसुधा की आँखें विस्मय से बड़ी-बड़ी हो गयी। धीरे से बोली--"क्या यह गंगा देवी का हाथ था?"

गोस्वामीजी ने कहा--"नहीं, यह पद्मा देवी का हाथ था। तुम सब भाग्यवती हो वर्ना कलियुग में प्रत्यक्ष दर्शन दुर्लभ है।"

विहार के कई स्थानों को देखने के बाद गोस्वामीजी वाराणसी आकर श्री ज्ञानेन्द्रनाथ गुहाराय के यहाँ ठहरे। एक दिन गोस्वामीजी ने गुहाराय से कहा--"काशी में एक महान् संत रहते हैं, स्वामी विशुद्धानन्द। चलो, उनका दर्शन कर आयें।"

गोस्वामीजी को देखते ही स्वामी विशुद्धानन्द ने बड़े आदर के साथ अपने पास वैठाया। ऊँचे दर्जे के साधक स्वतः एक दूसरे की प्रतिभा को देखकर समझ लेते हैं। दोनों व्यक्ति काफी देर तक आपस में धर्म संबंधी चर्चा करते रहे। दूसरे दिन स्वामी विशुद्धानन्द का एक शिष्य गोस्वामीजी के पास आया। उन्हें अपने साथ विशुद्धानन्दजी के आश्रम में ले आया। गोस्वामीजी को देखते ही भावातिरेक हो स्वामी विशुद्धानन्द उनकी पदधूलि लेकर माथे से लगाने लगे। इस दृश्य को देखकर उपस्थित लोग चकित रह गये, क्योंकि काशी में स्वामीजी पूजनीय माने जाते थे।

वाराणसी में कुछ दिन निवास करने के बाद गोस्वामीजी वृन्दावन चले आये। एक दिन वे बिछावन पर सो रहे थे। उन्हें अनुभव हुआ कि असंख्य खटमल उन्हें काट रहे हैं। पता नहीं, इतने खटमल कहाँ से आ गये? खाट पर से उठकर प्रकाश में उन्होंने देखा--बिछावन पर एक भी खटमल नहीं है। बगलवाली खाट पर श्रीधर खर्राटे ले रहा है, उसकी खाट पर भी खटमल नहीं है, फिर मेरी खाट पर कैसे आये और कहाँ गायब हो गये। बात कुछ समझ में नहीं आयी। पहले की तरह चुपचाप सो गये। पुनः उन्हें खटमल काटने लगे और रात भर काटते रहे। सबेरे सोकर उठने के बाद उन्होंने अनुभव किया कि उनका काम समूल रूप से नष्ट हो गया है। इसके बाद ही वे ऊर्ध्वरेता हुए।

विजयकृष्ण गोस्वामी ने निश्चय किया कि अब कुछ दिनों तक यहाँ रहकर भजन किया जाय। एक दिन वे राधा बाग जाकर भजन करने लगे। सहसा सरं-सरं आवाज सुनकर चौंक उठे। उन्होंने देखा--सामने एक वृक्ष बुरी तरह काँप रहा है जबकि न तो आँधी है और न तूफान। इसी बीच वृक्ष गायब हो गया और उसकी जगह एक वैष्णव प्रकट हुआ। इस अद्भुत कांड को देखकर गोस्वामीजी ने पूछा--"क्या आप यहाँ वृक्ष के रूप में निवास कर रहे हैं?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वैष्णव ने कहा--"हाँ, प्रभो। मैं यहाँ वृक्ष के रूप में निवास करता हूँ।"

बाद में गोस्वामीजी को ज्ञात हुआ कि यहाँ ऐसे अनेक वृक्ष हैं जो वास्तव में वैष्णव हैं। यहाँ रहते समय गोस्वामीजी स्नान करने के लिए यमुना में जाते थे। एक दिन स्नान करने की तैयारी कर रहे थे कि कुछ प्रेतात्माएँ आपके पास आयीं और उनमें से एक ने विनय के साथ कहा--"प्रभो, हम लोग बड़ा कष्टमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। कृपया हमें इससे छुटकारा दिलाइये।"

गोस्वामीजी ने पूछा--"तुम लोगों का दुःख कैसे दूर कर सकता हूँ, कोई उपाय बताओ।"

प्रेत ने कहा--"आप स्नान करने के बाद घाट पर खड़े हो जाँये। आपकी जटा से गिरनेवाले जल को पीने से हमारा कष्ट दूर हो जायगा।"

गोस्वामीजी स्नान के बाद भींगा शरीर लिए घाट पर खड़े हो गये। प्रेत गण उनकी जटा से गिरने वाले जल को चुल्लू में भरकर पीने लगे। आश्चर्य के साथ गोस्वामीजी ने देखा--प्रेतों का काला शरीर ज्योतिर्मय हो उठा। इस प्रकार उन्हें प्रेत-योनि से मुक्ति मिल गयी।

उन्हीं दिनों वहाँ गुरुदेव आये और विशेष व्रत पालन करने की आज्ञा तथा विधि बता गये। इस व्रत के लिए पत्नी से अलग रहना था। गोस्वामीजी ने योगमाया देवी पुत्र तथा पुत्रियों को ढाका भेज दिया। इसके बाद अपने अनुष्ठान में लग गये।

पति से अलग होने के कारण योगमाया देवी को मानसिक कष्ट होने लगा। दुःख के कारण उन्होंने आहार-निद्रा का त्याग कर दिया। फलस्वरूप वे दिन पर दिन क्षीण होती गयीं। लाचारी में एक दिन उन्होंने अपनी सारी स्थिति लिखते हुए लिखा कि जल्द से जल्द मुझे अपने चरणों में बुला लें। गोस्वामीजी ने उत्तर दिया कि अभी नहीं। तुम रासयात्रा के समय आ सकती हो। इस समाचार को पढ़कर योगमाया देवी, बहुत व्याकुल हो उठीं। रासयात्रा में अभी काफी देर है। कहीं मुझे छोड़कर वे संन्यासी न बन जाँये। इस आशंका से योगमाया देवी इतनी भयभीत हुई कि तुरत वृन्दावन चली आयीं।

योगमाया देवी को देखकर गोस्वामीजी ने कुछ नहीं कहा। वे शांत रहे। पति का यह रुख देखकर योगमाया देवी अधीर हो उठीं। बोलीं--"मुझसे बोल क्यों नहीं रहे हो?"

गोस्वामीजी ने कहा--"आजकल जिस व्रत का पालन कर रहा हूँ, उसमें पत्नी से बातें करना मना है।"

"तब मैं क्या करूँ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोस्वामीजी ने कहा—"तुम अलग से कहीं किराये पर कमरा ले लो और वहीं रहो। मेरे साथ नहीं रह सकती।"

योगमाया देवी ने कहा—"मैं तुमसे दूर नहीं रह सकती।"

गोस्वामीजी ने कहा—"पर मेरे साथ भी नहीं रह सकती। इस बारे में मुझे अधिक परेशान मत करो।"

पति की ओर गौर से देखने बाद योगमाया देवी ने कहा—"ठीक है। अब तुम्हें मैं परेशान नहीं करूँगी। मैं यहाँ से जा रही हूँ।" कहने के पश्चात् वे बाहर निकल गयीं।

काफी देर हो जाने पर भी जब वे वापस नहीं आयीं तब लोग चिंतित हो उठे। एक कमरे में एक टुकड़ा कागज मिला जिस पर उनके हाथ से लिखा था—"मैं जा रही हूँ। मुझे खोजने की कोशिश न करें।" इस कागज को पाकर लोग सन्नाटे में आ गये। तरह-तरह की आशंकाएँ मन में उत्पन्न हो गयीं। जिसे जिधर शंका हुई, उधर खोजने के लिए चला गया। धीरे-धीरे तीन दिन बीत गये। कहीं से कोई सूचना न पाकर लोगों को विश्वास हो गया कि वे जीवित नहीं हैं।

गोस्वामीजी ने अपने सुपुत्र योगजीवन से कहा—"तू कुतु (छोटी लड़की) को लेकर ढाका चला जा। बारेंद्र श्रेणीवाले किसी ब्राह्मण लड़के से कुतु का विवाह कर देना। एक मंदिर बनवाकर उसमें माँ की सामग्री रखकर पूजा करना।"

ठीक इसी समय अलंग वैष्णवी अखाड़ा के पुजारी आये और कहा—"माताजी का पता चल गया है।" इस समाचार को सुनते ही गोस्वामीजी के साथ कुछ लोग अलंग अखाड़े में आये। गोस्वामीजी को देखते ही योगमाया देवी कमरे के बाहर निकल आयीं।

यहाँ से आश्रम आने तक दोनों ही चुपचाप रहे। रात को दाऊदजी के मंदिर से प्रसाद आया। प्रसाद ग्रहण करने के बाद गोस्वामीजी ने अपनी पत्नी से कहा—"अब तुम ग्रहण करो।"

योगमाया देवी नाराज रहीं, इसलिए प्रसाद लेने से इन्कार कर दिया। काफी मान मनौवल करने के बाद भी वे प्रसाद खाने को तैयार नहीं हुईं। यह देखकर गोस्वामीजी ने कहा—"तुम्हारे निकट जो अपराध किया है, उसे क्षमा कर दो और अब प्रसाद ग्रहण करो।"

इन बातों से योगमाया देवी की नाराजगी दूर हो गयी। प्रसन्नतापूर्वक उन्होंने प्रसाद ग्रहण किया। जबतक योगमाया देवी साथ नहीं थीं तबतक गोस्वामीजी दाऊजी का भोग खाते रहे। अब योगमाया देवी के साथ रहने के कारण उनका बनाया भोजन करने लगे। एक दिन योगमाया देवी को स्वप्न में दाऊजी ने कहा—"तुम इतना बढ़िया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजन बनाती हो, पर मुझे कभी नहीं देती ? मुझे भी दिया करो।"

इस स्वप्न को देखने के बाद से योगमाया देवी अपने हाथ का बनाया भोजन नित्य मंदिर में भेजने लगीं। इसी खुशी में संभवतः उन्हें दाऊजी से द्रौपदी का वरदान मिला। वे भोजन बनाने के बाद जब तक स्वयं भोजन नहीं कर लेती थीं तब तक चाहे कितने ही व्यक्ति आये, सभी को वे भोजन कराती थीं। कभी कम नहीं होता था।

सन् १८९१ ई० की बात है। माघ का महिना। एक रात को कई महापुरुष गोस्वामीजी के पास आये और कहा—"आज हिमालय स्थित मुक्तिनाथ तीर्थ में उत्सव होगा। हम लोग वहीं जा रहे हैं। आप भी चलिये।"

गोस्वामीजी को जाते देख योगमाया देवी कह उठीं—"मैं भी आप लोगों के साथ चलूंगी। मुझे भी साथ ले लो।"

गोस्वामीजी ने कहा—"तुम हम लोगों के साथ कैसे चलोगी ? हम लोग सूक्ष्म शरीर से जायेंगे।"

योगमाया—"अगर तुम इच्छा करो तो ले जा सकते हो।"

पत्नी का आग्रह देखकर गोस्वामीजी ने कहा—"तुम जिस स्थिति में हो, उसके कारण सूक्ष्म शरीर में वहाँ नहीं जा सकती।"

योगमाया देवी—"अगर तुम चाहो तो इस स्थिति को बदल सकते हो। बदल दो।"

गोस्वामीजी—"तुम जो चाह रही हो, अगर उसे पा लोगी तो इस संसार में रहना पसंद नहीं करोगी। उस वक्त माया-मोह से मुक्त हो जाओगी, ब्रह्मानन्द में डूब जाओगी। भगवान् की नित्य-लीला देखने में विभोर हो जाओगी। अगर तुम्हारी अवस्था खोल दूँगा तो इस शरीर में नहीं रहना पसन्द करोगी। भूलो मत कि अभी तुम्हारी माँ और बेटी जीवित हैं।"

गोस्वामीजी के इस अनुरोध को योगमाया देवी ने अस्वीकार कर दिया। अभी कुछ दिन पहले छोटी बेटी के साथ गोस्वामीजी यमुना किनारे बैठे थे। अचानक कह उठे—"डुबो मत देना। देखो, डुबोना नहीं।" लड़की ने पूछा—"आप किसे कह रहे हैं ?" गोस्वामीजी ने कहा—"और किसे कहूँगा बेटी ? यहाँ चुपचाप बैठा था। श्रीकृष्ण गोपियों के साथ आये और कहा कि चलो, जरा सैर कर आयें। नटखट प्रकृति के हैं। बीच भँवर में नाव को घुमाने लगे। यह दृश्य देखकर गोपियाँ डर गयीं। तभी मैंने कहा—'डुबो मत देना।' गोकि वे नाव डुबोते नहीं।"

गोस्वामीजी को ऊहापोह करते देख उनके गुरुदेव ने कहा—"इसकी अवस्था खोल देने का समय आ गया है। इतना कहने के पश्चात् उन्होंने योगमाया की अवस्था खोल दी। तुरत उनकी आँखों के सम्मुख संपूर्ण आध्यात्मिक तत्व प्रकट होने लगे। योगमाया देवी इन लोगों के साथ मुक्तिनाथ-सूक्ष्म शरीर में दर्शन करने चली गयीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरुदेव की आज्ञा से एक वर्ष तक गोस्वामीजी वृन्दावन रह गये। समय समाप्त होने के बाद उन्होंने अपनी पत्नी से कहा––"गुरुदेव की आज्ञा से यहाँ एक वर्ष रहना था, सो पूरा हो गया। अब हरिद्वार जाने की इच्छा है। वहाँ का कुंभमेला देखकर ढाका जाऊँगा। यात्रा की तैयारी करो।"

सारी बातें सुनने के बाद योगमाया देवी ने कहा––"तुम लोग हरिद्वार जाना चाहते हो, जाओ। मैं नहीं जाऊँगी। मैं यहीं रहूँगी।"

गोस्वामीजी ने विस्मय से पूछा –"यहाँ किसके पास रहोगी ?"

योगमाया––"इस शरीर को लेकर ही सारी झंझट है। इस शरीर को त्यागकर नित्य लीला में अंगीभूत हो जाऊँगी तब इसी धाम में निवास करूँगी।"

गोस्वामीजी ने कहा––"अभी तुम्हारी माँ-बेटी, बेटे जीवित हैं। अगर तुमने शरीर त्याग दिया तो इन्हें बड़ा कष्ट होगा।"

योगमाया––"संसार में कोई किसी का नहीं है। सभी अपने कर्मों को भोग रहे हैं। जीवितकाल में माया है, बाद में कहीं कुछ नहीं।" इतना कहने के बाद वे घर से पंचांग उठा लायीं और उसे खोलकर देखने के बाद पुनः बोली––"आगामी १० फाल्गुन को इस नश्वर शरीर को त्याग दूँगी। इसी दिन श्रीमन्नित्यानन्द का आविर्भाव दिवस है।"

गोस्वामीजी सारी बात समझ गये। अब पत्नी को रोका नहीं जा सकता। निश्चित दिन उन्हें कै-दस्त की बीमारी हुई। केवल गोस्वामीजी इस बात को जानते थे कि आज योगमाया देवी अपना कलेवर बदल डालेंगी। भोजन के पश्चात् गोस्वामीजी नित्य की भाँति साधु-दर्शन करने गये। उनके वापस आने के पूर्व ही पत्नी का निधन हो गया था। योगमाया के शरीर का संस्कार करने के बाद उन्होंने अपने पुत्र से कहा––"अस्थि संचय कर लो। इसमें से कुछ हरिद्वार में प्रवाहित करना है और शेष ढाका ले जाकर वहाँ एक मंदिर बनवा देना।"

× × ×

पत्नी के सभी संस्कारों को पूर्ण करने के बाद पूज्य गोस्वामीजी हरिद्वार चले आये। एक दिन उनकी मुलाकात एक उच्चकोटि के संत से हो गयी। बातचीत के सिलसिले में उन्होंने कहा––"मैं नित्यानन्द महाप्रभु को देख चुका हूँ। आज से चार सौ वर्ष पूर्व वे गुजरात गये थे। उन दिनों मेरी उम्र १५-१६ वर्ष थी।"

गोस्वामीजी ने पूछा––"इतनी लंबी उम्र आपको कैसे प्राप्त हुई ?"

संतजी जो कि शरीर से गुजराती थे, बोले––"हठयोग के माध्यम से मैंने दीर्घ जीवन प्राप्त किया है। हिंगलाज तीर्थ में मुझसे भी वृद्ध एक महात्मा हैं जिनका दर्शन मैं कर चुका हूँ। वे कृष्ण-बलराम का दर्शन कर चुके हैं। आजकल वे अपने आसन से उठ नहीं पाते। उनकी जटा इतनी बड़ी हो गयी है कि देखकर आचर्य होता है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोस्वामीजी ने कहा--"जिस हठयोग के जरिये आप दीर्घजीवी हैं, अगर असुविधा न हो तो मुझे दिखाइये।"

संतजी ने कहा--"ठीक है। तुम रात के अंतिम पहर में मेरे यहाँ आ जाना। सब दिखा दूँगा।"

गोस्वामीजी उस संत की कुटिया में गये और हठयोग की समस्त क्रियाएँ देखते रहे। इसमें आठ घंटे लगे। इसी प्रकार हरिद्वार में एक पूर्व परिचित महात्मा से अचानक उनकी मुलाकात हो गयी। कुछ वर्ष पूर्व गोस्वामीजी इनके साथ कैलास पर्वत देखने के लिए गये थे। अलमोड़ा से आगे बढ़ने पर सीमा चौकी की पुलिस ने आगे जाने से रोक दिया। उसने कहा--"सरकार की ओर से आगे जाने की मनाही है। आगे रास्ता बहुत खतरनाक हैं। जो लोग इस रास्ते से गये, वे फिर वापस नहीं आये।"

यह बात सुनकर गोस्वामीजी वापस लौट आये, परन्तु संतजी की दृढ़ता देखकर इन्हें आगे जाने की अनुमति दे दी गयी। गोस्वामीजी को इस बात की उत्सुकता हुई कि आगे की यात्रा कैसी रही।

साधु ने कहा--"आपसे अलग होकर मैं आगे बढ़ गया। उस क्षेत्र में बड़ी कड़ी सर्दी पड़ती है। हठयोग का अगर अभ्यास न हो तो उधर नहीं जाना चाहिए। आगे आने पर विचित्र दृश्य देखा। हमारे शास्त्रों में तपोवनों के बारे में जैसा वर्णन है, मेरे सामने ठीक उसी प्रकार के दृश्य प्रतिफलित हो रहे थे। वहाँ नर-मांस भोजी जंगली जातियों को भी देखा। लगातार कई दिनों के सफर के बाद एक बड़े तालाब के समीप आया। उस तालाब के किनारे अनेक महापुरुष और साधु पूजा की विभिन्न सामग्री लिए खड़े थे।

मुझे देखते ही कुछ लोगों ने कहा--"जल्दी से स्नान कर आओ।" उनकी आज्ञा मानकर स्नान कर आया। उन लोगों ने अपने उपहारों में से कुछ सामग्रियाँ मुझे देते हुए कहा--"इस सरोवर से अभी एक रथ निकलेगा। हम लोग उसी रथ की प्रतीक्षा में खड़े हैं। कैलासपति का रथ निकलते ही पूजा करनी पड़ेगी।" कुछ देर बाद सरोवर के बीच अपरूप सुवर्ण रथ ऊपर आया। चारों ओर शंख-घड़ियाल बजने लगे। कुछ देर तक रथ स्थिर रहा। पूजा समाप्त होते ही रथ डूब गया। अगर रथ दिखाई दे तो कैलास-दर्शन या हर-गौरी दर्शन संभव नहीं है। मैं इन लोगों के साथ कैलास-पर्वत आया। उसका रूप शिव लिंग की तरह है। वहाँ एक स्वर्णपुरी है। शाम के समय उस पुरी का दरवाजा खुला तब हम लोग भीतर गये। हमारे शास्त्रों में कैलास के बारे में जो कुछ लिखा है, वह सब सही है। एक बड़ी गुफा में हीरे का सिंहासन था जिस पर भगवान् शिव और पार्वती देवी विराजमान थे। साधुओं का दल वहाँ जाकर पूजा-अर्चना करने लगा। रात भर पूजा होती रही। सुबह हमें आशीर्वाद देकर विदा कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिया गया। अंग्रेज जिसे कैलास पर्वत कहते हैं, वास्तव में वह कैलास पर्वत नहीं है। कैलास पर्वत अनाविष्कृत है। कैलास पर्वत दूर की बात--अभी तक हिमालय के अनेक स्थान अज्ञात हैं। वर्फ की अधिकता के कारण लोग वहाँ तक पहुँच नहीं पाते।"

हरिद्वार से गोस्वामीजी गेंडरिया आश्रम आये। यहाँ दर्शन के लिए भक्तों की भीड़ लग गयी। कुछ दिनों के बाद आपको सन्निपात की शिकायत हो गयी। डाक्टरों ने जाँच के बाद बताया कि स्वामीजी के दोनों फेफड़े वेकार हो गये हैं। यह सुनकर स्वामीजी के शिष्य हाय-हाय कर उठे। लोग समझ नहीं पा रहे थे कि कैसे स्वामीजी को अच्छा किया जाय। खाँसते समय गोस्वामीजी के मुँह से खून के थक्के निकलने लगे। पूरे आश्रम मे मातम छा गया। इस प्रकार पन्द्रह दिन बीत जाने के बाद सोलहवें दिन गोस्वामीजी ने कहा--"मेरा शरीर दही माँग रहा है।"

सन्निपात-रोग में दही? यह बात सुनकर सभी सहम गये। कोई उन्हें मना कर भी नहीं सकता था। कुछ प्रिय शिष्यों ने दबी जबान से मना किया, पर उन्होंने इस विरोध को स्वीकार नहीं किया। दही खाने के बाद वे ठीक हो गये। दूसरे दिन स्वाभाविक रूप से उन्होंने भोजन किया। यह घटना सभी के लिए विचित्र थी।

एक दिन की घटना है। प्रभुपाद गोस्वामीजी अपने आसन पर बैठे भजन कर रहे थे। इसी समय एक मुसलमान फकीर सर्प के रूप में आकर बोला--"मैं एक मुसलमान फकीर हूँ। कालवश शरीर नष्ट हो गया है। इस वक्त सर्प-योनि में हूँ। मैं एकान्त में साधना करना चाहता हूँ, पर मन लायक स्थान नहीं मिल रहा है। अगर आप अपना आसन दें तो यहीं बैठकर साधना करूँ।" यह बात सुनकर उन्होंने अपना आसन छोड़ दिया। सर्प ने उस पर अपना अधिकार जमाया। एक ही रात में आसन वल्मीक स्तूप से ढक गया और नित्य उसकी ऊँचाई बढ़ने लगी।

यह दृश्य देखकर एक दिन कुंज बाबू ने कहा--"अगर यही हालत रही तो एक दिन यह वल्मीक छप्पर फाड़कर आगे निकल जायगा।"

यह बात सुनते ही गोस्वामीजी ने स्तूप के ऊपर हाथ रख दिया। इस प्रकार उसका नित्य का बढ़ना रुक गया। महापुरुषों के आसन का महत्व होता है। यहाँ तक कि समाधिस्थल भी अपना प्रभाव दिखाते हैं। अनाधिकारियों को ऐसे स्थानों पर नहीं बैठना चाहिए। एक बार इसी गेंडरिया आश्रम में गोस्वामीजी का पुत्र योगजीवन उनकी अनुपस्थिति में, उनके आसन पर बैठ गया था। बैठने के साथ ही उसे लगा जैसे कोई उसका गला दबाकर मार डाल रहा है। उसकी चिंतनीय स्थिति देखकर लोग घबरा उठे। तुरत गोस्वामीजी को सूचना दी गयी। वापस आकर उन्होंने लड़के को ठीक किया। बाद में अपने पुत्र से कहा--"तुमने बड़ा गलत काम किया। मेरे आसन की रक्षा महापुरुष गण करते हैं। आसन की अमर्यादा हो, यह किसी को पसंद नहीं। चूंकि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम अभी अबोध बालक हो, इसलिए बच गये। भविष्य में कभी मेरे आसन पर मत बैठना।"

कुछ दिनों बाद आश्रम में समाचार आया कि गोस्वामीजी की पुत्रवधू अस्वस्थ है। स्थिति चिंतनीय है। कलकत्ता से गोस्वामीजी गेंडरिया आये। मृत्यु के दिन गोस्वामीजी बसन्तकुमारी देवी का हाथ अपने हाथ में लेकर हरिनाम जपने लगे। उनके स्पर्श से पुत्रवधू का कष्ट लाघव होने लगा। शाम तक रोगी के चेहरे पर शांति छा गयी।

गोस्वामीजी के शिष्य प्रसन्नचंद्र ने कहा--"अगर आप चाहें तो इसे रोग मुक्त कर सकते हैं। कृपया इसे ठीक कर दीजिए।"

गोस्वामीजी ने कहा--"जो जीव जीवन्मुक्त होना चाहता है, उसे रोकना उचित नहीं है। यह तो स्वतः मुक्तावस्था प्राप्त कर रही है। बड़े सौभाग्य से मनुष्य को यह अवसर प्राप्त होता है। इसे बचाने का अनुरोध मत करो। अभी मुक्तावस्था में थोड़ी देर है। मेरी सास (योग जीवन की नानी) का व्यवहार इसके साथ अच्छा नहीं रहा, इसलिए यह कष्ट पा रही है। यातना की स्मृतियाँ इसे कष्ट दे रही हैं।"

"यह कष्ट कैसे दूर होगा ?"

गोस्वामीजी ने कहा--"शीघ्र ही यह संकट दूर हो जायगा। मेरी सास आकर इससे क्षमा माँगेगी और बहू उन्हें क्षमा कर देगी।"

कुछ देर बाद ही गोस्वामीजी की सास रोगी के पास आकर फफककर रोने लगी। आँसुओं को पोंछती हुई अपने द्वारा दिये यातनाओं के लिए क्षमा माँगने लगी। वहू ने प्रसन्न भाव से क्षमा कर दिया।

गोस्वामीजी ने कहा--"अब मुक्तावस्था प्राप्त हो गयी।"

कहने के साथ ही बहू के प्राण पखेरु उड़ गये। मरने से पहले वहू ने इच्छा प्रकट की थी कि एकादशाह के दिन वह अपने पति के हाथ से पिण्डदान लेगी और स्वयं प्रकट होगी। गोस्वामीजी ने योगजीवन से पिण्डदान जरूर कराया जिसे बसन्त कुमारी ने अपने हाथ से लिया, पर उसे प्रकट होने नहीं दिया।

× × ×

गेंडरिया से कलकत्ता, ढाका आदि शहरों के भक्तों को दर्शन देते हुए गोस्वामीजी पुरीधाम आये। उनकी इच्छा हुई कि यहाँ कुछ दिनों तक निवास करूँगा। पुरी में उन दिनों श्री संप्रदाय के महंत की ख्याति थी। गोस्वामी जी के निवास के कारण अधिकांश भक्तों की भीड़ इधर चली आयी। महंतजी का महत्व घट गया। इसके पूर्व एक बार श्री संप्रदाय के महंतजी ने गोस्वामीजी से एक आश्रम के निर्माण के लिए कई हजार रुपये देने को कहा था। गोस्वामीजी ने अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए इन्कार कर दिया था। महंतजी के मन में इस बात का आक्रोश था। इधर जब से गोस्वामीजी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरी आये हैं तब से दिन दूनी रात चौगुनी उनकी लोकप्रियता बढ़ती जा रही थी। इन सभी घटनाओं के कारण महंत ने इस काँटे को दूर करने का निश्चय किया। गोस्वामीजी को मार डालने का षड़यंत्र किया गया। इस कार्य के लिए एक संन्यासी को ठीक किया गया जो विष मिश्रित लड्डू लेकर आया। आपने उसे खा लिया।

खाने के साथ ही जीभ और पेट में दर्द प्रारंभ हो गया। थोड़ी देर बाद बेहोश हो गये। दिन भर बेहोश रहने के बाद रात आठ बजे होश में आये। उठकर भोजन किया। भोजन करने के बाद आपने कहा—"मुझे जहर दिया गया है। साधु वेषधारी एक व्यक्ति विष मिश्रित मगदल के लड्डू लेकर आया और कहा—'महाराज, आपके लिए जगन्नाथजी का प्रसाद ले आया हूँ।' लड्डुओं में जहर मिलाया गया है, यह बात मैं जान गया था। उनमें जहर इतना था कि उसे खाने के बाद एक हाथी मर जाता। लड्डुओं को देखने के बाद सोचा कि इसे खाना उचित है या नहीं? मुझे ऊहापोह करते देख उक्त साधु ने कहा—'प्रसाद पाते ही खाना चाहिए। कहा गया है—

शुष्कं पर्युसितं वापि नीतं वा दूरदेशतः।
प्राप्त मात्रेण भोक्तव्यं नात्र काल विचारण॥'

इस श्लोक को सुनने के बाद मैंने प्रसाद को उदरस्थ कर लिया। सोचा—जो होनेवाला है, जगन्नाथजी जाने। तुरत पेट में दर्द हुआ और मैं बेहोश हो गया। इसके बाद शरीर से मेरी आत्मा बाहर निकल आयी यानी मेरी मृत्यु हो गयी। मेरी मृत्यु हो जाने के बाद जगन्नाथजी ने तुरत लोकनाथ से कहा—'पापात्माओं ने गोस्वामी को मार डाला है। तुम तुरत जाकर उसकी रक्षा करो।' जगन्नाथजी के आदेशानुसार लोकनाथ मेरे पास आये। जिस देवता ने समुद्र मंथन के समय वेद मंत्र पाठ करते हुए हलाहल-पान किया था, उसी मंत्र को पढ़ते हुए मेरे शरीर के सारे विष को पी गये। लेकिन पूरा नहीं पी सके। बाद में मनसा देवी ने अपने कुंभ से मेरे ऊपर जल छिड़का। इससे मेरी शारीरिक यंत्रणा कम हुई और मैं जीवित हो गया। बाद में जगन्नाथजी आकर बिगड़ने लगे—'विष मिश्रित मिष्ठान क्यों खाने गये?' मैंने कहा—'प्रसाद की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।' जगन्नाथजी ने पूछा—'यह तुमसे किसने कहा कि विष मिश्रित प्रसाद खाना चाहिए? पापियों ने तुम्हें मार डालने के लिए ही जहर दिया था। अब वे तुम्हारे पुत्र और नातियों को मारने के चक्कर में हैं। उन्हें सावधान कर देना।"

शिष्यों ने प्रश्न किया कि लोकनाथ ने सारा विष क्यों नहीं ग्रहण किया? गोस्वामीजी ने कहा—"इसका रहस्य वे ही बता सकते हैं। मैं क्या बताऊँ?"

कुछ दिन बाद उसका रहस्य सामने आ गया। प्रभुपाद दिन व दिन निस्तेज और दुर्बल होते गये। हमेशा शीतल पदार्थ खाना चाहते थे। इसी बीच एक शिष्य ने उनसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूछा—"अगर आप इच्छा न करें तो आपका शरीर नष्ट नहीं हो सकता ।"

गोस्वामीजी ने कहा—"अगर मैं इच्छा न करूँ तो ब्रह्मा-विष्णु और शिव मिलकर भी मेरा शरीर नष्ट नहीं कर सकते ।"

इस जवाब को सुनकर लोग संतुष्ट हो गये कि फिलहाल गुरुदेव हमसे बिछुड़नेवाले नहीं है ।

कुछ दिनों बाद शिष्यों ने निश्चय किया कि गुरुदेव को कलकत्ता ले चला जाय । यह समाचार पाते ही गोस्वामीजी ने कहा—"जब तक यहाँ के दुकानदारों का कर्ज चुकता नहीं हो जाता तब तक मैं कहीं नहीं जाऊँगा ।"

इस घोषणा के कुछ दिनों बाद अपने जामाता जगद्वन्धु मैत्र को बुलाकर उन्होंने कहा—"मुझसे उठा नहीं जा रहा है । जरा मदद करो । पेशाब करूँगा ।"

मैत्र तथा सरलनाथ की सहायता से ज्योंही वे उठकर खड़े हुए त्योंही पेशाब के साथ-साथ उन्होंने मलत्याग भी किया ।

यह देखकर गोस्वामीजी ने कहा—"यह स्थान साफ कर दो और मुझे कहीं बैठा दो । अब मैं अपने आसन तक नहीं जा सकता । हो सके तो कोई ठंडी चीज पिलाओ ।"

थोड़ी देर बाद चाय पीते ही उनका शरीर स्थिर हो गया । २२ ज्येष्ठ, फसली सन् १३०६ यानी सन् १९१० के दिन भारत के इस महान् योगी ने अपना नश्वर शरीर त्याग दिया ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४

वामा खेपा

उस समय तारापीठ (तारापुर) गाँव के निवासी गहरी नींद में सो रहे थे, पर एक युवक बड़ी बेचैनी के साथ अपने घर के आँगन में टहल रहा था। उसकी चहल-कदमी की आवाज से राजकुमारी की आँखें खुल गयीं। उसने चौंककर कहा--"कौन, वामा ? तू अभी तक सोया नहीं ? जा, सो जा।"

वामा ने कहा--"मुझे मुक्ति दो माँ। मैं इस माया में नहीं रहना चाहता। बचपन के दिनों तुम कहा करती थी कि भगवान् को दिल लगाकर पुकार। अब उन्हें पुकारने जा रहा हूँ।"

माँ घबराकर बोल उठी--"इस अंधेरे में कहाँ जायगा ? पागलपन मत कर। चल, सो जा।"

"तुम इसकी चिंता मत करो। बस, मुझे अपना आशीर्वाद दो।"

इतना कहने के बाद वामा तेजी से घर के बाहर निकल गया। श्मशान के पास आते ही अनेक डरावने दृश्य उसे भयभीत करने लगे। वामा 'जय माँ तारा' उच्चारण करता हुआ आगे बढ़ने लगा। एकाएक उसने देखा कि सामने एक विराट पुरुष दोनों हाथ बढ़ाकर उसे अपने अंक में भर लेना चाहता है। तुरत उसने तेज आवाज में पूछा--"कौन है ? क्या आप श्मशान भैरव हैं ?"

"नहीं वत्स ! मैं तुम्हारा गुरु हूँ और तुम मेरे एकमात्र शिष्य हो। मैं तुम्हारे आने की प्रतीक्षा कर रहा था।" कहने के साथ ही उन्होंने उसे अपने गले से लगा लिया।

जिस प्रकार परमहंस रामकृष्ण स्वामी विवेकानन्द को, प्रभुपाद विजयकृष्ण गोस्वामी सतीशचन्द्र मुखर्जी को पाने के लिए व्याकुल थे, ठीक उसी प्रकार व्रजवासी कैलासपति वामा की प्रतीक्षा कर रहे थे। अब तक वामा अपने परिवार से जुड़ा रहा और आज सारा बंधन तोड़कर अनजाने गुरु के पास चला आया। राजकुमारी ममता के कारण कभी-कभी आती और अपने बेटे को एक नजर देखकर वापस चली जाती। गाँव के अन्य लोगों की तरह वह भी व्रजवासी महाराज से डरती थी।

व्रजवासी और स्वामी मोक्षदानन्द कुटिया के सामने बैठे प्रायः धर्मालोचन किया करते थे। वामा एक ओर चुपचाप बैठा उनकी बातें सुना करता। मूर्ख वामा को उनकी बातें समझ में नहीं आती थी। बातचीत करते समय एक दिन व्रजवासी ने अपने सहयोगी मोक्षदानन्द से कहा "वामा सत्यवादी, सरल और साहसी है। इसके भीतर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

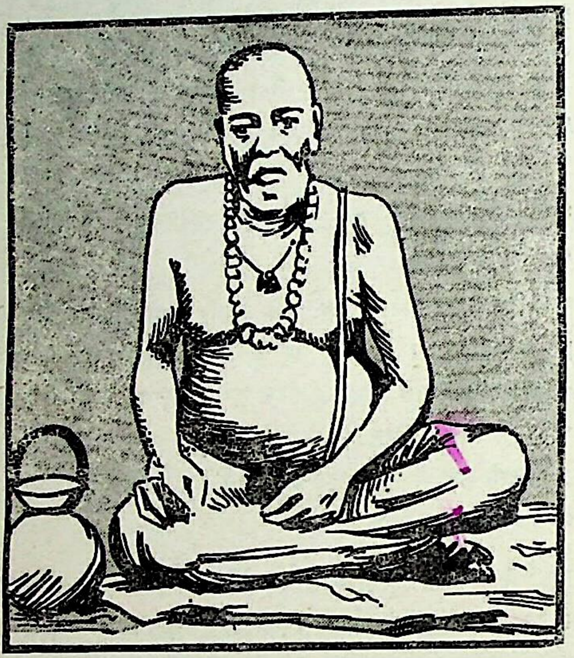

वामा खेपा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लज्जा, घृणा या भय नहीं है। इसे दीक्षा देने की जरूरत नहीं। वेदान्त की बातें सुनाते जाओ। आगे कभी इसका अभिषेक कर दिया जायेगा तब इसकी पूर्व स्मृति अपने आप आ जायगी। उस वक्त यह स्वयं ही जान लेगा कि वह क्या है ? इसे बताने की जरूरत भी नहीं होगी।" इसके बाद वामा की ओर देखते हुए उन्होंने कहा--"कल से मोक्षदानन्द तुझे वेद पढ़कर सुनायेंगे। मन लगाकर सुनना।"

दूसरे दिन से वेद पाठ का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ और कृष्ण त्रयोदशी के दिन पाठ समाप्त हुआ। वामा को भिक्षाटन के लिए भेजा गया। आज उसका अभिषेक होगा। रसोई बनाकर वामा ने 'तारा माँ' को भोग लगाया और प्रसाद दरिद्रनारायण में वितरित किया।

शाम के समय ब्रजवासी उसे अपने साथ लेकर श्मशान भूमि पर आये। चारों ओर सियार, कुत्ते और गिद्ध अधजले शवों को खा रहे थे। वृक्षों पर चमगादड़, उल्लू आदि फड़फड़ा रहे थे। सहसा वामा ने देखा घोर अंधकार के मध्य एक बीज मंत्र प्रकट हुआ। इस दृश्य को देखकर वह चकित रह गया। बीज मंत्र पाते ही उसके सारे शरीर में आनंद की लहरें हिलोरे लेने लगीं।

यह घटना सन् '८६८ की एक महारात्रि को हुई थी। ब्रजवासी ने एक सेमल वृक्ष के नीचे उसे बैठाते हुए कहा--"तुम्हें जो बीज मंत्र मिला है, यहाँ बैठकर उसका जप करते रहो। डरना मत। मैं सामने मंदिर में हूँ।"

गुरु के कथनानुसार वह बैठकर जप करने लगा। चारों ओर भीतजनक शब्द और अद्‌भुत दृश्य देखकर उसका मन चंचल होने लगा। इसी समय एक नारी अट्टहास करती हुई सामने आकर खड़ी हो गयी। उसकी लाल जीभ और बिखरे बालों को देखकर वामा इतना डर गया कि जप छोड़कर सीधे मंदिर की ओर भागा। उसे आसन छोड़कर आते देख ब्रजवासी ने पूछा--"क्या हुआ रे ? भाग क्यों आया ?"

वामा ने कहा--"बाप रे, एक राक्षसी मुझे निगलने आयी थी। उसकी आँखें अंगारे की तरह जल रही थीं।"

ब्रजवासी ने कहा--"बड़ा डरपोक है। चल, दिखा कहाँ है तेरी राक्षसी ?"

श्मशान के निकट आने पर कहीं कोई दिखाई नहीं दिया। उसे पुनः आसन पर बैठाते ब्रजवासी ने कहा--"डरना मत। मैं मंदिर में हूँ।" गुरु से आश्वासन पाकर वामा इस बार दृढ़ होकर आसन पर बैठ गया। थोड़ी देर बाद हाथी और शेर का गर्जन सुनाई देने लगा। ठीक उसी समय मंदिर की ओर से आवाज आयी--'माभैः माभैः।' वामा को लगा जैसे पास ही कोई कह रहा है--'खर्व्वां लम्बोदरीं भीमां व्याघ्रचर्म्मावृतां कटौ। नवयौवन सम्पन्नां पंचमुद्रा विभूषितां। चतुर्भुजां लोलजिह्वां महाभीमां वरप्रदां।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रात के शेष प्रहर में साधक का शरीर समाधिस्थ हो गया। सहसा मधुर मातृकंठ सुनते ही साधक की आँखें खुलीं। आसपास किसी को न देखकर वामा का अन्तर रो पड़ा। कहा—"कहाँ हो माँ ?" तुरत आवाज आयी—"मैं तेरे पास ही हूँ वत्स। तू रो क्यों रहा है ? मैं तो युग-युगान्तर से सेमल वृक्ष के रूप में यहाँ रहती हूँ। प्रहर काल बाद यह वृक्ष स्वतः गिर जायगा।"

वामा ने पूछा—"ऐसा क्यों होगा माँ ?"

तुरत आवाज आयी—"चिंता करने की जरूरत नहीं। शिला रूप में, मैं यहाँ रहूँगी और अपना कुछ अंश तुझे दूँगी।"

धीरे-धीरे पौ फटने लगी। मंदिर की ओर जाते हुए कोई कह रहा था—"नीलवर्णा सदा पातु जानुनी सर्वदा मम। नागमुण्डधरा देवी सर्वांग पातु सर्वदा ॥ नागांगदधरा-देवी पातु अन्तरदेशतः। चतुर्भुजा सदा पातु गमने शत्रुनाशिनी ॥"

साधना के माध्यम से वामा को यह ज्ञात हो गया कि वह पूर्व जन्मों में क्या था। यहाँ तक उसे अपने इस आसन को पहचानने में देर नहीं लगी। मोक्षदानन्द को तब तक यह नहीं मालूम हो सका था कि वामा को जातिस्मरता प्राप्त हो गयी है। नित्य के नियम के अनुसार उन्होंने वामा से कहा—"हुक्का भर ला।" तुरत वामा ने इनकार कर दिया। मोक्षदानन्द अपने शिष्य की अवहेलना सह्य नहीं कर सके। नाराज होकर कटु वाक्य कहने लगे।

ठीक उसी समय व्रजवासी ने कहा—"नाराज होने की आवश्यकता नहीं है मोक्षदानन्द। आज वामा सिद्ध पुरुष हो गया। स्वयं तारा देवी उसे यह रहस्य बता चुकी हैं कि यही तेरा आसन है जहाँ बैठकर कई जन्मों में यह साधना करता रहा। हमारा कार्य पूरा हो गया है। अब हमें यह स्थान छोड़ देना चाहिए।"

× × ×

अकबर का हिन्दू सेनापति वीर मानसिंह ने जब बंगाल विजय किया तब उसके नाम पर अकबर ने तीन जिलों का नामकरण किया। वीरभूमि, मानभूमि और सिंह भूमि। वीरभूमि जिला साधकों के निकट साधना भूमि रही है। साधकों का कहना है कि दक्ष-यज्ञ ध्वंस होने के बाद शक्ति के कई अंग इसी जिले में गिरे हैं। अनादि काल से इस जिले के विभिन्न स्थानों में तांत्रिक साधना करते आये हैं। इनमें केन्दुली और तारापीठ की ख्याति दूर-दूर तक है।

इसी तारापुर गाँव में सर्वानन्द अपनी पत्नी तथा छह संतानों के साथ रहते थे। उनका मुख्य पेशा था बच्चों के द्वारा नाटक (जात्रा) करना। बड़ी लड़की जयकाली, इसके बाद वामाचरण प्रथम पुत्र हुआ। इसके बाद तीन पुत्रियों के बाद रामचन्द्र द्वितीय पुत्र था। इन आठ प्राणियों का भरण-पोषण वे ठीक से नहीं कर पाते थे। थोड़ी जमीन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थी जिसे अधिया पर देने के कारण अन्न कम प्राप्त होता था। इसी बीच एक मुसीबत और आ गयी। बड़ी लड़की विधवा होकर बाप के घर वापस आ गयी।

बचपन से ही बामाचरण निर्बुद्धि था। अक्सर वह ऐसी हरकतें करता था जिसके कारण लोग उसे खेपा (पागल) कहने लगे। स्वयं माँ भी परेशान रहती थी। असल में बामाचरण को बचपन से ही समाधि होने लगी थी जिसे लोग समझ नहीं पाते थे। राजकुमारी देवी ने कभी यह अनुभव नहीं किया कि उसकी कोख से एक असाधारण पुरुष ने जन्म लिया है।

अपनी माँ से वह यदाकदा प्रश्न करता--"क्यों माँ, मिट्टी के देवता भी जिन्दा होते हैं?"

जान छुड़ाने की गरज से माँ जवाब देती--"बेटा भगवान् हमेशा जिन्दा रहते हैं। मन लगाकर उन्हें पुकारना चाहिए।"

माँ की बातें सुनकर वह प्रसन्न हो उठता। घर पर मिट्टी लाकर काली, शिव, गणेश की प्रतिमा बनाता। बेर, आम, अमरूद आदि वृक्षों की पत्तियों से उनका शृंगार करता। बाद में हाथ जोड़कर निवेदन करता कि भगवान् कुछ तो खा लो। जब मिट्टी के देवता नहीं खाते तब वह जबरन उनके मुँह में घुसेड़ देता था। पुत्र की यह दशा देखकर कभी माँ हँसती तो कभी चिंतित हो उठती। बामाचरण को न अपने खाने की चिंता थी और न सोने की। माँ खाना ले आती तो उससे कहता--"माँ, तुमने कहा था कि मन से पुकारने पर भगवान् सुनते हैं, पर मेरी बात वे नहीं सुनते।"

बड़ी बहन भी थोड़ी सनकी थी। वह तुरत कहती--"भइया, अभी नहीं, कुछ दिन बाद सुनेंगे।"

सन् १८५६ में सर्वानन्द अपनी गृहस्थी छोड़कर स्वर्गवासी हो गये। सर्वानन्द के रहते सभी का गुजारा नहीं होता था। उनकी मृत्यु के बाद राजकुमारी पर जैसे मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। अंत में एक दिन राजकुमारी ने बामाचरण से कहा--"बेटा, अब सहन नहीं हो रहा है। कहीं काम-धंधा कर, वर्ना सभी भूखों मरेंगे।"

माँ की आज्ञा मानकर बामाचरण नौकरी खोजने लगा। एक तो अशिक्षित, दूसरे ब्राह्मण होते हुए भी पूजा-पाठ नहीं करना जानता था। 'माँ तारा' के अलावा कुछ नहीं कह पाता था। भाग्य से मुलुटी गाँव के काली मंदिर में नौकरी लग गयी। भोग के लिए रसोई बनाना और पूजा के लिए फूल चुनना था। जो बालक कभी चूल्हे के पास नहीं गया, वह भोजन कैसे बनाता? कभी कच्चा तो कभी जल जाने की शिकायत होने लगी। लाचारी में पुजारी ने उसे केवल फूल संग्रह करने का काम सौंपा।

मन लायक काम पाकर बामा प्रसन्न हो उठा। कुछ दिनों बाद यहाँ भी लापरवाही करने लगा। अक्सर उसे भाव-समाधि होने लगी। उस वक्त वह पेड़ पर घंटों बैठा रह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाता। एक दिन पुजारी को कहीं जाना था। फूल लाने में देर होते देख, वे बाग में आकर 'वामा-वामा' चिल्लाने लगे। वामा की ओर से कोई आवाज न पाकर बाग के भीतर आकर उन्होंने देखा कि वह एक पेड़ पर चुपचाप बैठा है। पुजारी ने एक नौकर को बुलाकर कहा--"उसे ऊपर से घसीट ला।"

नीचे आने पर भी उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। चेहरे पर पानी के छींटे पड़ते ही उसकी समाधि टूट गयी। होश में आकर उसने कहा--"पुजारीजी, आज ढेर फूल लाया हूँ।"

फूल लेकर पुजारीजी ने जल्दी से पूजा समाप्त करने के बाद कहा--"भोग तू चढ़ा देना।"

वामा ने कहा--"भक्ति-हीन पूजा के बाद मैं भोग नहीं चढ़ा सकता।"

'छोटा मुँह बड़ी बात' सुनकर पुजारीजी को क्रोध आ गया। उसी दिन उसे नौकरी से निकाल दिया गया। इसके बाद वह खेती का काम करने लगा। वहाँ भी असफलता मिली। परिवार का बोझ कम करने की गरज से माँ ने अपने दोनों पुत्रों को अपने भाई के यहाँ भेज दिया। राजकुमारी ने जिस उद्देश्य से भेजा, वह पूरा नहीं हुआ। मामा तो सीधे थे, पर मामी इन दोनों भाइयों को फूटी आँखों से नहीं देख पाती थी। वामाचरण को गाय चराने का काम दिया गया था। गोशाले से गाय लेकर वह मैदान में चला जाता और मैदान में छोड़कर स्वयं एक पेड़ के नीचे बैठ जाता। एक दिन गायों को छोड़कर भाव-वेश में आकर 'हरि बोल' गाते हुए नाचने लगा।

वामाचरण यह भूल गया कि पास ही किसानों के खेत हैं जहाँ जाकर छुट्टा पशु फसल चौपट कर देंगे। अपने खेत में गायों को चरते देख किसानों ने वामा को डाँटना शुरू किया--"अंधा है क्या? गायों को छोड़कर नाच रहा है।"

बात वामाचरण के कानों तक नहीं पहुँची। वह देवी के प्रेमानन्द में मग्न रहा। इधर किसान गायों को मारते हुए अपने खेतों से भगाने लगे। तभी वामाचरण ने चीखते हुए कहा--"मुझे मत मारो भाई, मत मारो। मैं तो मामी के मार से त्रस्त रहता हूँ, तिस पर तुम सब मारोगे तो मर जाऊँगा।"

वामाचरण की बातें सुनकर किसान हँसने लगे। हम तो गायों को मार रहे हैं और यह कहता है कि मुझे मत मारो। पागल है। इस प्रकार की घटनाओं की शिकायत लगातार आने के कारण वामाचरण तथा उसके भाई रामचन्द्र को मामी ने भगा दिया।

× × ×

तारापुर गाँव को आजकल तारापीठ कहा जाता है। वास्तव में यह स्थान तांत्रिकों का शक्तिपीठ है। कुलार्णव तंत्र में लिखा है--

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वामे वामा रमण कुशला दक्षिणो पान पात्र,
मग्रेन्यस्तं मरिच सहित शूकरस्योष्ण मांसम।
स्कन्धे वीणा ललित सुभगा सद्गुरुणां प्रपंच,
कौलो धर्म परम गहनो योगिनामप्यगमः॥

अर्थात् बायीं ओर रमण कुशला वामा, दायें पानपात्र, सामने मरिच सहित शूकर मांस, कंधे पर सुललित मोहिनी वीणा और साथ में सद्गुरु का संग। यही है—कौल्य धर्म, अत्यंत दुर्बोध, योगियों के लिए भी अगम्य।

तारापीठ का महाश्मशान इस श्लोक में वर्णित दृश्य को चरितार्थ करता है। यहाँ जन सामान्य कभी-कभी आते हैं। वृक्षों पर कौवे, उल्लू और चमगादड़ रहते हैं। एक ओर सेमल वृक्ष है जिसके नीचे वशिष्ठ देव द्वारा स्थापित पंचमुंडी आसन पर देवी की शिला मूर्ति स्थापित है। इसी कारण इसे वशिष्ठ सिद्धपीठ कहा जाता है। कभी वशिष्ठ मुनि यहाँ बैठकर साधना करते थे। आगे चलकर वामाचरण ने इसे लक्षमुंडी आसन बनाया। प्राचीन वृक्ष कालान्तर में गिर गया और वहाँ पाताल भेदी सुरंग बन गया। इसी सुरंग के ऊपर ईंटों का चबूतरा बनाकर लक्षमुंडी आसन बनाया गया था। तारा, उग्रतारा, महोग्रतारा, वज्रा, नीला, सरस्वती, कामेश्वरी, भद्रकाली आदि मिलाकर तारा के अष्टरूप हैं। ज्ञातव्य है कि वशिष्ठ, परशुराम, भृगु, दत्तात्रेय, दुर्वासा आदि मुनि तारा विद्या में सिद्ध थे।

ठीक इन्हीं दिनों अर्थात् सन् १८५८ ई० में ब्रजवासी कैलासपति नामक एक सिद्ध कौल तारापीठ आये। यहाँ आकर वे सिद्धपीठ पर साधना करने लगे। वामा अक्सर इधर आया करता था। ब्रजवासी के आकर्षण ने उसे यहाँ बुला लिया। एक प्रकार से वह ब्रजवासी का सेवक बन गया। ब्रजवासी एक प्रकार से औघड़ थे। जब वे भोजन करने बैठते तब उनकी थाली में सुअर, कुत्ते और कभी-कभी गिद्ध मुँह लगाकर खाते थे। धीरे-धीरे वह प्रवृत्ति वामा में जन्म लेने लगी। ब्राह्मण के लड़के को ऐसा करते देख गाँव के लोग उसे म्लेच्छ, पिशाच, भंड आदि कहने लगे। लेकिन वामा को इसकी परवाह नहीं हुई। ब्रजवासी उच्चकोटि के साधक थे। कभी-कभी अपना चमत्कार दिखाते थे, इसलिए लोग उनसे भय और श्रद्धा करते थे।

ठीक इन्हीं दिनों विश्वेश्वर भट्टाचार्य के प्रधान शिष्य वेदज्ञ बाबा मोक्षदानन्द का आगमन हुआ। मोक्षदानन्द भी उच्चकोटि के तांत्रिक साधक थे। इन दोनों संतों ने इस सिद्धपीठ पर अड्डा जमाया। ब्रजवासीजी वामा के भीतर को जान चुके थे। उन्होंने निश्चय किया कि इसे दीक्षा देकर योग्य बनाऊँगा तभी यह अपने को पहचान सकेगा। एक दिन ब्रजवासी ने वामा से कहा—"खाली समय में तू इसी सेमल वृक्ष के नीचे बैठकर 'जय तारा' जप करते रहना।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन दो संतों के कारण तारापीठ का महाश्मशान जाग्रत हो उठा। ब्रजवासीजी वामा के प्रथम और प्रधान गुरु बने। जब दोनों साधक शास्त्र-चर्चा करते तब वामाचरण एक मात्र श्रोता बनकर मनोयोग से उनकी बातें सुना करता। इस प्रकार उनकी बातें सुनते-सुनते उसमें वैराग्य की भावना उत्पन्न हुई और एक दिन माँ से अनुमति लेकर हमेशा के लिए श्मशानवासी हो गया जिसका उल्लेख किया जा चुका है।

× × ×

"मुझे मत मारो--मुझे मत मारो। मैं सच कह रहा हूँ। इसमें मेरी कोई गलती नहीं है।" मंदिर के भीतर से वामा की आवाज आयी।

"बदमाश कहीं का। बनता है साधु और कर्म यह है! तिस पर कहता है कि माँ के कहने पर खाने लगा। सारा भोग जूठा कर दिया। चाण्डाल कहीं का।" पुरोहित महाशय वामाचरण पर बरस रहे थे।

भीड़ में से किसी ने कहा—"इतना नहीं मारना चाहिए था और वह भी दरवान के द्वारा। ब्राह्मण का लड़का है।"

पुरोहित बिगड़ उठा--"कौन कहता है कि ब्राह्मण का लड़का है? जो आदमी कुत्ता-सियार के साथ एक पत्तल में खाता है, वह चाण्डाल है। अब मंदिर में दिखाई दिया तो टाँग तोड़ दूँगा।"

पुरोहित को आपे से बाहर देखकर भीड़ में से कोई कुछ नहीं बोला। राजा का पुरोहित है। कौन झगड़ा मोल लेने जाय। उधर नाटोर राज्य की महारानी अन्नदा सुंदरी ने स्वप्न में देखा--तारापीठ की शिलामयी देवी मंदिर छोड़कर चली जा रही हैं। उनका चेहरा उदास है। आँखों में आँसू भरे हुए हैं, पीठ पर रक्त के दाग हैं। यह दृश्य देखकर रानी काँप उठी। बोली--'माँ, यह कैसा दृश्य दिखा रही हो?' माँ ने कहा--"मैं यहाँ अनादि काल से हूँ। तू ने मेरे लिए मंदिर बनवाया, पूजा का प्रवंध किया। आज तेरे पुरोहित ने मेरे पुत्र खेपा को बहुत मारा है। उसने खेपा को नहीं, मुझे मारा है। देख ले, मेरी पीठ पर रक्त के कितने दाग हैं।"

रानी काँप उठी। बोली—'माँ, मुझे क्षमा करो। मैं इस पाप का प्रायश्चित करूँगी।' माँ ने कहा--"मेरे लड़के को आज चार दिन हुए प्रसाद खाने को नहीं मिला, इसलिए मैंने भी ग्रहण नहीं किया।"

रानी बोली--'क्या? तुम भी उपवासी हो माँ?' माँ ने कहा--"हाँ, अपने लड़के को दिये बिना माँ भला कुछ खाती है? अगर मेरे भोग के आगे वामा खेपा के लिए भोग का इंतजाम कर सकोगी तो मैं रह सकती हूँ, वर्ना हमेशा के लिए चली जाऊँगी।"

देवी की बातें सुनकर रानी ने कहा—"कल ही इसका इंतजाम करती हूँ। तुम जाओ मत।' सहसा रानी की नींद खुल गयी। सुबह रानी ने अपने स्वप्न की चर्चा राजा साहब से की।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इधर स्वयं तारा माँ अपने लड़के को मना रही थी और वामा श्मशान भूमि पर बच्चों की तरह लोटते हुए कह रहा था—"नहीं, मैं तेरे मंदिर में नहीं जाऊँगा। आदर के साथ खाने के लिए बुलाया और जब खाने बैठा तो दरवान से पिटवाया। तू पाषाणी है, मायाविनी है। मैं तेरी बात नहीं सुनता।"

माँ ने कहा—"नहीं, मेरे बेटे, मान जा। उन लोगों ने तुझे नहीं, मुझे मारा है।"

वामा खेपा ने चौंककर पूछा—"तुम्हें मारा है ?"

ठीक इसी समय अनेक लोगों के आने की आहट मिली और वह अदृश्य आवाज गायब हो गयी। नाटोर की महारानी के आदेश से कई राज कर्मचारी खेपा बाबा की तलाश कर रहे हैं। महारानी ने जैसा स्वप्न देखा था, उसी के अनुसार भोग का प्रबंध किया गया है। रानी के आदेश से पुराने पुरोहित और दरवान को नौकरी से निकाल दिया गया। पूजा तथा भोग की पूरी जिम्मेदारी वामा खेपा बाबा को सौंप दी गयी। बाबा को रानी के स्वप्न की घटना सुनाने पर वे विस्मय से अभीभूत हो उठे। रानीजी ने स्वयं ही इच्छा प्रकट की है कि आगे से देवी की पूजा बाबा करेंगे। उनकी सहायता के लिए अलग से एक पुजारी की नियुक्ति की गयी।

अब आगे से देवी-पूजा बाबा करेंगे, यह बात सुनकर अनेक दरिद्रनारायण प्रसाद पाने के लिए मंदिर के पास आने लगे। बाबा किस तरह से पूजा करेंगे, यह देखने के लिए गाँव से काफी लोग आ गये। समय पर ढाक, घंटा, घड़ियाल, शंख बजने लगा। पुजारीजी बाबा को पकड़कर मूर्ति के सामने बैठाते हुए बोले—"अब पूजा शुरू कीजिये।"

बाबा आसन पर बैठने के बाद बोले—"आज मेरी बेटी पेट भर कर खायेगी, कई दिनों से भोजन नहीं मिला है। पर खायेगी कैसे ? तू तो पाषाणी है, तू कैसे खा सकती है ?"

इसके बाद आव देखा न ताव, लगे स्वयं ही भोजन करने। लोग अवाक् होकर बाबा की कार्यवाही देखते रहे। भोजन करने के बाद उन्होंने कहा—"कहाँ हो, कालाचाँद काका ? चलो, अब बलिदान करो।"

घातक के गँडासे पर दो फूल चढ़ाकर बकरे का बलिदान किया गया। इसके बाद बाबा ने कहा—"यह ले चना संुदरी और शर्बत बाबाजी। माँ, खा ले।" इस प्रकार उनकी पूजा सम्पन्न हो गयी। भोग के बाद चन्दन मिश्रित फूल और बेल की पत्तियाँ शिला मूर्ति की ओर फेंकते हुए बोले—"यह रहा फूल और बेल की पत्तियाँ।"

एक-एक फूल फेंकते जा रहे थे और गाली बकते जा रहे थे। लोगों ने आश्चर्य के साथ देखा कि फेंके गये सभी फूल अपने आप देवी के गले में माला के रूप में परिणत हो गये। बाबा की मंत्र-हीन पूजा अपने ढंग की अकेली थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबा नित्य पूजा नहीं करते थे। जब मन में आया, पूजा करने आये वर्ना कई दिनों तक गायब रहते थे। बाबा को साधक बनते देख ब्रजवासी कैलासपति तथा बाबा मोक्षदानन्द तारापीठ से काशी चले गये थे। वहाँ से कई स्थानों की यात्रा करते रहे। एक दिन मोक्षदानन्द ने देखा कि ब्रजवासीजी नहीं हैं। उन्होंने सोचा कि शायद वे तारापीठ चले आये हैं। यहाँ आने पर भी वे नहीं मिले। वामा खेपा से पूछने पर उन्होंने जवाब दिया--"मेरे श्री गुरु बाबा शून्य में लीन हो गये हैं।"

न जाने क्या सोचकर मोक्षदानन्द फिर कहीं नहीं गये। स्थायी रूप से यहीं रहकर वे साधना करते रहे। बाद में माँ के आँगन में उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया। मोक्षदानन्द को वामा खेपा वेदज्ञ बाबा कहते थे। वहीं उनकी समाधि बना दी गयी।

× × ×

उस दिन भयंकर आँधी आयी और थोड़ी देर बाद मूसलधार पानी बरसने लगा। हवा के साथ-साथ मेघ गरज रहे थे। बिजली चमक रही थी। नदी में न जाने कितनी झोपड़ियाँ और पशु प्रखर धारा में बहते हुए जा रहे थे। ठीक इसी समय कुछ लोग शव लेकर श्मशान में आये।

किसी ने कहा--"शव यहीं रख दो। इस दुर्योग में आगे नहीं जाया जा सकता।"

महाश्मशान में एक वृक्ष के नीचे बाबा बैठे थे। सहसा 'हरि बोल' कहते हुए खड़े हो गये। शव के साथ आये लोगों में से किसी ने पूछा--"बाबा, कहाँ जा रहे हैं?"

बाबा ने कहा--"रामू भाई, तुम जरा ठहरो। मेरी दुखिया माँ उस पार माँ के आँगन में रहेगी।"

खेपा बाबा को पागलपन करते देख लोगों ने समझ लिया कि आज उनकी जल-समाधि होगी। बाबा अपनी माँ का शव पीठ पर लादकर वेगवती नदी में कूद पड़े। लोगों ने आश्चर्य के साथ देखा कि वे उस पार पहुँच गये हैं। शव वाहकों में से किसी की हिम्मत उस पार जाने की नहीं हुई। लोग चुपचाप वापस चले गये।

माँ की अंतिम-क्रिया करने के बाद बाबाजी जी खोलकर रोने लगे। तारा माँ का भक्त बनने के बाद से वे अपनी सगी माँ को छोटी माँ और तारा देवी को बड़ी माँ कहा करते थे। आज गर्भधारिणी छोटी माँ से हमेशा के लिए बिछुड़ गये जो अभी तक बराबर अपने पुत्र को देखने के लिए श्मशान आती रही।

तेरही के दिन अजीब घटना हुई। एकादशाह तो गाँववालों की सहायता से रामचन्द्र ने सम्पन्न किया, परन्तु तेरही के दिन बिना बुलाये न जाने कहाँ-कहाँ से लोग श्राद्ध भोजन करने के लिए आने लगे। आनेवालों से पूछने पर पता चला कि स्वयं वामा खेपा ने इन लोगों को निमंत्रित किया है। डर के कारण रामू छिप गया। पड़ोस के सुरेन्द्रनाथ ने लोगों से कहा--"रामचन्द्र में इतनी सामर्थ नहीं है कि वह आप लोगों को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खिला सके। वामा को इसीलिए लोग खेपा (पागल) कहते हैं। आप लोग क्षमा करें।"

सुरेन्द्रनाथ की बातों से सभी लोग नाराज हो गये। भोजन का न्यौता देकर दरवाजे पर अपमान किया जा रहा है। धीरे-धीरे हंगामा बढ़ने लगा। एकाएक लोगों ने देखा—पूर्ण दिगम्बर रूप में बाबा आ रहे हैं। तारा माता की कृपा से सारा प्रबंध हो गया है। उनके पीछे काफी लोग भोज्य पदार्थ लेकर आ रहे हैं। यह दृश्य देखकर सभी शांत हो गये। पंक्तिवार बैठ गये। लोगों को भोजन परोसा गया। इसी समय आकाश की रंगत बदल गयी। बादल घिर आये और बिजली चमकने लगी। भोजन करनेवाले घबरा गये।

बाबा ने कहा—"किसी को पत्तल से उठने की जरूरत नहीं। कुछ नहीं होगा। यहाँ तारा माँ स्वयं उपस्थित हैं। मैं रेखा खींच दे रहा हूँ। इसके भीतर तुम लोगों पर एक बूंद पानी नहीं गिरेगा।"

थोड़ी देर बाद मूसलधार वृष्ठि होने लगी। बाबा के आश्वासन के बावजूद लोग घबरा उठे। अधिकतर लोग भोजन नष्ट हो जायगा समझकर हाय-हाय करने लगे। तभी बाबा ने पुन: कहा—"बेकार घबरा रहे हो। आराम से भोजन करो। यहाँ पानी नहीं गिरेगा।"

आखिर तक वही हुआ जो बाबा ने कहा था। सभी को भोजन कराने के बाद बाबा अपने स्थान पर चले गये।

शुक्ला चतुर्दशी के दिन तारा मंदिर के खुले आँगन में संन्यासियों का भंडारा हो रहा था। ठीक इसी समय वामा खेपा श्मशान की ओर से अजस्र गालियाँ बकते हुए आये। आजकल कुछ दिनों से इनका मिजाज काफी उग्र हो गया था। उनकी आकृति और बातचीत देखकर लोग पास नहीं जाते थे। इस वक्त भी बाबा का रंगढंग देखकर किसी को कुछ पूछने का साहस नहीं हुआ। बाबा किसी ओर बिना देखे सीधे मंदिर के भीतर चले गये। कुछ देर तक अस्पष्ट आवाजें आयीं, फिर ऐसा लगा जैसे कोई किसी को बेतहाशा मार रहा है। भक्तों तथा अन्य लोगों को मालूम है कि बाबा तारा माँ से लड़ते हैं, गाली बकते हैं, यहाँ तक कि मूर्ति पर लघुशंका भी कर चुके हैं। लेकिन आज बाबा को उछलते-कूदते और फफककर रोते देखा गया। सहसा उनकी पीठ दिखाई दी जिस पर मार के निशान स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। बाबा चीखते हुए मंदिर से बाहर आये।

तुरत लोग उनकी ओर दौड़े। लोगों ने चकित भाव से देखा—बाबा के सारे शरीर पर मार के दाग हैं। वे बराबर उछल रहे हैं। मंदिर में बाबा के अलावा अन्य कोई नहीं था यानी तारा माँ अपने पुत्र को मार रही थी। बाबा बाहर आकर कहने लगे— "तू माँ नहीं है राक्षसी है। अब तेरे मंदिर में नहीं आऊँगा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसके बाद बाबा महाश्मशान चले गये। आश्चर्य की बात यह रही कि इस घटना के बाद से उनके स्वभाव में व्यापक परिवर्तन हो गया। अब जो कोई उनके पास जाता, उसका स्वागत मधुर भाव से करते और कभी-कभी लोगों को गले से लगा लेते थे।

एक दिन न जाने क्या मूड आया, बाबा ने यह निश्चय किया कि अब वे कठोर-साधना करेंगे। भोजन के नाम पर केवल बेलपत्ती और माँ का चरणामृत पान करेंगे। साधना शुरू हुई। दिन ब दिन शरीर क्षीण होता गया। बातचीत बंद, आँखें ढपी-ढपी। न पानी माँगते और न भोजन। चारों ओर अजीब मनहूस वातावरण हो गया। यहाँ तक कि जानवरों ने हिंसा करना छोड़ दिया। इस प्रकार छह माह व्यतीत हो गये। छह माह बाद आसन से उठे तो सीधे कुण्ड के भीतर डूब गये। असल में इस बीच इतने दर्शनार्थी आये कि झल्लाकर वे डूब गये। इस प्रकार कठोर साधना के माध्यम से वे इस युग के महान् योगी हुए। उनकी साधना तपस्या का फल बाबा के भक्त आज भी उठा रहे हैं। तारापीठ के भक्त समस्त भारत में फैले हुए हैं जो कभी-कभी चमत्कार दिखाते हैं।

× × ×

प्रातःकाल का समय, बाबा ध्यान लगाये बैठे थे। सहसा एक आदमी दौड़ता हुआ आया और बाबा के पैरों के पास धड़ाम से गिर पड़ा। बाबा ने पूछा—"क्या हुआ?"

—मेरी जान बचाइये, बाबा।

बाबा बिगड़ उठे—"अबे साले, तुम लोग जिन्दगी भर पाप करते रहोगे और उसका फल मैं भोगूं? जा, मंदिर में जाकर तारा माँ से कह। मैं ओझा नहीं हूँ जो मंत्र से जहर उतार सकूंगा।"

गिरे हुए युवक की माँ भी साथ आयी थी। बाबा की बातें सुनते ही वह फफककर रो पड़ी। बाबा पुनः नाराज होते हुए बोले—"धत तेरी की। अब तू क्या कुत्तों की तरह रोने लगी? जा, मंदिर के भीतर जाकर रो। भाग यहाँ से।"

इतना बिगड़ने पर भी जब कोई नहीं हटा तब पुनः नाराज होते हुए बोले—"बोल साले, क्या हुआ है?"

बाबा में एक आदत थी। वे हर किसी को 'साले' कहकर संबोधन करते थे। युवक दिगंबर ने कहा—"एक सप्ताह पूर्व मेरे यहाँ एक संन्यासी आया था। उसने कहा कि तुम्हारे जीवन का अंतिम काल आ गया है। ठीक एक सप्ताह बाद तुम्हें साँप काटेगा और अपघात में तुम्हारी मौत होगी। उनकी बातें सुनकर मैं डर गया। संन्यासी से मैंने पूछा कि इससे बचने का कोई उपाय है तब उन्होंने कहा कि मैं तुम्हें मौत से नहीं बचा सकता। अगर तारापीठ के बाबा जो महान् शक्ति-साधक हैं, चाहे तो कृपा करके बचा सकते हैं। इसीलिए आपके पास आया हूँ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबा में औढरदानी शिव की तरह दया थी। माँ के करुण क्रंदन से उनका अन्तर पिघल गया। लाल नेत्रों से उस युवक की ओर देखते हुए बोले—"अबे साले, अभी तक तू यहाँ बैठा है। तेरा काल अपने घर से चल चुका है। बस आ रहा है। जा, जल्दी से स्नान कर आ। अरी बुढ़िया, तू यहाँ क्यों मर रही है। जा, मंदिर में तारा माँ के पास निवेदन कर कि वह बेटे को बचा ले।"

बाबा का आदेश पाते ही दिगम्बर नदी की ओर स्नान करने चला गया और माँ मंदिर में। इन दोनों के जाने के बाद बाबा अपने आप बोल उठे—"मैं अपने को जितना छिपाकर रखना चाहता हूँ, उतना ही तारा माँ मुझे परेशान करती है। परीक्षा लेती हैं।"

थोड़ी देर बाद दिगम्बर भीगे कपड़ों में सामने आकर खड़ा हो गया। बाबा उठते हुए बोले—"चल, जल्दी। मेरे साथ आ।"

सेमल वृक्ष के नीचे पंचमुंडी आसन पर उसे बैठाकर बाबा ने कहा—"यहाँ बैठकर केवल 'जय माँ तारा' जप करते रहना। मैं चारों तरफ रेखा खींच दे रहा हूँ। चाहे कितनी आफत आये, पर इस रेखा के बाहर भूलकर मत आना। कुछ भी देखना-डरना नहीं। डर के वक्त जोर-जोर से तारा माँ को बुलाना। मैं पास ही रहूँगा।"

इतना कहकर बाबा जंगल के भीतर चले गये। धीरे-धीरे शाम होने लगी। चारों ओर शृगाल, कुत्ते, गिद्ध अधजले शवों के पीछे आपस में लड़ते रहे। चमगादड़ों के कारण वातावरण भयंकर हो उठा। भय से सिहरकर दिगम्बर जोर-जोर से 'जय माँ तारा' कहने लगा। ठीक इसी समय फूत्कार सुनकर उसने देखा—एक बड़ा साँप उसकी ओर बढ़ता आ रहा है। वह भागने ही वाला था कि अचानक बाबा की बातें याद आ गयी। अत्यधिक भय के कारण वह बेहोश हो गया। इधर साँप रेखा के चारों ओर भीतर जाने का मार्ग ढूंढ़ता रहा। अंत में निराश होकर चला गया। सुबह होश आने पर उसने देखा कि पुरोहितजी माँ का प्रसाद खाने के लिए कह रहे हैं।

प्रसाद खाने के बाद वह मंदिर में आया तो देखा—बाबा ध्यान लगाकर बैठे हैं। उनका गोरा शरीर नीला हो गया है। साँप के जहर को बाबा ने नीलकंठ की तरह धारण कर लिया है। कुछ देर बाद बाबा कुण्ड में स्नान करने गये। वहाँ से लौटने पर स्वाभाविक स्थिति में आ गये।

वामा खेपा बाबा सिद्ध पुरुष थे। उनके श्रीमुख से जो निकल जाता था, वह अवश्य होता था। यह कार्य स्वयं तारा माँ करवाती थीं। बाबा का जो लोग दर्शन करने या अपने कष्ट के निवारण के लिए आते थे, मनोकामना पूर्ण होने पर भेंट चढ़ाते थे। बाबा की इच्छा थी कि इस धन से माँ के स्थान को भव्य बनायेंगे। प्राप्त रकम एक भक्त रखता था। उसके मन में कुबुद्धि उत्पन्न हुई। उसने उसमें से काफी रकम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हड़प लिया। यह रहस्य छिप नहीं सका। बाबा का एक भक्त वकील थाने में रिपोर्ट करने के बाद उसे न्यायालय तक घसीट ले गये।

न्यायालय के अनेक अधिकारी बाबा पर श्रद्धा करते थे। अपराधी व्यक्ति पर मुकदमा चल रहा था कि एक दिन बाबा स्वयं ही अदालत पहुँच गये। वहाँ जाकर जज साहब से उन्होंने कहा—"भाई, इसे छोड़ दो।"

बाबा का अनुरोध सुनकर उपस्थित लोग आश्चर्य में पड़ गये। बाबा के वकील भी घबरा उठे। जज ने पूछा—"आखिर आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?"

बाबा ने करुण स्वर में कहा—"अगर इसे सजा हो गयी तो कौन मेरे लिए गांजा तैयार करेगा? कौन कारण (शराब) लायेगा?"

जज साहब ने उसे रिहा करते हुए कहा—"अब ऐसे उदार संत के साथ धोखेबाजी की तो सीधे जेल भिजवा दूँगा।"

बाबा जीवन-दान देते हैं। रोगी को अच्छा कर देते हैं आदि बातें सुनकर बंगाल के कोने-कोने से कष्ट पीड़ित लोग आने लगे। कभी-कभी बाबा भीड़ से घबराकर श्मशान में चले जाते थे जहाँ डर के कारण लोग नहीं जाते थे।

एक दिन नगेन्द्र पंडा एक सज्जन को लेकर आये। इसके पूर्व वे अकेले आये थे, पर बाबा का उग्र मिजाज देखकर कुछ कहने का साहस नहीं हुआ। बाबा नगेन्द्र पंडा को 'लगेन काका' कहते थे। आगन्तुक सज्जन के यहाँ एक व्यक्ति बीमार है। अगर बाबा वहाँ जाकर उस बीमार से कह दें कि तेरा रोग दूर हो गया है, तो वह अच्छा हो जायेगा।

नगेन्द्र पंडा ने तिकड़म किया। आगंतुक से एक बोतल शराब और बाबा को ले जाने के लिए पालकी मँगवायी। बाबा सारा रहस्य समझ गये। जब पंडा ने अनुरोध किया तब वे चुपचाप पालकी पर सवार हो गये। मार्ग में नगेन्द्र ने अपने मतलब की बातें की और उन्हें सिखाया—"बाबा, आप रोगी को देखते ही कहियेगा कि अबे साले, तुझे कुछ नहीं हुआ है। चल उठकर बैठ जा। तू ठीक हो गया है। समझे न?"

बाबा ने कहा—"हाँ, समझ गया। इसी प्रकार तुम मुझे सिखाते रहना।"

पालकी आगंतुक के घर पास आकर रुक गयी। तारापीठ के बाबा को देखने के लिए काफी भीड़ जुट गयी थी। बाबा आ गये हैं, सुनकर रोगी प्रसन्न हो गया। रोगी को देखते ही बाबा कह उठे—"लगेन काका, यह साला तो देख रहा है। थोड़ी देर में फट हो जायगा।" कहने के साथ ही उन्होंने दोनों हाथ से ताली बजायी।

बाबा ने ताली बजायी और रोगी की आँखें उलट गयी। बाबा ज्योंही बाहर रखी पालकी पर बैठे त्योंही भीतर से रोने की आवाज गूँजने लगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबा की बातें सुनकर नरेन्द्र पंडा ने दुःखी होकर कहा--"अगर मैं यह जानता कि आप यहाँ आकर यही बात कहेंगे तो मैं आपको यहाँ नहीं लाता।"

बाबा ने कहा--"लगेन काका, इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। तुमने जो सिखाया था, वही कहने जा रहा था तभी तारा माँ मेरी जीभ पर आकर बोली--'खेपा, यह बात मत कह, बल्कि फट कह दे।' मुझे क्या मालूम कि मेरी बात सुनकर लोग रोना-चिल्लाना शुरू करेंगे।"

सन् १९०७ ई० की घटना है। हुगली शहर के दो वकीलों ने विचार किया कि एक बार बाबा का दर्शन कर आयें। इस चर्चा को सुनकर स्थानीय अध्यापक श्री नन्दलाल ने कहा--"वहाँ जाने की मेरी इच्छा भी है, पर पिताजी की हालत ऐसी है कि उन्हें छोड़कर मैं कहीं जा नहीं पाता। पता नहीं, कब क्या हो जाय। कई डाक्टरों को दिखाया। सभी की राय है कि इस उम्र में मूत्रग्रंथि का आपरेशन कराना बेकार है। जब तक चल रहे हैं, चलने दीजिये। आपरेशन से ठीक हो जायेंगे, इसकी गारंटी नहीं दी जा सकती।"

नन्दलाल के दोनों मित्र यात्रा को तिथि निश्चित कर चुके थे। जब यह बात नन्दलाल के पिता तक पहुँची तब उन्होंने कहा--"साधु दर्शन की इच्छा जब मन में उत्पन्न हुई है तब चले जाओ। मैं तो काफी दिनों से भुगत रहा हूँ। मेरी चिंता मत करो।"

बाबा के प्रमुख शिष्य तारानाथ (तारा खेपा) व्यक्तिगत कार्य के सिलसिले में हुगली बराबर जाते हैं। उनकी जबानी वामा खेपा के बारे में कई अलौकिक कहानियाँ सुनने के कारण नन्दलाल स्वयं बाबा का दर्शन करने को उत्सुक थे। पिताजी से आदेश पाते ही वे अपने मित्रों के साथ तारापीठ आये। बाबा उस समय सेमल वृक्ष के नीचे आराम कर रहे थे। रह-रहकर 'जय माँ तारा' कह रहे थे। तीनों मित्र बाबा के पास चुपचाप जाकर बैठ गये। धीरे-धीरे शाम हो गयी। सियार, कुत्तों की आवाजों से वातावरण भयानक हो उठा। रात को एक पुजारी आया और बाबा से कहा कि बाबा, प्रसाद लाया हूँ। ग्रहण कीजिये।

बाबा तुरत उठ बैठे और लगे "जय काली-जय काली" कहने। इस आवाज को सुनते ही कई कुत्ते, शृगाल दौड़े हुए बाबा के पास आये। बाबा उनके साथ एक ही पत्तल में भोजन करने लगे। भोजन के बाद उनके पालतू कुत्ते बाबा के पास रह गये। तीनों मित्र यह दृश्य देखकर रोमांचित हो उठे।

दूसरे दिन तीनों मित्र तारापीठ स्थित जीवित कुंड में जब स्नान कर रहे थे तभी बातचीत के सिलसिले में एक सज्जन ने पूछा--"शायद आप लोग यहाँ प्रथम बार आये हैं। बराबर यहाँ आने पर ही बाबा के बारे में जान सकेंगे। हमारे बाबा महान् योगी हैं। बाबा में सबसे बड़ी खूबी यह है कि किसी बात की चिंता मन में करते हुए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबा का स्मरण करेंगे तो उसका ठीक उत्तर मिल जायगा।"

नन्दलाल के अलावा अन्य किसी ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। स्नान करने के बाद नन्दलाल मन ही मन पिता की अस्वस्थता के बारे में चिन्ता करने लगे। बाबा सेमल वृक्ष के नीचे अर्द्धशायित स्थिति में लेटे हुए थे। सहसा 'तारा' नाम लेकर नन्द-लाल की पीठ पर हल्के ढंग से लात मारते हुए बाबा ने कहा—"अभी १५ वर्ष और।"

नन्दलाल इस बात का अर्थ नहीं समझ सके। थोड़ी देर बाद बाबा ने कहा—"तुम लोगों का मित्र तारा आ रहा है।"

रात १२ बजे तारानाथ कहीं बाहर से सफर करके वापस आये। इन लोगों को बाबा के पास बैठे देखकर तारानाथ ने कहा—"यहाँ आने के पूर्व आप लोगों को मुझे सूचना देनी चाहिए थी।"

इसके बाद क्या-क्या घटनाएँ हुईं, सारी बातें तारानाथ ने पूछा। सारी बातें सुनने के बाद उन्होंने कहा—"आपके पिताजी ठीक हो गये हैं। अभी १५ वर्ष और जीवित रहेंगे। बाबा के कहने का यही मतलब है।"

इस बात को सुनकर नन्दलाल खुशी से भर गये। दो दिन बाद घर आने पर उन्होंने देखा कि पिताजी स्वस्थ होकर बाहर बरामदे में बैठे हैं।

× × ×

दोपहर का समय था। भोजन के पश्चात् बाबा एक पेड़ के नीचे श्मशान का दृश्य देख रहे थे। इसी समय एक साधु आया और उन्हें प्रणाम करने के बाद बैठ गया। बाबा ने उसकी ओर देखते हुए पूछा—"कुछ लाये हो, बाबाजी ?"

संन्यासी ने कहा—"हाँ, बाबा।" कहने के बाद उसने गांजे की पुड़िया निकाली। दोनों आदमियों ने सेवन किया। गांजा पीने के बाद साधु वामा खेपा बाबा के पास ही चिलम की आग उलटकर चला गया। बाबा ने ध्यान नहीं दिया। करवट लेने के कारण आग उनकी जांघ के नीचे आ गयी। मांस जलने की गंध आने लगी, पर बाबा का ध्यान उधर नहीं था।

सहसा एक भक्त ने गौर से देखा और उनका पैर हटाते हुए कहा—"बाबा, आपकी जाँघ जल रही है।"

—अरे! अब क्या होगा ?

—घबराने की बात नहीं है। दवा लगा देता हूँ। ठीक हो जायगा।

बाबा ने कहा—"ठीक है, लगा दो बेटा।"

यह भक्त बाबा के निकट बराबर आता है। अब कुछ ज्ञानी हो गया है। उसे यह समझते देर नहीं लगी कि काम पर विजय प्राप्त कर लेने के कारण ही बाबा को अपनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जांघ जलने की चिन्ता नहीं हुई। कुछ देर चुप रहने के बाद भक्त ने पूछा—"काम कैसे नष्ट किया जा सकता है?"

बाबा ने कहा—"नष्ट कैसे करोगे? उस पर विजय प्राप्त करना चाहिए। काम का दमन करने पर क्रोध प्रकट होता है। ईश्वर काम के अधीन नहीं हैं। जीव काम के वश में रहता है। काम का नाश कभी नहीं होता।"

भक्त—"साधकों का वास्तविक लक्ष्य क्या होना चाहिए?"

बाबा—"सर्वभूतों में भगवान् का दर्शन तथा भगवान् के भीतर सर्वभूतों का दर्शन करना साधक का एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए।"

बाबा शिक्षित नहीं थे। अक्षर-ज्ञान तक उन्हें नहीं था। किन्तु जब कोई जिज्ञासु भगत दर्शन, तंत्र, धर्म के बारे में प्रश्न करता था, उसे इस प्रकार जवाब देते थे कि वह अवाक् रह जाता था। वहीं दूसरी ओर उनका व्यवहार, दैनिक कार्यक्रम देखकर लोगों के मन में विकार उत्पन्न हो जाता था। कुत्ते के मुँह से खाद्य पदार्थ छीनकर खाने में संकोच नहीं होता था। स्वयं खाते समय कुत्ते सियार या गिद्धों के मुँह में रोटी तथा मांस का टुकड़ा खिला देते थे। अधजले शवों और मुर्दों की खोपड़ियों के बीच में भोजन करने में संकोच नहीं होता था। मंदिर में जाकर मल-मूत्र करके गंदगी कर देते थे। उनमें घृणा, हर्ष, विषाद आदि के लक्षण कभी दिखाई नहीं देते थे। दरअसल बाह्य आचार-विचार के प्रति ध्यान नहीं देते थे।

उन्हें शराब पीते देख एक बार एक भक्त के मन में घृणा उत्पन्न हो गयी। बाबा से यह रहस्य छिपा नहीं रहा। उसे अपने पास बुलाकर शराब की कटोरी दिखाते हुए बोले—"अबे साले, देख तो क्या मैं शराब पी रहा हूँ। मैं तो माँ का चरणामृत पी रहा हूँ। इस अमृत को तू शराब समझता है?"

भक्त ने साश्चर्य देखा कि वास्तव में प्याली में चरणामृत है जब कि इसके पूर्व वह उन्हें बोतल से शराब ढालकर पीते देख चुका था। शराब कैसे चरणामृत के रूप में परिणत हो गया, यह कैसा जादू है, वह समझ नहीं पाया।

इसी प्रकार एक बार सैंथिया स्थित अपने एक भक्त के घर गये थे। सैंथिया रामपुर हाट तथा बोलपुर के मध्य स्थित स्टेशन है। वहाँ बातचीत में काफी देर हो गयी। भक्त को यह ज्ञात था कि बाबा आज ही शाम को तारापीठ वापस जायेंगे। बाबा भी इस बात से परिचित थे। लेकिन किसी का ध्यान इधर नहीं था। इधर सैंथिया स्टेशन पर अंतिम गाड़ी आकर खड़ी हो गयी। छूटने का समय हो गया। स्टेशन मास्टर ने घंटी बजाकर गाड़ी को छोड़ने की सूचना दी। सिगनल गिर गया। गार्ड ने ड्राइवर को सीटी बजाकर गाड़ी छोड़ने का निर्देश दिया। इतना होने पर भी गाड़ी आगे नहीं बढ़ी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्टेशन का सारा स्टाफ, ड्राइवर, गार्ड आदि सभी मिलकर प्रत्येक डिब्बे की जाँच करने लगे कि आखिर गाड़ी क्यों नहीं आगे बढ़ रही है।

यात्री लोग परेशान हो उठे। स्टेशन मास्टर ने रामपुरहाट जक्शन को तार भेजा कि एक इंजन तुरत भेजो। दूसरा इंजन आया। लाइन पर बालू छिड़का गया। यहाँ तक कि इंजन का वैकुअम बढ़ाया गया, फिर भी गाड़ी आगे नहीं बढ़ी। सभी लोग परेशान हो गये।

ठीक इसी समय यात्रियों में से कुछ लोगों ने देखा कि वामा खेपा बावा भक्तों के साथ स्टेशन की ओर आ रहे हैं। इन यात्रियों में जो लोग भक्त थे, उन्हें विश्वास हो गया कि बाबा अगर कृपा करेंगे तो गाड़ी अवश्य चलेगी।

बाबा गाड़ी में आकर बैठे। यात्रियों ने कहा––"बावा, गाड़ी चल नहीं रही है। जरा कृपा कीजिये। यहाँ कई घंटे से रुकी है।"

बाबा ने कहा––"अच्छा।" फिर खिड़की को थपथपाते हुए बोले––"चल भाई, काफी देर तक इंतजार किया।" बाबा के कहने की देर थी कि गाड़ी तुरत चल पड़ी।

बाबा के आकर्षण से प्रभावित होकर कलकत्ता के कुछ लोगों ने निश्चय किया कि इस बार दीवाली के अवसर पर तारापीठ जायेंगे। इस अवसर पर यहाँ वृहद् मेला लगता है और दूर-दूर से लोग यहाँ आते हैं। सवेरे के समय लाहिड़ी महाशय से बनर्जी बावू ने कहा––"आप मेरे साथ इस बार तारापीठ चलियेगा। आज शाम को आफिस से लौटने के बाद मैं आपके पास आऊँगा। शाम को ७ बजे वाली गाड़ी से चलेंगे। साढ़े छह बजे आप तैयार रहियेगा। मेला भी देखेंगे और खेपा बाबा का दर्शन करेंगे।"

लाहिड़ी महाशय साथी के अभाव के कारण अब तक जा नहीं पा रहे थे। इस समाचार से उन्हें प्रसन्नता हुई। वे छह बजे पूरी तरह से तैयार होकर बनर्जी बाबू की प्रतीक्षा करने लगे। घड़ी की सूई धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी। एकाएक लाहिड़ी महाशय ने सोचा कि कहीं बनर्जी बाबू स्टेशन पर प्रतीक्षा न करते हों। यह ख्याल आते ही वे स्टेशन की ओर रवाना हो गये। रास्ते में एक जगह उन्हें यह स्मरण हो आया कि वामा खेपा बाबा गाँजा बड़े चाव से पीते हैं। उनके लिए एक पुड़िया ले लूँ। गाँजे की दुकान पर गये तो देखा––दुकानदार दुकान बंद करके भीतर हिसाब मिला रहा है। इनके माँगने पर उसने कहा––"गाँजा पीते हैं और यह भी नहीं जानते कि छह बजे दुकान बंद हो जाती है? जाइये कल आइयेगा। आबकारी के आदमी लगते हैं। इस वक्त हम गाँजा नहीं बेचते।"

लाहिड़ी बाबू ने कहा––"आपका ख्याल गलत है। न तो मैं आबकारी का आदमी हूँ और न गाँजा पीता हूँ। तारापीठ दर्शन करने जा रहा हूँ। वामा खेपा बाबा के लिए ले जाना है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वामा खेपा का नाम सुनते ही दुकानदार के चेहरे की रंगत बदल गयी। बोला—"आप जरा ठहरिये।" फिर अपने कर्मचारी से कहा—"बक्से से बढ़िया गाँजा एक तोला बाबू को दे दे।"

लाहिड़ी महाशय ने पाँच रुपये का नोट बढ़ाया तो दुकानदार ने कहा—"दाम की जरूरत नहीं। अब आप जल्दी चले जाइये, वर्ना गाड़ी नहीं मिलेगी। आपको जो पुण्य मिलेगा, उसमें से कुछ हमें दे दीजिएगा।"

बस से उतरते ही लाहिड़ी महाशय की निगाह एक साइनबोर्ड पर पड़ी। लाहिड़ी महाशय को ज्ञात था कि बाबा शराब पीते हैं। साइनबोर्ड पर 'विलायती शराब' लिखा था। सीधे दुकान के पास आये। दुकानदार ने पूछा—"कौन सा शराब चाहिए ?"

लाहिड़ी बाबू ने कहा—"मैं नाम नहीं जानता, क्योंकि मैं पीता नहीं। वामा खेपा बाबा को देना है।"

दुकानदार ने कहा—"इन्हें एक्सा नम्बर वन दे दो। दूसरा मत देना वर्ना हजारों गाली देंगे।"

शराब लेकर लाहिड़ी बाबू ने साढ़े-पाँच रुपये दिये। दुकानदार ने कहा—"आपसे साढ़े-चार लूँगा।"

हवड़ा पुल पर चढ़ते समय उनकी निगाह घड़ी की ओर उठ गयी तो देखा—आठ बजकर चौबीस मिनट हो गये हैं। अब वे सोचने लगे कि गाड़ी तो चली गयी होगी। जाना बेकार है। ज्योंही यह विचार मन में आया त्योंही उन्हें लगा जैसे कोई कमर और गर्दन पर हाथ लगाकर आगे की ओर ढकेल रहा है। स्टेशन से कुछ दूर थे कि गाड़ी की सीटी सुनाई दी। द्रुतगति से वे आगे बढ़ते गये। प्लेटफार्म पर एक गाड़ी खड़ी थी। बिना टिकट लिए वे उस पर सवार हो गये। उस वक्त आठ बजकर चालीस मिनट हो चुके थे। लाहिड़ी महाशय ने यह भी नहीं पूछा कि यह गाड़ी कहाँ जायेगी और कब छूटेगी।

आश्चर्य की बात यह हुई कि ज्योंही वे सवार हुए गाड़ी चल पड़ी। इन्हें भयाक्रांत भाव से खड़ा देखकर एक यात्री ने कहा—"आप खड़े क्यों हैं। पूरे डिब्बे में इतनी जगह खाली है, बैठ जाइये।"

—यह गाड़ी कहाँ जायेगी ?"

यात्री ने कहा—"वाह जनाब, गाड़ी रवाना होने के बाद आप यह पूछ रहे हैं कि कहाँ जायेगी ? कम से कम किसी भी गाड़ी पर सवार होने के पूर्व यह पता लगाना चाहिये कि कब छूटेगी, कहाँ जा रही है। बहरहाल, आपको जाना कहाँ है ?"

लाहिड़ी ने कहा—"मुझे तारापीठ वामा खेपा बाबा का दर्शन करने जाना है।"

यात्री ने कहा—"घबराइये नहीं। गाड़ी उधर ही जा रही है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

--आज यह गाड़ी इतनी लेट क्यों हो गयी ?

यात्री ने कहा--"शायद इंजन में कोई खराबी आ गयी थी। मुझे लगता है, यह सब बाबा की करतूत है तभी इतनी देर से आने पर आपको गाड़ी मिल गयी।"

इसके बाद लाहिड़ी बाबू ने अपनी सारी राम कहानी सुनायी। कुछ देर बाद वर्धमान स्टेशन पर टिकट चेकर आया और इनके पास बैठकर सभी लोगों के टिकट चेक किया। आश्चर्य की बात यह हुई कि लाहिड़ी महाशय से उसने टिकट दिखाने के लिए नहीं कहा। इस प्रकार बिना टिकट लाहिड़ी महाशय तथा एक अन्य साथी तारा-पीठ पहुँच गये।

अभी बाबा की कुटिया काफी दूर पर थी। अचानक अंधेरे से एक आदमी इन लोगों के सामने आया और पूछा--"क्या आप लोग कलकत्ता से आ रहे हैं ? अगर आपके पास शराब और गाँजा हो तो तुरत मुझे दीजिए।"

आगन्तुक की बात सुनकर लाहिड़ी महाशय सन्नाटे में आ गये। इन लोगों को चुप रहते देख आगंतुक ने पुनः कहा--"मैं बाबा का सेवक हूँ। दया करके आप लोग चुप मत रहिये। शाम से मैं उनकी गालियाँ सुन रहा हूँ। उनका कहना है कि कलकत्ते से एक लड़का साहबों वाला विलायती शराब और गाँजा लेकर आ रहा है। उसके साथ एक लड़का और है। जा, उन्हें अपने साथ लेता आ। अगर आप लोग वही आदमी हैं और आपके पास दोनों चीजें हैं तो झटपट मुझे दीजिये वर्ना फिर गाली सुननी पड़ेगी।"

लाहिड़ी महाशय दोनों सामान सेवक के हवाले कर उनके पीछे-पीछे चलने लगे। बाबा ने बोतल लेकर एक बरतन में शराब उड़ेला। थोड़ा सा पीने के बाद बोले--"इस साले से कब से कह रहा हूँ कि मेरे लिए माल आ रहा है। जा, ले आ। जानता है, कल से इनके पीछे हूँ। पूछ साले, रात सात बजे गाँजा खरीदवाया। रात सात बजे कहीं गाँजा मिलता है ? रात आठ बजे शराब खरीदवाया। कहीं गाड़ी छूट न जाय, इसलिए इंजन खराब कर दिया। यहाँ तक कि बिना टिकट तारा माँ के पास तक ले आया। साले, तुम चुप क्यों हो, कहते क्यों नहीं कि सारी बातें सच है या गलत ? ये लोग मुझे शराबी और पागल समझते हैं।"

नंदा डोम बाबा का परम भक्त है। उसका मुख्य काम था--बाबा के कुत्तों की देखभाल करना। बाबा उसी के हाथ का पानी पीते थे। कुष्ठ के कारण उसके दोनों हाथ खराब हो गये थे। नन्दा नित्य यह देखा करता था कि न जाने कितने रोगी तथा भिन्न-भिन्न कष्ट से पीड़ित लोग बाबा के पास आते हैं और वे रोग मुक्त होकर चले जाते हैं। एक मैं हूँ कि बाबा की कृपा मुझ पर नहीं हो रही है।

बाबा को पीने के लिए नन्दा डोम जब पानी देने जाता तो अन्य भक्त उसे मना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करते तब वह कहता––"मैं क्या करूँ ? बाबा मेरे अलावा और किसी के हाथ का पानी नहीं पीना चाहते।"

इस पर एक बार किसी ने कहा––"बाबा, आप नन्दा के हाथ का पानी क्यों पीते हैं। एक तो वह डोम है, दूसरे कोढ़ी।"

बाबा ने तुरत कहा––"अरे साले, मैं तो उसके हाथ का पानी पीता हूँ और तुम सब उसके पैर का पीते हो।"

बाबा के कहने का आशय लोगों को समझते देर नहीं लगी। पास के कुण्ड में नन्दा नित्य जाकर अपने पैर धोता है। बरसात के दिनों में गाँव के सभी लोग इसी कुण्ड का पानी पीते हैं। उन दिनों नदी का पानी गंदला रहता है। बाबा नन्दा को काफी प्यार करते हैं। अगर वह दो-एक दिन दिखाई नहीं देता तो उसके लिए बेचैन हो जाते हैं, आज तक उस पर बाबा की कृपा क्यों नहीं हुई, यह रहस्य किसी के समझ नहीं आता था। इधर नन्दा भी बाबा से अपने कष्ट के बारे में कुछ नहीं कहता था।

एक बार लगातार छह-सात दिन जब वह दिखाई नहीं दिया तब बाबा ने स्थानीय एक भक्त से पूछा––"क्यों रे, आजकल नन्दा दिखाई नहीं दे रहा है।"

भक्त ने कहा––"आजकल वह अपने रोग के कष्ट से पीड़ित है। आज्ञा हो तो ले आऊँ ?"

बाबा की आज्ञा पाकर लोग नन्दा को ले आये। उसकी शक्ल देखते ही बाबा उखड़ गये––"साला, तू बड़ा पापी है। तेरा हाथ गल-गलकर गिर पड़ेगा।"

बाबा अपने सेवक के प्रति इतने कठोर हो सकते हैं, किसी को स्वप्न में भी विश्वास नहीं था। बाबा के कटु वचन सुनकर नन्दा बुरी तरह रो पड़ा। कुछ देर बाद बाबा का क्रोध शांत हो गया। गौर से नन्दा की ओर देखते हुए बोले––"अब आगे कभी पाप मत करना। जा, श्मशान की मिट्टी से मल-मलकर हाथ धो, ठीक हो जायगा।"

इस आदेश को पाते ही नन्दा श्मशान भूमि की ओर चला गया। लगभग १५-२० दिन में उसका हाथ ठीक हो गया।

× × ×

बाबा श्मशान में बैठे कुत्तों का आपस में लड़ने का खेल देख रहे थे। अचानक एक ओर से एक युवक आकर उनके चरणों में माथा रखते हुए रोने लगा। बाबा ने पूछा–"क्या बात है बेटा ?"

युवक ने कहा––"मैं ज्ञान-भक्ति के लिए लालायित हूँ। कुछ दिन पूर्व मुझे स्वप्न में मंत्र मिला था, पर उसके प्रयोग और फल का ज्ञान नहीं मिला। पुनः मुझे स्वप्न में आदेश मिला कि तारापीठ के बाबा के पास जाओ। वहीं तुम्हारी मनोकामना पूरी होगी। आप मेरे गुरु हैं। मुझे मार्ग दिखाइये।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबा ने कहा--"तू सामान्य नहीं, असाधारण साधक है। तुझे स्वप्न में बीज मंत्र मिल गया। यह तो माँ की असीम कृपा है।"

युवक ने कहा--"मंत्र या देवता के प्रति मेरी आस्था उत्पन्न नहीं होती। मैं अलौकिक शक्ति प्राप्त करूँ, यह लालसा भी नहीं है। मैं इस सृष्टि के रहस्य को जानना चाहता हूँ।"

बाबा ने कहा--"तुम्हारी सारी बातें असंगत है, बेटा। दरअसल तुम अपनी इच्छा ठीक से व्यक्त नहीं कर पा रहे हो। तर्क-वितर्क से कोई लाभ नहीं होता। सृष्टि के रहस्य को समझना सामान्य बात नहीं है। इसके लिए साधना करनी पड़ती है। साधना से मन में निग्रह होता हैं। इसके माध्यम से बुरा व्यक्ति भी अच्छा बन सकता है तभी साधक अपने में निमग्नता और शांति अनुभव करता हैं। साधक को जब समाधि प्राप्त होने लगती है तभी अभय पद प्राप्त होता है। आज हमें ऐसे साधकों की आवश्यकता है जो जन सेवा को विशिष्ट सेवा समझें। तुम धैर्य रखो, तुममें उत्कट जिज्ञासा है। समय आने पर सब दिखा दूँगा।"

युवक ने कहा--"क्या आद्या शक्ति का दर्शन हो सकता है?"

बाबा ने कहा--"क्यों नहीं। गुरु मंत्र में प्राण प्रतिष्ठा करो। जब मंत्र अन्तर की अनन्त गहराइयों में प्रवेश करेगा तब तुम्हें सम्यक् ज्ञान प्राप्त होने लगेगा। उस समय तुम्हें अलौकिक अनुभूतियाँ प्राप्त होंगी।"

युवक बाबा के चरणों में अपना मस्तक रखते हुए कहा--"मैं निर्बुद्धि हूँ। भक्ति का ज्ञान मेरे पास नहीं है और न मैं प्राण-प्रतिष्ठा कर सकता हूँ।"

बाबा हँस पड़े। बोले--"जब मेरे निकट आये हो तब चिंता किस बात की। तुम्हारे भीतर वह सब कुछ है जिसकी जरूरत साधकों को होती है। तुम्हें केवल मार्ग-दर्शन की आवश्यकता है। मैं स्वयं तुम्हारी सहायता करूँगा।"

युवक चुप हो गया, शुभ दिन, शुभ लग्न देखकर बाबा ने वीराचारी पद्धति से उसका अभिषेक किया। बाद में उसे जप करने को कहा। २१ दिन के बाद उसे चिता पर वीरासन में बैठकर उसके सामने एक दीपक रख दिया गया। इतना करने के बाद बाबा मंदिर के भीतर चले गये।

कृष्ण चतुर्दशी की काली रात, महाश्मशान भूमि, कुत्ते-शृगालों के झगड़े, गिद्धों का लड़ना, वृक्षों पर चमगादड़, कौवे और उल्लूओं का फड़फड़ाना जारी रहा। सड़े, जल रहे नर मांस के गंध से सारा वातावरण नरक सा प्रतीत हो रहा था। जब तेज हवा चलती तब जमीन पर पड़े नर-मुंड आपस में टकरा जाते थे। इस वातावरण से घबराकर साधक 'जय तारा माँ' नारा बुलंद करने लगा। रात के तीसरे पहर उसे बाबा का मृदु स्वर सुनाई देने लगा। धीरे-धीरे साधक अपनी सत्ता में खो गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहसा एक अद्‌भुत प्रकाश हुआ। उस प्रकाश में उसने देखा—उसके सामने अभय मुद्रा की स्थिति में जगन्माता खड़ी हैं। चेहरे पर मनोमुग्धकारी मुस्कान थिरक रही हैं। ज्योंही साधक का सिर प्रणाम के लिए झुका त्योंही उसे लगा कि तीव्र गति से कुछ उसके मस्तिष्क से हृदय देश में प्रवेश कर गया।

× × ×

शारदा महाष्टमी के दिन काफी धूमधाम से तारा देवी की पूजा होती है। इस बार पूजा के बाद भूपति पंडा मंदिर से भोग लेकर बाबा के पास इस आशय से आये ताकि वे शांति पूर्वक खा लें। बाबा के जितने कुत्ते हैं, वे सब बहुत तंग करते हैं, बाबा को ठीक से खाने नहीं देते। इधर बाबा में एक बुरी आदत है जब तक कुत्ते एक साथ उनकी पत्तल में नहीं खाते तब तक उन्हें भोजन में आनन्द नहीं मिलता।

बाबा को भोजन परोसकर भूपति एक डंडा लेकर बैठ गया। भूपति को डंडा लेकर बैठते देख सभी कुत्ते ललचायी नजर से भोग की ओर देखते रहे। यह दृश्य बाबा के लिए असहनीय हो गया। समझ नहीं पा रहे थे कि कैसे इसका निराकरण किया जाय। न जाने क्या मन में आया, लगे वे भूपति की प्रशंसा करने। बहुत कम लोग होंगे जो अपनी प्रशंसा सुनकर संकोचवश झुक न जाते हों। इधर भूपति जरा सा गाफिल हुआ और तुरत बाबा ने मौका देखकर कुत्ते के मुंह में मांस का टुकड़ा डाल दिया। कालू को मुँह चलाते देख भूपति ने डंडा चला दिया। मांस का टुकड़ा छोड़कर वह काँय-काँय करता हुआ दूर चला गया।

यह देखकर बाबा ने कहा—"वंध्या को प्रसव-पीड़ा का अनुभव नहीं होता।"

भूपति अपुत्रक था। बाबा को क्रोधित होते देख वह चुप हो गया। नगेन्द्र पंडा को जब यह ज्ञात हुआ कि बाबा ने प्रसाद ग्रहण नहीं किया है तब वे तुरत मंदिर से प्रसाद लेकर बाबा के पास आये। इस बार बाबा ने आवाज दी और सभी कुत्ते-श्रृगाल दौड़े हुए आये। इन जानवरों के साथ बाबा बड़े चाव से भोजन करने लगे।

भोजन के बाद बाबा अपने आसन पर जाकर बैठ गये। कुछ देर बाद एक मरणासन्न व्यक्ति को लेकर न जाने किस गाँव से कतिपय लोग आये। उनमें से एक ने कहा—"बाबा, इस पर आपकी कृपा दृष्टि हो जाय। काफी इलाज हम करवा चुके, पर कोई लाभ नहीं हुआ। अपने माँ-बाप का एकलौता पुत्र है। इसे बचा लीजिये।"

बाबा ने कहा—"अबे साले, मैं क्या कोई डाक्टर या कविराज हूँ जो बीमार को ठीक कर दूँगा। भाग जा।"

सभी लोग बाबा की आदतों से परिचित थे, इसलिए एक साथ उनके निकट बराबर निवेदन करते रहे। एकाएक बाबा क्रोधित मुद्रा में उठे और रोगी का गला दबाते हुए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोले—"साले, जिन्दगी भर पाप करेगा और आखिरी वक्त मेरे पास आयेगा ? अब मर साले।"

सहसा बाबा का यह रूप देखकर आने वाले सभी लोग घबरा उठे। कहाँ आये थे हरि भजन को और कहाँ ओटन लगे कपास वाली हालत हो गयी। एकाएक बाबा ने उसके गले को छोड़ दिया और कहा—"जा साले, तेरी किस्मत अच्छी रही। तू बच गया।" इसके बाद उसे एक लात मारते हुए बोले—"चल उठ।"

तुरत रोगी उठकर खड़ा हो गया। उसे देखने पर ऐसा लगता था जैसे वह कभी बीमार नहीं था। इस चमत्कार को देखकर लोग दाँतों तले अंगुली दबाने लगे।

इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि बाबा युग पुरुष थे और इस तरह की अनेक चमत्कारी घटनाएँ अपने जीवन में कर चुके हैं। अगर ऐसी घटनाओं का संकलन किया जाय तो एक वृहद् पुस्तक तैयार हो सकती है। तारापीठ के भक्त न केवल बंगाल में बल्कि संपूर्ण भारत में फैले हुए हैं। स्वयं मैंने दो ऐसे भक्तों को देखा जो व्यक्ति की आकृति देखते ही उसके जीवन के बारे में अद्‌भुत बातें बता देते हैं। मन में उत्पन्न होनेवाली शंकाओं को बता देते हैं। वस्तुतः ऐसे साधक जल्द अपने को प्रकट नहीं करते, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को अपने भविष्य की जानकारी के लिए मन में उत्सुकता बनी रहती है।

प्रत्येक महापुरुष ठीक समय पर यह जान जाते हैं कि उनके महाप्रयाण की वेला आ गयी है। अब इस नश्वर शरीर को त्याग देना पड़ेगा। बरसात का मौसम था। चारों ओर मूसलधार वृष्टि हो रही थी। बाबा अपनी कुटिया में आँखें बन्द किये बैठे थे। उनके पास कई भक्त थे। सहसा उनकी समाधि भंग हुई।

भक्तों की ओर देखते हुए उन्होंने कहा—"नीम के पेड़ के नीचे जहाँ बाबा मोक्षदानंद की समाधि है, वहीं उत्तर मुंह करके मुझे समाधि देना।"

बाबा की बातें सुनकर उपस्थित सभी भक्त चौंक उठे। अपनी समाधि की चर्चा पिछले बीस वर्षों से उन्होंने कभी नहीं की। क्या बाबा हमसे बिछुड़ने जा रहे हैं। इस आशंका से सभी भक्त आसपास उनकी सेवा में लगे रहे। शाम होते-होते उनकी साँसें मंद पड़ने लगीं। रह-रहकर केवल 'जय तारा-तारा माँ' उच्चारण करने के अलावा किसी प्रश्न का जवाब नहीं देते थे। यह देखकर लोग कविराजजी को बुलाने के लिए दौड़ पड़े।

कविराजजी बाबा के अन्यतम भक्त थे। संवाद पाते ही आये। नाड़ी देखने के बाद वे फफककर रो पड़े। बाबा परमब्रह्म में लीन हो चुके थे। उनकी इच्छा के अनुसार नीम के पेड़ के नीचे उन्हें समाधि दे दी गयी।

जय तारा, जय माँ तारा !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५

परमहंस परमानन्दजी

प्राचीनकाल से ही चित्रकूट की भूमि ऋषि-मुनियों की तपस्थली रही है। भरद्वाज, दत्तात्रेय, अत्रि, वाल्मीकि आदि अनेक ऋषियों के आश्रम यहाँ थे। श्रीराम के आगमन के कारण यहाँ की भूमि और पवित्र हो गयी। श्रीराम के निवासकाल की गंध आज भी यहाँ के कण-कण में व्याप्त हैं। यहाँ आते ही एक अनजानी शांति प्राप्त होती है। अब्दुल रहीम खानखाना ने भी इसे स्वीकार किया है।

कामदगिरि पर्वत के चारों ओर स्थित मंदिरों तथा सायंकाल मंदाकिनी के तट पर रामायण के पद भक्त जन गाते रहते हैं। चित्रकूट का कस्बा केवल उत्तर प्रदेश में है, शेष दर्शनीय स्थल मध्य प्रदेश के क्षेत्र में है। इन दोनों प्रांतों को 'धनुआ' नाला तथा 'मंदाकिनी' अलग करती हैं।

चित्रकूट से आगे जानकी कुण्ड, इससे आगे स्फटिक शिला, उस पार हनुमान धारा, पीछे लक्ष्मण टीला, पार करने के बाद बायीं ओर एक सड़क गयी है जो अनसूया आश्रम जाकर समाप्त हो जाती हैं। अनसूया आश्रम का जीर्णोद्धार और पर्यटन क्षेत्र बनाने का एक मात्र श्रेय परमानन्द महाराज को है। दोनों ओर घना जंगल है जहाँ आज भी अनेक हिंसक वन-पशु तथा डाकू रहते हैं। आजादी के बाद भी यात्रियों के दल लूटे जाते हैं।

अनसूया आश्रम घोर जंगल में, मंदाकिनी के तट पर स्थित है। एक ऊँचे पर्वत के ऊपर महामुनि अत्रि अपनी पत्नी अनसूया के साथ रहते थे। श्रीराम के वनवास काल में यहीं सीताजी को अनसूया देवी उपदेश देती रहीं। इस पहाड़ के नीचे टूटा-फूटा एक प्राचीन भवन है। इस भवन में कभी सिद्ध बाबा रहते थे। बाद में यहाँ परमानन्दजी आये। आजकल परमानन्दजी के शिष्य स्वामी भगवानानन्द पीठस्थवीर हैं। पहाड़ की तलहटी में परमहंस आश्रम है। आश्रम के पार्श्व में अनसूया देवी का नवीन प्राचीन आश्रम एवं मंदिर है। आश्रम के नीचे काफी दूर तक अनेक सोते हैं। आश्रमवासियों का कहना है कि मंदाकिनी का उद्गम स्थल यही है। लेकिन प्रत्यक्ष देखने पर ऐसा नहीं लगता। बहुत दूर से चौड़े नाले के रूप में मंदाकिनी नदी आती दिखाई देती है। यहाँ के सोतों का जल लेकर वह पुष्ट हो जाती है। जिस पर्वत पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

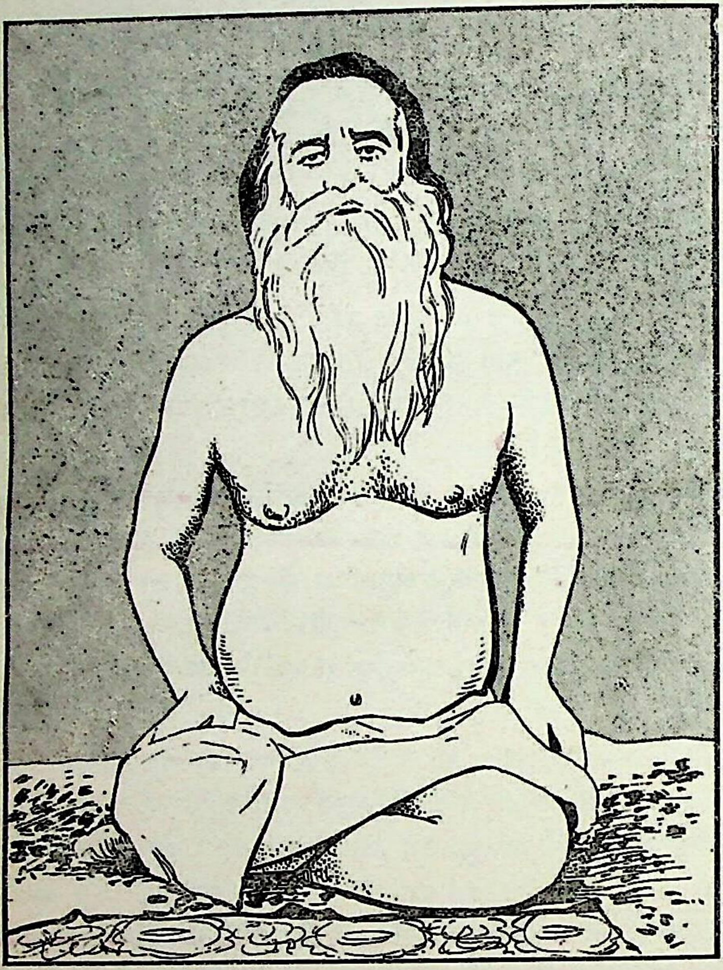

परमहंस परमानन्दजी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अत्रि मुनि रहते थे, वहाँ एक होमकुंड है। इस स्थान पर परमहंस आश्रम की ओर से एक ब्रह्मचारी चौबीसों घंटे रहता है। प्रातःकाल प्रातःक्रिया एवं भोजन के लिए एक बार नीचे आता है।

× × ×

बीसवीं शताब्दी के मध्य इस पवित्र भूमि पर अवधूत परमानन्द आये। आसपास न गाँव, न मानव जाति की गंध। सिद्धों की भूमि हमेशा जाग्रत रहती है और उसका प्रभाव दर्शनार्थियों पर पड़ता है। परमानन्दजी के इष्टदेव ने इन्हें सुदूर काश्मीर से यहाँ आने का निर्देश दिया था। उन दिनों यहाँ सिद्ध बाबा की खंडहर वाली कुटिया थी। इस कुटिया के एक तख्त पर आप बैठ गये। थोड़ी देर बाद आपको आदेश मिला--'यहाँ मत बैठो। नीचे जाओ।'

इस आदेश को पाते ही आप काफी नीचे चले आये। पुनः आदेश मिला--"अब यहीं बैठ कर साधना करो। यही आसन तुम्हारी सिद्धपीठ है।" इष्ट की यह आज्ञा पाकर आप वहाँ बैठ गये। आगे चलकर वह स्थान आपका मुख्य स्थान बना।

परमानन्दजी किसी विशेष संप्रदाय के अनुगत नहीं थे। एक प्रकार से वे अवधूत थे। आपका जन्म पूर्वी उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के रामकोला गाँव में सन् १९१२ ई० में हुआ था। एक दिन मां को अपने बच्चे के भविष्य की जानकारी का शौक लगा। पंडित ने बालक का हाथ देखकर कहा--"यह बालक आगे चलकर राजा होगा अथवा योगी। बड़ा भाग्यवान है।"

पंडितजी की भविष्यवाणी सुनकर माँ घबरा उठी। राजा होने की कल्पना वह कर नहीं सकती थी। योगी होने की संभावना अधिक थी। इस अनिष्ट कल्पना के कारण वह शंकित रहने लगी।

जब आपकी उम्र पाँच वर्ष हुई तब आपको पाठशाला भेजा गया। वहाँ पढ़ने-लिखने की अपेक्षा मारपीट, हुड़दंग करते रहे। तंग आकर एक दिन मास्टर ने आपकी मरम्मत कर दी। दूसरे दिन से आपने स्कूल जाना बद कर दिया। शिक्षा का आदि और अंत यहीं हो गया। स्कूल से मुक्ति पाने के बाद आपने पहलवानी की ओर विशेष ध्यान दिया। गाँव में हम उम्र के अधिकांश लोग पहलवानी करते थे। गाँव की परंपरा का पालन आप भी करने लगे। कुछ ही दिनों में आपकी गणना प्रसिद्ध पहलवानों में होने लगी। लोग आपकी ओर हसरत भरी निगाहों से देखा करते थे।

एक दिन आप अपनी मस्ती में झूमते हुए चले जा रहे थे। ठीक इसी समय एक तेज आवाज आयी--'इस साधु को भोजन कराओ।' इस आवाज को सुनकर आप चौंक उठे। देखा--एक महात्मा 'सीताराम-सीताराम' कहता हुआ आगे न जाने कहाँ गायब हो गया। आपने चारों ओर चकित दृष्टि से देखा कि किसने किसको यह आदेश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिया ? आपने आश्चर्य के साथ देखा —सभी अपने-अपने कार्य से गंतव्य स्थल की ओर चले जा रहे हैं। किसी ने इस आवाज की ओर ध्यान नहीं दिया। राह चलते दो-चार व्यक्तियों से पूछने पर जवाब मिला––"मुझे कोई आवाज नहीं सुनाई दी।" जबकि वह आवाज इतनी तेज थी कि दूर तक सुनाई दी होगी। इसी चिंता में आप आगे बढ़ गये। इधर आपके मस्तिष्क में यह आदेश बराबर गूंजता रहा। अंत में आपने निश्चय किया कि उस महात्मा को खोजकर मैं भोजन कराऊँगा। काफी देर खोजने के बाद महात्माजी से मुलाकात हुई। आपने उनसे पूछा––"बाबा, आप 'सीताराम-सीताराम' करते रहेंगे या भोजनादि करेंगे ?"

संत ने कहा––"चलो भोजन कराओ।"

उस समय आपके पास केवल तीन पैसे थे। उन पैसों से आवश्यक सामान खरीदकर आप बाबा को लेकर घर आये। भोजन करने के बाद संत ने आपसे पूछा––"मुझे तुमने भोजन क्यों कराया ? क्या चाहते हो ?"

परमानन्दजी को विश्वास था कि अगर संत आशीर्वाद दे तो वह फलीभूत होगा। आप पर पहलवानी का नशा था। आपने कहा––"मैं चाहता हूँ कि मुझे कुश्ती में कोई पराजित न कर सके।"

इस प्रार्थना को सुनकर बाबा एवमस्तु कहकर चल दिये। आपको विश्वास हो गया कि अब आपको कोई अखाड़े में पटक नहीं सकता। महात्माजी के जाने के तीसरे दिन बाद दंगल का आयोजन हुआ। बड़े दृढ़ विश्वास के साथ आप अखाड़े में उतरे, पर फल उल्टा हुआ। अत्यन्त दुखी मन से आप घर वापस आ गये। लज्जावश कई दिनों तक आप घर से बाहर नहीं निकले। बाद में आपका अन्तर्मन कहने लगा—"अगर इस दंगल में विजयी हो जाता तो संत के आशीर्वाद का गर्व स्थायी रूप धारण कर लेता जो उचित नहीं था।"

× × ×

आपके गाँव के पड़ोस में एक अन्य गाँव है। वहाँ एक नयी बहू ब्याहकर आयी थी। इस युवती के पीछे कुछ मनचले युवक पड़े थे। पता नहीं, किस भावना से उस युवती ने एक बुढ़िया के जरिये आपको अपने यहाँ आने का निमंत्रण दिया। एक दिन शाम के समय आप खूब बन ठन कर उस युवती के घर की ओर चल पड़े। कुछ दूर जाने के बाद आपके मन में विवेक उत्पन्न हुआ। कहीं मैं यह गलत काम तो नहीं करने जा रहा हूँ ? तुरत उसी अदृश्य आवाज ने कहा––"यह घोर पाप है। नरक यातना भोगोगे।"

इस चेतावनी को सुनते ही आप तुरत उल्टे पाँव लौट पड़े। पुनः आवाज आयी–– "कुछ दूर आगे देवालय है जहाँ तुम्हारे गुरुदेव तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महापुरुषों और योगियों को अधिकतर आकाशवाणी के माध्यम से ऐसे आदेश दिये जाते हैं जिसे केवल वही सुन पाते हैं। कुछ दूर आगे बढ़ने पर एक प्राचीन मंदिर दिखाई दिया।

मंदिर के भीतर घना अंधेरा था। कुछ देर अंधेरे में खड़े रहने के बाद आपको कुछ दिखाई देने लगा। सहसा एक ओर से किसी के खाँसने की आवाज आयी। पास जाकर प्रणाम करने के बाद आप गुरुदेव के पैर दबाने लगे। तीन दिनों तक आप गुरुदेव की सेवा में लगे रहे। इसी बीच आपके गुरु सत्संगी महाराज आपको साधन-भजन आदि के अलावा श्वास-क्रिया के योग सिखाते रहे। सारी कार्यवाही करने के बाद गुरुदेव अंतर्धान हो गये।

गुरुदेव के निर्देशानुसार आप साधना में जुट गये। चार माह बाद गुरुदेव अचानक एक दिन आ गये। उस दिन भजन करने में आपको प्रसन्नता हुई। आपने गुरुदेव से कहा—"पता नहीं क्यों आज भजन करने में मेरा मन खूब लगा। इसके पूर्व कभी नहीं लगता था।"

गुरुदेव ने कहा—"बात यह है कि मैं अपने शिष्यों के मन को पकड़कर ध्यानस्थ हो जाता हूँ ताकि उनके मन में अस्थिरता उत्पन्न न हो।"

यह बात सुनकर परमानन्दजी ने सोचा—शायद इसीलिए मेरे गुरु भाइयों का विकास नहीं हुआ। आपने गुरुदेव से प्रार्थना की कि भविष्य में मेरा मन न पकड़ा जाय, बल्कि मुझमें ऐसी क्षमता उत्पन्न कर दी जाय ताकि स्वतंत्र रूप से साधन-भजन कर सकूं।"

गुरुदेव ने कहा—"तथास्तु। भविष्य में ऐसा ही होगा।"

परमानन्दजी को बैरागी बनते देख घर वाले नाराज हो गये। पहले तो लोगों ने काफी समझाया, बाद में निश्चय किया कि असली जड़ इनका गुरु है, उसे मारकर भगा दिया जाय। ~~मानव में सबसे बड़ी कमजोरी यह होती है कि लोग अपने लोगों में दोष नहीं देखते, दूसरों को दोषी समझते हैं~~। परमानन्दजी के परिवार के लोगों का निश्चय काफी महंगा पड़ा। परिवार में मौत का सिलसिला चालू हो गया। एक के बाद एक करके घर के लोग मरने लगे। एक बार स्थिति इतनी चिंतनीय हो गयी कि शोकातुर प्राणियों ने एक शव को इनके सामने रखते हुए कहा—"जब से तुम बैरागी बने हो तब से घर की दुर्दशा हो रही है। जब सभी समाप्त हो जायेंगे तब अकेले भजन करना।"

इस दर्दनाक घटना के कारण आपका मन विचलित हो उठा। इस हृदय विदारक दृश्य को देखकर आपने निश्चय कि इस मार्ग को छोड़ देना श्रेयष्कर है। ठीक इसी समय आपके गुरुदेव ने आपको सम्हाल लिया।

उन्होंने कहा—"संकट की इस घड़ी में विचलित मत हो। यह सब परीक्षा की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घड़ियाँ हैं। इस संसार में जो आया है, एक दिन उसे जाना है। तुम अपनी साधना में लगे रहो।"

आप रामकोला में जिस जगह पर बैठकर साधना करते थे, उस स्थान की बगल में आम का एक बाग था। उस बाग से नित्य कोई आम चोरी कर लेता था। बाग के मालिक को यह संदेह हुआ कि ये तथा इनके साथी बाग से आम चोरी करते हैं। इस धारणा के कारण वह नित्य चुन-चुनकर गालियाँ देता था। उसके इस व्यवहार से आपको क्षोभ हुआ कि मैं आम छूता तक नहीं और मुफ्त में गालियाँ मिलती हैं। आपके पास गाँव के जो लोग सत्संग के लिए आते थे जब उन्हें सारी बातें मालूम हुई तब उन लोगों ने कहा--"आज हम लोग यहीं सोयेंगे। आप भोर के वक्त हमें जगा दीजियेगा। हम पूरे बाग से आम गायब कर देंगें, फिर देखें वह क्या करता है।"

इस निश्चय के बाद सभी लोग उस दिन अपने-अपने घर न जाकर वहीं सो गये। सोते समय लोगों ने परमानन्दजी से कहा--"सुबह हमें जरूर जगा दीजियेगा।"

अर्द्धरात्रि के समय परमानन्दजी को हवा में तैरती हुई एक आवाज सुनाई देने लगी। लगा जैसे कोई गा रहा है--

जननी सम जानहिं पर नारी।
धन पराव विष ते विष नारी॥

इस पद को सुनना था कि आपका मन चंचल हो उठा। उस रात को आपने दुःस्वप्न भी देखा। स्वप्न में आपको आदेश मिला--"यह कार्य गलत है।"

योजनानुसार आपने सुबह किसी को नहीं जगाया।

× × ×

बरसात के बाद परमानन्दजी ने देखा कि वे जिस स्थान पर भजन कर रहे हैं, बड़ा मनोरम हो गया है। अब बराबर यहीं साधन-भजन करते रहेंगे। स्वच्छ हवा, शांत परिवेश, पुरजनों की संगत आदि ने आपको प्रभावित किया। इधर ज्योंही इस स्थान के सम्बन्ध में आपके मन में आसक्ति उत्पन्न हुई त्योंही आपको आदेश मिला कि अब प्रयाग चले जाओ।

इष्ट की अवहेलना करने की क्षमता आप में नहीं थी। आप प्रयाग चले आये। बार-बार इष्ट द्वारा व्याघात उत्पन्न होने के कारण आपने निश्चय किया कि आगे से प्रत्येक कार्य के लिए इष्ट से आज्ञा लेकर उसे पूरा करूँगा। प्रयाग संगम पर आकर आपने इष्ट से पूछा--"अब आगे मुझे क्या करना होगा?"

आदेश मिला--"वस्त्रों को यहीं नदी किनारे उतारकर रख दो।"

वस्त्रों को नदी किनारे उतारकर आप दिगंबर हो गये। इस रूप में काफी दिनों तक नदी किनारे टहलते रहे। जब आप सिद्ध हो गये तब कोई शिष्य या भक्त जब यह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रश्न करता कि आप तो अच्छे खाते-पीते घराने के थे, एकाएक साधु कैसे बन गये तब आप कहते थे—"साधु बना नहीं जाता। भगवान् स्वतः बना देते हैं।"

इसके पूर्व आप कई बार प्रयाग आ चुके थे। पहली बार की घटना है। संगम पर स्नान करते समय कुछ संन्यासियों से आपका विवाद हो गया। अपने अनजाने एक संन्यासी के फूटे लोटे में पानी भरकर ऊपर उठाया तो उसमें से पानी का एक बूंद भी नहीं गिरा। इस दृश्य को देखकर उपस्थित सभी साधु चकित रह गये। इधर आपकी स्थिति विचित्र हो गयी। उत्तेजना वश आपसे यह चमत्कार हो गया था जबकि आपकी इच्छा ऐसा करने की नहीं थी। इस भूल के लिए आपने अपने इष्ट से क्षमा माँगी।

दूसरी बार आप कुंभ के अवसर पर आये थे। संगम के दोनों ओर साधुओं के तंबू लगे थे। आप अकेले विचरण करते हुए जिस तंबू में जाते, वहाँ से भगा दिये जाते थे। इस कुंभ में एक सेठ ने भंडारे का आयोजन किया। आप भी यहाँ निमंत्रित थे। पत्तल बिछ जाने पर जब आपकी वेष-भूषा और आकृति पर संन्यासियों की दृष्टि गयी तब उन लोगों ने सेठ से कहा—"हम महात्माओं के साथ इस 'खड़िया' को क्यों बैठाया है? इसकी शक्ल देखो, लगता है जैसे महीनों से स्नान नहीं किया है। कितना गन्दा है।"

सेठ ने विनय पूर्वक कहा—"मेरी दृष्टि में सभी महात्मा हैं। अपने यहाँ आमंत्रित किसी भी संन्यासी का अपमान नहीं करना चाहता।"

परमानन्दजी पिछले चार दिनों से भूखे थे। ज्योंही वे भोजन करने लगे त्योंही पानी बरसने लगा। सहसा आपके मुँह से निकला—"इसी समय पानी बरसना था?"

इतना कहते ही वर्षा रुक गयी। आपके इस चमत्कार से लोग प्रभावित हुए। परमानन्दजी से यह रहस्य छिपा नहीं रहा। भोजन के पश्चात् लोग हाथ धोने के लिए विशेष स्थान पर गये, पर आप सीधे गंगा नदी की ओर बढ़ गये। कुछ लोग इनके पीछे-पीछे गये। जब तक पीछे आनेवाले लोग नदी किनारे आयें, उसके पूर्व आप उस पार पहुँच गये। वहाँ बाँस से घिरे एक प्रकोष्ट में प्रवेश कर गये। आपकी तलाश में कुछ लोग नाव से उस पार गये, पर आपको खोज नहीं सके।

कभी-कभी इस घटना की चर्चा करते हुए आप अपने शिष्यों से कहते थे—"भगवान् ही सब पूर्ण करते हैं। ऋद्धि-सिद्धि से कुछ नहीं होता। ईश्वर के प्रति मन में विश्वास, स्थिरता और आस्था रहनी चाहिए। परम प्रभु की कृपा से ही अलौकिक घटनाएँ होती हैं।"

तीसरी बार पुनः कुंभ में आये तो यायावर की तरह चारों ओर घूमते रहे। सहसा आपको पता चला कि एक देसी राज्य की रानी संन्यासियों को भंडारे में भोजन करा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रही हैं। आप वहाँ पहुँच गये। दरवाजे पर खड़े सिपाही ने आपको धक्का देकर बाहर कर दिया।

उसने कहा—"यह भंडारा महात्माओं के लिए है। तुम जैसे पागलों के लिए नहीं। भाग जाओ।"

इस अपमान के कारण आपके मन में क्लेश उत्पन्न हो गया। क्या अभी तक मैं महात्मा नहीं बना? यह प्रश्न मन में उत्पन्न होते ही आपने निश्चय किया कि अब मैं भोजन के लिए कहीं नहीं जाऊँगा। भगवान् को खिलाने की इच्छा होगी तो स्वयं प्रबंध करेंगे। इस प्रकार की कल्पना करते हुए आप एक जगह बैठ गये।

कुछ देर बाद एक व्यक्ति ने आकर कहा—"महाराज, कृपा करके आप मेरे घर चलिये और भोजन कीजिए।"

परमानन्दजी ने कहा—"सेठ, मैं किसी के घर भोजन के लिए नहीं जाता। तुम्हें भोजन कराना है तो यहीं कराओ।"

इस बात को सुनकर वह व्यक्ति आपके लिए भोजन ले आया। भोजन करने के बाद आप वहाँ से चल पड़े। घूमते हुए आप वहाँ आये जहाँ अपमानित हुए थे। वहाँ भीड़ लगी हुई थी। जिस सिपाही ने आपको धक्का देकर भगाया था, इस वक्त वह पेट के दर्द से छटपटा रहा था। संभवत: उसने भीड़ से कहा था कि आज एक संत को मैंने धक्का देकर अपमानित किया था, उन्हीं के कारण यह कष्ट है। लोग आपकी तलाश में थे। दर्शकों ने आपसे प्रार्थना की। संत स्वभाव के कारण आप उस सिपाही के निकट बैठकर पेट पर हाथ फेरने लगे। दर्द तुरत गायब हो गया।

अपनी आँखों से आपका चमत्कार देखकर श्रद्धालु लोगों की भीड़ बढ़ने लगी। आप वहाँ से तुरत गायब हो गये।

× × ×

इष्ट के आज्ञानुसार आप जौनपुर, काशी आदि स्थानों का भ्रमण करते हुए देहरादून आये। यहाँ एक वृक्ष के नीचे साधना करने का आदेश मिला। साथ ही यह चेतावनी दी गयी कि एक व्यक्ति दूध लेकर आयेगा, उसे मत पीना। यहीं तुम्हारा कल्याण-मार्ग प्रशस्त होगा।

दूसरे दिन एक व्यक्ति दूध लेकर हाजिर हुआ। आप बराबर पीने से इन्कार करते रहे। बाद में निरन्तर आग्रह होते देख आपने उसका दूध पी लिया। तुरत इष्ट ने आदेश दिया—"अब यह स्थान छोड़ दो।" आप इष्ट के निकट गिड़गिड़ाने लगे, पर इष्ट ने क्षमा नहीं किया।

अपने इस अनुभव के बारे में आप अपने शिष्यों से अक्सर कहा करते थे—"अन्तर-जगत से प्राप्त होनेवाले आदेशों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। उपेक्षा करने पर लक्ष्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राप्ति में व्यवधान आ जाता है। समर्थ इष्ट की कृपा से साधक अपनी साधना में सफलता प्राप्त करता है।"

देहरादून से आप मधवापुर आये। यहाँ आने पर आपको संकेत मिला कि यहाँ एक देवालय है। वहाँ जाकर साधना करो। यह देवालय उपेक्षित रहा। गाँव के निवासी कभी यहाँ नहीं जाते थे। गाँव के लड़के स्कूल जाते समय देखते कि इस सून-सान मंदिर में एक पागल बाबा ने डेरा जमाया है। 'बालक-बंदर दोऊ एक सुभाऊ' के अनुसार स्कूल जाते और वापस आते समय अधिकांश बालक मुँह चिढ़ाते और ढेला फेंकते थे।

एक दिन एक बालक का ढेला आपको लगा। क्रोध में गालियाँ बकते हुए आप बाहर आये। तब तक वह बालक दौड़कर भाग गया। भागते समय एक जगह ठोकर खाने के कारण उसे चोट लगी। घर पर पूछने पर रोते हुए बालक ने आपकी शिकायत की।

एक तो आपको अजनबी समझकर सभी आपसे शंकित रहते थे। दूसरे आपको दिगम्बर रहते देख लोग आपको नापसंद करते थे। लड़के के बाप ने गाँववालों से शिकायत की और निश्चय किया कि बाबा को यहाँ से भगा दिया जाय। इस निश्चय के बाद लोग गिरोह बनाकर मंदिर की ओर चल पड़े।

भीड़ में एक वृद्ध सज्जन थे। उन्होंने कहा--"देखो, उत्तेजनावश पहले कुछ मत करना। मैं बाबाजी की परीक्षा लूंगा। अगर वे वास्तव में ऊंचे दर्जे का बाबा होगा तो मालूम हो जायगा। साधारण होने पर हम इन्हें गाँव से निकाल देंगे। ऊँचे दर्जे का होने पर हम पर मुसीबत आ सकती है।"

बात सही थी। गाँव के लोगों ने उस वृद्ध के प्रस्ताव को स्वीकार किया। इधर गाँव के लोगों को एक साथ आते देख परमानन्दजी सारा रहस्य समझ गये।

मंदिर के पास आकर वृद्ध ने कहा--"महाराज, हम आपके पास एक दोहे का अर्थ समझने आये हैं। कृपया हमें बताइये कि इसका वास्तविक अर्थ क्या है?"

परमानन्दजी ने कहा--"पूछो भाई।"

वृद्ध ने कहा--

एक बार हरि घोड़ा भये, ब्रह्मा भये लगाम।
चाँद सुरज रवि का भये, चढ़ि गये चतुर सुजान ॥

परमानन्दजी वृद्ध के आशय को भांप गये। मन ही मन मुस्कराये। बोले--"बहुत सुंदर प्रश्न किया है आपने। इस पद का अर्थ है--साधना करते-करते साधक की ऐसी स्थिति स्वतः आ जाती है जब हरि अर्थात् इष्टदेव घोड़ा बन जाते हैं। ध्याता सवार हो जाता है। इष्टमयी बुद्धि लगाम बनकर नियंत्रण करने लगती है। इंगला-पिंगला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योगी के चढ़ने के आधार हैं । चित्त का निरोध करनेवाला कोई-कोई चतुर सुजान ही इस स्थिति को प्राप्त करता है । आया समझ में ?"

उपस्थित सभी लोग वृद्ध की ओर एक टक देखने लगे, क्योंकि उनके पल्ले कुछ नहीं पड़ा ।

अपने दोहे की इस व्याख्या को सुनते ही वृद्ध उनके चरणों पर गिर पड़ा । गाँव-वालों से उसने कहा--"यह हमारा सौभाग्य है कि ऐसे देवता स्वरूप योगी हमारे गाँव में निवास कर रहे हैं । हमें चाहिए कि हम इनकी सेवा करके परमार्थ लाभ करें ।"

इस घटना के बाद से लोगों की श्रद्धा आपके प्रति बढ़ गयी । आप जिस मंदिर में रहते थे, उसके पास एक बेल का पेड़ (जो आज भी है) है । अत्यधिक मिठास के कारण (पक जाने पर) उसमें कीड़े पड़ जाते थे । एक बार वहाँ श्रीमद्भागवत का पाठ हो रहा था । आयोजन में अनेक श्रोता उपस्थित थे । सहसा एक बेल आपके ऊपर गिरा । दर्द से आप कराह उठे । तत्काल आपके मुँह से निकला--"भविष्य में कभी इस पेड़ के फल कीड़ों से सड़कर नहीं गिरेंगे ।"

इस घोषणा के बाद से आज तक किसी भी फल में न कीड़े लगे और न सड़े । अब उस पेड़ के वेल को प्रसाद के रूप में ग्रहण किया जाता है ।

महाराज परमानन्द की सेवा में एक भोलाभाला सेवक रहता था जो वन रक्षक था । वह महाराज के लिए लकड़ियों का प्रबंध करता था । एक बार बरसात के मौसम में वह हैजे से पीड़ित हो गया । सहसा एक दिन उसकी याद आयी । तभी उसके यहाँ से आनेवाले एक सज्जन ने कहा--"अब वह महाराज की सेवा में कभी नहीं आयेगा । अब तक शायद मर गया होगा । आज सबेरे गऊ दान मेरे सामने हुआ था ।"

महाराजजी ने कहा--"एक काम करो । धूनी से विभूति ले जाकर उसे खिला दो । अभी वह मरा नहीं है ।"

सूचना देनेवाला अवाक रह गया । वह स्वयं अपनी आँखों से उसकी स्थिति देख आया है । फिर भी उसने आज्ञा का पालन किया । भभूत खाने के कुछ देर बाद उसकी हालत में सुधार होने लगा । तीसरे दिन वह स्वयं ही महाराज से मिलने के लिए आया ।

इन्हीं दिनों उज्जैन में कुंभ मेला आरंभ हुआ । इष्ट से अनुमति लेकर आप यहाँ आये । प्रत्येक कुंभ में दानी सेठ पुण्य प्राप्त करने के लिए संन्यासियों को भोज देते हैं जिसे भंडारा कहा जाता है । आप साधुओं के साथ एक भंडारे में चल पड़े । अचानक बीच रास्ते में आपका मन बिगड़ उठा--"क्या यहाँ भोजन की कामना से आया हूँ ?" यह विचार मन में आते ही आप तुरत क्षिप्रा नदी की ओर चल पड़े । वहाँ एक जगह बैठकर अपने आप बोल उठे--"भगवान् को भोजन देना होगा तो यहीं देगा वर्ना मैं किसी के यहाँ नहीं जाऊँगा ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीन दिन आप अनाहार उसी स्थान पर बैठे रहे। चौथे दिन एक महात्मा आपके पास से गुजरते हुए बोले––"यहीं बैठे रहो। लक्ष्मी मिलेगी।"

कुछ देर बाद एक माताजी भोजन लेकर आयीं। महाराज को खिलाने के बाद वह चुपचाप खड़ी रही। यह देखकर परमानन्द ने पूछा––"माँ, अब क्यों खड़ी हो ?"

माताजी ने कहा––"मैं एक महात्माजी के लिए भोजन लेकर जा रही थी, अचानक न जाने कौन कह उठा कि सामने वृक्ष के नीचे जो संत बैठे हैं, उन्हें खिला दो। इनकी सेवा करो, आप संत हैं। मैं अभी तक यह नहीं समझ सकी किसने और क्यों मुझे यह आज्ञा दी ?"

परमानन्द ने कहा––"यह सब भगवान् की लीला है, माँ। मैं भूखा था, भोजन मिल गया। मुझे सेवा की जरूरत नहीं। अब तुम अपने घर चली जाओ।"

उज्जैन से आप वापस चल पड़े। रास्ते में गृह नगर का स्टेशन आया। अचानक इष्ट ने आदेश दिया––'नीचे मत उतरना।' लेकिन आप इष्ट की आज्ञा की उपेक्षा कर नीचे उतर गये। तभी इष्ट ने आपको फटकारा––'तुम साधु नहीं हो, घर चले जाओ।' इस आदेश के बाद ही आपके हृदय-देश से एक प्रकाश निकल कर अंतरिक्ष में विलीन हो गया।

इस समय आपकी स्थिति मणि-हीन फणी की तरह हो गयी। इतने दिनों की साधना सामान्य अवज्ञा करने के कारण निष्फल हो गयी। लगातार कई दिनों तक आप इष्ट से प्रार्थना करते रहे, क्षमा माँगते रहे, पर कोई लाभ नहीं हुआ।

इस घटना के बाद आप लगातार डेढ़ वर्ष तक कठोर तपस्या में निमग्न हो गये। आपने यह निश्चय कर लिया कि भविष्य में कभी जन्मभूमि नहीं जाऊँगा। जब कभी शिष्यों के बीच यह प्रसंग छिड़ जाता तब आप कहते––"साधु होना और मरना बराबर है। दुनिया में सभी हैं, पर घर वालों के नाम पर कोई नहीं।"

कुछ दिनों बाद आपने निश्चय किया कि अपनी जन्मभूमि से इतनी दूर चला जाऊँ जहाँ कोई परिचित भी न मिले। विभिन्न शहरों में घूमते हुए आप काश्मीर चले आये। काश्मीर में उन दिनों भयंकर सर्दी थी। आपके पास पर्याप्त वस्त्र भी नहीं थे। आप सोचने लगे कि आगे क्या करूँ ? एकाएक इष्ट से आदेश मिला––'यहाँ से तुरत रवाना हो जाओ और सीधे चित्रकूट चले जाओ।'

आप वहाँ से चित्रकूट चले आये। कुछ दिनों तक आप यहां भजन करते रहे। एक दिन पुनः आदेश मिला––'अब अनसूया आश्रम में जाकर स्थायी रूप से भजन करो। वहीं तुम्हें सिद्धि प्राप्त होगी।'

× × ×

आपके अनसूया आश्रम आने का उल्लेख पहले ही किया जा चुका है। इष्टदेव के अनुसार आप यहीं तपस्या करने लगे। भोजन के अभाव में आपका स्वास्थ्य खराब होने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लगा। पन्द्रहवें दिन आप कह बैठे--"जब यह शरीर ही नहीं रहेगा तो भजन कौन करेगा। पता नहीं क्यों इस उजाड़ खंड में ला पटका है।"

इतना कहने पर आपको आदेश मिला--"कल से खाद्य सामग्री ग्रहण कर सकते हो। प्रबंध कर दिया जायगा।" दूसरे दिन आपने देखा कि सीढ़ियों पर खाद्य सामग्री रखी है। आप नित्य उसे ग्रहण करने लगे। अनसूया आश्रम घोर जंगल में होने के कारण यहाँ डाकुओं का गिरोह बेखटक विचरण करता था। तीर्थ यात्री कभी नहीं आते थे। जंगली जातियाँ लकड़ी, शहद आदि की तलाश में गिरोह के रूप में आती थी। सारे इलाके में हिंस्र पशुओं का बोलबाला था। एक दिन आप उत्सुकतावश ऊपर सिद्ध बाबा द्वारा बनायी एक कुटिया में गये तो देखा--वहाँ खून, मांस के लोथड़े और अनेक हड्डियाँ हैं। आप सोचने लगे कि यह डाकुओं की देन है या जंगली जानवरों की। एक दिन इसका पता चल गया। उस कुटिया में एक चीते को जाते देख आपने समझ लिया कि यही चीता अपना खाद्य सामग्री यहाँ ले आता है। आप अपने आसन से उठे और उस कुटिया से सारी सामग्री उठाकर बाहर फेंक दिया। इसके बाद से वहाँ चीते का आना बन्द हो गया।

आप जिस स्थान पर आसन लगाकर साधना करते थे, ठीक उसी के नीचे नदी किनारे एक दिन कई डाकू वहाँ आये। वे वहाँ बैठकर लूट के माल का बँटवारा करने लगे। आपस में बातचीत करते समय एक डाकू की नजर आप पर पड़ी तो उसने कहा—"अरे, यहाँ यह बाबा कब से आकर रहने लगा?"

"रहने दो। अपना क्या जाता है।"

वे पीने के लिए शरबत बना रहे थे। उनमें से एक ने कहा--"एक गिलास शरबत बाबाजी को दे आओ।"

दूसरे ने कहा---तुम्हें गरज हो तो आओ। मैं नहीं जाऊँगा।"

सिफारिश करनेवाला एक गिलास शरबत लेकर आपके पास आया तो आपने कहा--"मैं चोरी की रकम का शरबत नहीं पीता।"

इतना सुनना था कि एक डाकू लाठी लेकर नीचे से ऊपर आपको मारने के लिए आया। शरबत देनेवाले डाकू ने उसकी लाठी पकड़ ली। उसने कहा--"हमारा काम था पूछना। अगर बाबा नहीं पीना चाहते तो इसमें नाराज क्यों होते हो।"

मारनेवाले ने कहा--"हमें चोर कह रहा है।"

दूसरे दिन शरबत देनेवाला डाकू आया और कहा--"महाराज, हम लोग अपराधी हैं। कल हमसे भूल हो गयी। हमें क्षमा कर दें।"

--"बात क्या है जो सबेरे-सबेरे क्षमा माँगने आ गये?"

--"मेरा जो साथी आपको मारने को तैयार हुआ था, वह यहाँ से जाते ही बीमार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हो गया। स्थिति ठीक नहीं है। मेरा विश्वास है कि आपके साथ अभद्रता करने के कारण वह बीमार हो गया है। आप उसे क्षमा कर दें।"

परमानन्दजी ने कहा--"ले, यह विभूति ले जाकर उसे अभी खिला दे। वह ठीक हो जायगा।"

कुछ दिनों बाद आपको मारनेवाला डाकू आया और अपने कुकृत्य के लिए आपसे क्षमा माँगने लगा। बाद में उसने प्रतिज्ञा की कि भविष्य में डकैती नहीं करेगा। इस घटना का प्रभाव उसके साथियों पर भी पड़ा। आगे चलकर उन लोगों ने डाका डालना बंद कर दिया।

चित्रकूट के आसपास कोल-भीलों की बस्ती है। जंगली जातियाँ संतों का महत्व नहीं समझती। एक बार कुछ कोल-भील शहद की तलाश में आश्रम के पास आ गये। इन्हें देखते ही परमानन्दजी ने कहा--"आश्रम के समीप शहद मत तोड़ो।"

वे लोग कुछ दूर आगे बढ़कर एक पेड़ पर चढ़ने लगे। जो व्यक्ति बाँस लेकर चढ़ रहा था, सहसा उसमें आग लग गयी। उसे चिल्लाते देख दूसरा उसे बचाने के लिए ऊपर चढ़ने लगा तो न जाने कहाँ से एक साँप फन उठाये निकल आया। इस आकस्मिक विपदा को देखते ही वह नीचे कूद गया और ऊपरवाला भील स्वतः गिर पड़ा। एक के बाद दूसरी दुर्घटना देखकर सभी डर गये। कुछ दूर आगे जाकर पुनः तीसरा व्यक्ति एक पेड़ पर चढ़ने लगा। कुछ ऊपर चढ़ते ही उसका पैर फिसल गया। नीचे गिरते ही तुरत वह मर गया। अब कोल-भील बुरी तरह भयभीत हो उठे। अपने मृत साथी की लाश उठाकर गाँव की ओर चल पड़े। इनमें से एक व्यक्ति के मन में यह संदेह हुआ कि बाबा के मना करने पर भी हम लोगों ने उनकी बात नहीं मानी। मुमकिन है कि उन्होंने कुछ जादू किया हो।

दूसरे दिन वह गाँव के कुछ लोगों को साथ लेकर आया और परमानन्दजी से क्षमा माँगने लगा। परमानन्दजी ने कहा--"घबराने की कोई बात नहीं है। अब कुछ नहीं होगा।"

इस घटना के कारण कोल-भीलों में आतंक फैल गया। जो लोग उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे, वे अब श्रद्धा-भक्ति करने लगे। परमानन्दजी को प्रसन्न करने के लिए लकड़ी तथा अन्य आवश्यक सामग्री ले आते थे। उनके आश्रम के निर्माण में सहयोग दिया। अनसूया के बाबा जादू जानते हैं, यह अफवाह तेजी से फैल गयी।

ठीक इन्हीं दिनों एक युवा ब्रह्मचारी सत्य-शांति की तलाश में चित्रकूट आया। यहाँ कुछ दिन रहने के बाद अयोध्या चला गया। वहाँ भी मन चंचल रहा। एक दिन उसे स्वप्न में आदेश मिला--'तुम जिस शांति की खोज में हो, वह तुम्हें अनसूया आश्रम में मिलेगा।' उधर परमानन्दजी को आदेश मिला--'एक युवा साधक आपकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शरण में आ रहा है, उसमें योगैश्वर्य के लक्षण हैं, उसे ब्रह्म विद्या का उपदेश दीजिए।"

कई दिनों की यात्रा के बाद उक्त युवा ब्रह्मचारी परमहंस परमानन्दजी के आश्रम में आया। उसने ज्योंही साष्टांग प्रणाम किया त्योंही तड़ित वेग से कोई शक्ति उसके शरीर में प्रवेश कर गयी। ब्रह्मचारी का चेहरा, हृदय सब कुछ बदल गया। यही ब्रह्मचारी सच्चिदानन्द परमानन्दजी के प्रथम शिष्य हुए। आगे चलकर आप महाराज की आज्ञानुसार धारकुण्डी आश्रम आये जहाँ महाभारतकाल में पांडव लोग अज्ञातवास करते रहे।

परमानन्दजी ने धीरे-धीरे वहाँ एक आश्रम स्थापित कर लिया। उस आश्रम का नाम 'परमहंस आश्रम' रखा गया। परमानन्दजी के निकट कुत्ते, बिल्लियाँ और सभी हिंसक पशु निडर होकर आते थे। आश्रम में एक पालतू तोता था जिसे 'राम-राम' कहना सिखाया गया था।

एक दिन तोते को गोद में लेकर उस पर हाथ फेर रहे थे। सहसा उन्हें लगा कि तोते की जीवन लीला समाप्त होनेवाली है। आपके मन में यह विचार आया कि देखूँ कैसे यह मरता है। तभी दूर किसी वृक्ष से खाँसने की आवाज आयी। उस समय आपके निकट कई भक्त तथा शिष्य बैठे थे। पुनः वही आवाज नदी के उस पार से आयी। थोड़ी देर बाद यह आवाज चारों ओर से आने लगी। आपके पास बैठे लोग शंकित हो उठे।

परमानन्द ने कहा--"यह यमराज है। आप लोग अपने आसन पर बैठे रहें। चिंता न करें।"

इतना कहकर वे तोते को लेकर कमरे के भीतर चले गये और भजन करने लगे। अर्द्ध रात्रि के समय अचानक नींद उचट गयी तो आपने टार्च जलाकर देखा--एक नेवला कमरे में चक्कर काट रहा है। तुरत आपने उसे दुतकार दिया और तोते के पास पहुँचे। तोते को जीवित देख प्रसन्न हो उठे। इष्ट ने संकेत दिया कि संकट टल गया। दूसरे दिन जब तोता अपने आप 'सीताराम-सीताराम' कहने लगा तो आप बिगड़ते हुए बोले--"साले कल चुप क्यों रहा? कल यही नाम लेता तो संकट टल जाता।"

× × ×

एक बार आवश्यक कार्य के लिए परमानन्दजी के हस्ताक्षर की आवश्यकता हुई। आपने कहा--"मैं कभी स्कूल नहीं गया, हस्ताक्षर कैसे करूँगा?"

शिष्यों ने 'परमानन्द' शब्द लिखकर उस पर बार-बार कलम चलाने को कहा। तीन दिन श्रम करने के बाद आप हस्ताक्षर कर सके। यह दृश्य देखकर एक भक्त ने पूछा--"महाराजजी, आप पढ़े-लिखे नहीं हैं, फिर कैसे महाभारत, रामायण, गीता, वेदांत, दर्शन आदि विषयों पर वार्ता करते हैं?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परमानन्दजी ने कहा--"अरब के हजरत मुहम्मद कहाँ किस स्कूल में पढ़े थे ? कबीर ने अपने बारे में कहा है--'मसि कागज छूयो नहीं, कलम गह्यो नहिं हाथ।' गुरु नानक को किस शिक्षक ने पढ़ाया था ? मीरा किस विश्व विद्यालय में पढ़ने गयी थी ? रामकृष्ण परमहंस या हरिहर बाबा कब पढ़ने गये थे ?"

महाराजजी के इन प्रश्नों का जवाब भक्त नहीं दे सका। माकूल जवाब पाकर वह चुप हो गया।

परमानन्दजी ने अनसूया आश्रम को तीर्थ का रूप दिया जबकि इसके पूर्व यात्री नहीं आते थे। यह भी संभव है कि अत्रि तथा अनसूया देवी के कारण यह स्थान सिद्धों की भूमि बन गयी हो। दोनों ही एक दूसरे के पूरक प्रमाणित हुए। अब निरंतर भक्त तथा दर्शनार्थी आने लगे थे।

एक दिन एक भक्त ने प्रश्न किया--"महाराजजी सुना है कि कल्कि अवतार हो गया है।"

परमानन्दजी ने कहा--"वास्तविक अवतार से मानव का कल्याण होता है, पर हमारे यहाँ प्रति वर्ष कई-कई अवतार जन्म लेते हैं। अभी कुछ वर्ष पूर्व मानिकपुर (बाँदा) में एक नौ वर्ष की लड़की का पेट फूलने लगा तो लोगों ने प्रचारित किया कि इसके पेट से कल्कि अवतार होगा। लड़की को देखने के लिए भीड़ आने लगी। बढ़ती भीड़ को देखकर शासन का माथा ठनका। एक दिन पुलिस आयी। पुलिस को देखकर जनता बिगड़ उठी। पुलिस ने लोगों को समझाया कि यह नौकरी का सवाल है। आप लोग चिंता न करें। सरकार के आदेश से हम इसे इलाहाबाद ले जा रहे हैं। इसे सही स्थिति में कल वापस लायेंगे।

पुलिस के घेरे में लड़की इलाहाबाद से अस्पताल में आयी। जाँच के बाद डाक्टरों ने कहा कि मरीज को ठीक समय पर आप लोग अस्पताल ले आये हैं। कुछ दिन बाद लाते तो इसके पेट का ट्युमर फट जाता। ऐसी हालत में लड़की की मौत निश्चित रूप से हो जाती। इसी प्रकार बाल योगेश्वर के बारे में अफवाह फैली कि वे अवतारी पुरुष हैं, पर जब उन्होंने विवाह कर लिया तब उनकी माता ने घोषणा की कि यह अवतार नष्ट हो गया। अब मेरा दूसरा लड़का अवतार है। धन्य हे अवतार प्रसविनी माता। इसी प्रकार जिसमें जरा सा चमत्कार मालूम हुआ कि वह अवतार हो गया। गीता में अर्जुन ने श्रीकृष्ण से इसी प्रश्न को पूछा था--'भगवान् आपका जन्म तो अब हुआ है और सूर्य तो काफी प्राचीन है, फिर कैसे मान लूं कि आपने इस योग को सूर्य से कहा है ?' श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया--'अर्जुन, तेरे-मेरे अनेक जन्म हो चुके हैं जिसे तू नहीं जानता, पर मैं सब जानता हूँ। मैं अव्यक्त आत्मा, विनाश रहित, संपूर्ण भूत प्राणियों में, स्वर से प्रवाहित होने पर भी आत्म माया के द्वारा, अपनी प्रकृति को अधीन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करके प्रकट होता हूँ।' जब भगवान् अवतार के बारे में यह कहते हैं तब मानव अपने को अवतार कहे तो वह क्या हो सकता है ?"

परमानन्दजी के स्वभाव में कई विशेषताएँ थीं। अनसूया आश्रम में अगर कोई उनका दर्शन करने आ रहा होता तो पहले से ही भाँप लेते थे। कहते थे--"खड़कत हौ। कोई आ रहा है।" इसका अर्थ यह होता कि कोई गाड़ी से आ रहा है। इसी प्रकार पैदल आनेवाले के बारे में पूर्व सूचना दे देते थे--"कोई सार आवत हौ। अब ओनके खायेके दऽ, सूतेके जगह दऽ।"

महाराजजी के पास बैठे लोगों को आश्चर्य होता कि आसन पर बैठे-बैठे महाराज आनेवाले के बारे में कैसे जान लेते हैं। कुछ देर बाद मोटर या पैदल आनेवाला जब आश्रम में आ जाता तब लोग सोचते कि महाराजजी आगमजानी हैं। महाराजजी में एक खूबी यह थी कि भक्तों के लिए वे साबुन, तेल, दंत मंजन, ब्रश, कंघी, आइना आदि की व्यवस्था रखते थे। इन सामग्रियों का उपयोग आश्रमवासी नहीं करते थे। भक्तों के भोजन के प्रति उनका ध्यान रहता था। जब लोग खाने बैठते तब स्वयं आकर कहते--"अरे, यह क्या ? इनकी दाल में घी दो। आज जब खिचड़ी बनी है तो अचार देना चाहिए। खिचड़ी के चार यार, दही, पापड़, घी, अचार। ये लोग शहरी बाबू हैं।" इसके बाद स्वयं अपने हाथ से मिष्ठान्न परोसते थे। लोगों के ना-ना करने पर भी पत्तल पर डाल देते थे। इस परम्परा का पालन आज भी स्वामी भगवानानन्द करते हैं।

दूसरी ओर शिष्यों के प्रति उनका व्यवहार कठोर होता था। अगर किसी को भोजन पर टूटते देखते तो व्यंग्य करते हुए कहते--'आनका आटा, आनका घी, मजा उड़ावें बाबाजी। अरे मूर्खो, साधुओं को अल्पहारी होना चाहिए। दो कौर कम खाना चाहिए। अगर साधना करनी है तो कायदे से करो वर्ना बिस्तर लेकर गोल हो जाओ।'

अनसूया आश्रम में एक परंपरा का पालन कड़ाई से होता है। कई मंदिर, आश्रम के रहते हुए भी यहाँ एक भी भिखमंगा नहीं है। अगर कभी किसी को भीख माँगते देखा गया तो तुरत पकड़कर पूछा जाता--"भीख माँग रहे हो ? पेट के लिए ? भोजन के लिए ? यही न ? आओ, चलो। हम तुम्हें भोजन देंगे, वस्त्र देंगे। तुम्हें काम करना पड़ेगा और भजन भी।" नतीजा यह होता है कि कपटी भिखमंगे भाग जाते हैं। प्रति वर्ष गुरु पूर्णिमा के दिन कई हजार व्यक्ति भोजन करते हैं। पता नहीं, सारी सामग्री कहाँ से आती है। कभी कोई भूखा नहीं जाता। प्रत्येक दर्शनार्थी को प्रसाद अवश्य दिया जाता है।

आश्रम में हर प्रकार के दर्शनार्थियों को देखकर एक बार एक भक्त ने प्रश्न किया--"महाराज, हिंदू धर्म में बड़ी रूढ़ियाँ हैं। क्या सनातन-धर्म का यही स्वरूप है ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परमानन्दजी ने कहा—"प्रत्येक धर्म में समय-समय पर भ्रांतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। जब वह विपरीत दिशा में जाने लगता है तब राम, कृष्ण, बुद्ध, शंकराचार्य, कबीर, नानक आदि महापुरुषों का अवतरण होता है जो संतप्त मानव को नयी दिशा देते हैं। वास्तव में लोग यह नहीं जानते कि सनातन-धर्म क्या है? उदाहरण के लिए देखो, कोई पीपल की पूजा करता है तो कोई भूत-प्रेत की। दोनों ही उसे सनातन-धर्म के अन्तर्गत समझते हैं। हमारे यहाँ तैंतीस करोड़ देवी-देवता हैं। पता नहीं और भी कितने हो गये होंगे। भूइयाँ रानी, संतोषी माता जैसी देवियाँ आ गयीं। चित्रकूट में लोमड़ी के बिल की पूजा कोल-भील करते हैं। इसी प्रकार नाग-पूजा, बैल-पूजा की परंपरा है। महाराष्ट्र में कुत्ते की पूजा होती है। लाखों रुपया लगाकर वहाँ एक मंदिर बनवाया गया है। गुजरात में चुहिया देवी का एक मंदिर है। दरअसल शिक्षा के अभाव के कारण यह दोष उत्पन्न होता है। इन्हीं कमजोरियों के कारण हम अरब वालों के दास हुए। धर्म-रक्षा के नाम पर न जाने कितने लोग मुसलमान बन गये। जो लोग मुसलमान बने, उन्होंने बदले की भावना से काफी जुल्म ढाया। क्या हमारा सनातन-धर्म इतना कमजोर है कि एक टुकड़ा रोटी, एक घूंट पानी से नष्ट हो जाता है? वास्तव में धर्म के नाम पर यह रूढ़ियाँ उत्पन्न हुई हैं। हमारी इस कमजोरी का लाभ मुसलमानों तथा ईसाइयों ने उठाया। यह मत सोचो कि यह रूढ़ियाँ वर्तमान काल की देन है। कृष्ण के युग में भी यह दोष था। अज्ञान ही इसका मूल कारण है।"

× × ×

महात्माओं के पास आर्त-पीड़ित व्यक्ति अपने कष्ट के निवारण के लिए आते रहते हैं। दयावश उनके कष्टों को वे दूर करते हैं। लेकिन ईश्वर प्रदत्त कर्म में हस्तक्षेप करने के कारण उनके कष्टों को स्वयं झेलने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

एक बार परमहंसजी पीड़ित हो गये। अपने इष्ट से उन्होंने पूछा—"जब मेरी निवृत्ति हो गयी है तब यह बुखार कैसे आ गया?"

तत्काल उत्तर मिला—"दूसरों को स्पर्श कर उनके कष्टों को दूर करते हो तो उनके दूषित संस्कारों को स्वयं ग्रहण करते हो। ऐसी हालत में उनके भोग को भोगना ही पड़ेगा।"

अक्सर जब कोई शिष्य इस बारे में प्रश्न करता तो उसे यही उत्तर देते—"तुम लोगों के पाप का भोग मुझे भोगना पड़ता है।"

सच्चिदानन्द ब्रह्मचारी को दीक्षा देने के बाद से अक्सर लोग महाराजजी के पास शिष्य बनने के लिए आते थे। श्मशान वैराग्यवालों को वे तुरत पहचान लेते थे। इसी प्रकार एक बार एक आदमी शिष्य बनने के लिए आया। वह आश्रम के चारों ओर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झाड़ू लगा रहा था। आसन के नीचे बारजे पर बैठे कुछ लोग गाँजा पी रहे थे। इन्हें देखकर किसी ने कहा––"कहिये महाराजजी, गाँजे का दम लगाइयेगा ?"

इस आह्वान को सुनते ही आप झाड़ू को एक किनारे फेंक दौड़ पड़े। वे स्वयं भी गाँजे के शौकीन थे। महाराजजी ऊपर से यह दृश्य देख रहे थे। तुरत वहीं से बोले–– "गँवार कहीं का, बड़ा आया है साधु बनने। खाने को भोजन और पीने को गाँजा मिले तो सारी दुनिया साधु बन जाय। आये हैं यहाँ त्याग सीखने और चिलम देखते ही झपट गये। जाओ, घर जाकर बाल-बच्चों की सेवा करो। अभी साधु बनने का समय नहीं आया है। जब आयेगा तब भगवान् स्वतः तुम्हारी सहायता करेंगे।"

शिष्य बनाने के पहले महाराजजी बड़ी कड़ी परीक्षा लेते थे। अगर कोई अधिक तंग करता तो कहते––संसार में अनेक संत-महात्मा भरे पड़े हैं। वहाँ जाकर शिष्य बनो। वर्तमान पीठस्थवीर स्वामी भगवानानन्द की भी कठोर परीक्षा ली गयी थी। समय-समय पर वे महाराजजी के बारे में कहते रहते हैं।

परमानन्दजी के एक शिष्य हैं––स्वामी अड़गड़ानन्द। उन्होंने अपने गुरुदेव के बारे में विस्तार से लिखा है। उनके गुरुदेव बराबर कहा करते थे––'घोड़े और आदमी के दिन हमेशा एक से नहीं रहते। बदलते देर नहीं लगती।' इतना कहने के बाद वे विभूति देते और फिर छड़ी से मारते। यह छड़ी आशीर्वाद की प्रतीक होती थी। इसे इष्ट की आज्ञा से लगाते थे। एक बार मैंने उनसे पूछा कि आप छड़ी क्यों मारते हैं। उन्होंने कहा––'भगवान् जब निवृत्ति देते हैं तब हथियार भी देते हैं। भगवान् ने निवृत्ति के साथ यह छड़ी मुझे देते हुए कहा कि यदि दाहिने हाथ से किसी को मारोगे तो उसकी फाँसी की सजा कट जायगी। भले ही कल ही सजा क्यों न सुनायी गयी हो। अगर बायें हाथ से मारोगे तो उसकी दुर्गति होगी।'

दो घटनाओं की याद आज भी ताजा है। एक आर्य-समाजी पंडित महाराज के पास आये और देर तक धार्मिक विषयों पर बहस करते रहे। बहस ने क्रमशः विवाद का रूप ग्रहण कर लिया। एकाएक महाराजजी ने उन्हें पास बुलाया। उनके सिर पर बायाँ हाथ फेरते हुए कहा––'अब आगे की बात कहिये।' तुरत उनकी बुद्धि गोल हो गयी। दो घंटे तक वह जड़वत बैठा रहा। बाद में सोने चला गया।

दूसरे दिन प्रातःक्रिया से निवृत्त होकर महाराजजी के पास आया। उन्होंने कहा– "महाराजजी आप प्रत्यक्षदर्शी हैं। योगी हैं। हम लोगों के पास पुस्तकीय ज्ञान है। आपसे हमारी तुलना नहीं हो सकती। पता नहीं, कल क्या हो गया था कि आपसे विवाद करता रहा।"

एक बार मुझे दाहिने हाथ की छड़ी से दो बार उन्होंने मारा। इसका कारण पूछने पर उन्होंने जो कुछ कहा, उस पर विश्वास नहीं हुआ। कुछ दिनों बाद मैं बीमार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हो गया। उन्हीं दिनों चार परिचित व्यक्ति मेरे पास आये और अपने साथ जंगल में ले आये। वहाँ एक कमरा था जिसमें अनेक अस्त्र थे। उनसे प्रकाश निकल रहा था। कमरे के भीतर जाते ही दरवाजा अपने आप बंद हो गया। चारों व्यक्तियों ने झपटकर अस्त्र उठा लिये और कहा--'मार डालो इसे।' इस घटना के कारण मैं बुरी तरह डर गया। प्राणों का मोह किसे नहीं होता। मैं उनके निकट गिड़गिड़ाने लगा। प्राणों की भीख माँगने लगा, पर उन पर कोई असर नहीं हुआ। सहसा उसी समय न जाने कैसे महाराजजी की छड़ी की याद आयी। मुझमें साहस उत्पन्न हुआ। मैंने कहा कि तुम सब मेरा कुछ नहीं कर सकते। इतना कहते ही वे सब पीछे हटने लगे। शस्त्रागार भी लुप्त हो गया। यहाँ तक कि मेरी बीमारी भी दूर हो गयी।"

इसी को कहते हैं---प्रारब्ध का तमाशा। प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्म का फल भोगना पड़ता है। कुछ इस जन्म में तो कुछ अगले जन्म में। उसका उदाहरण महाराज का एक शिष्य था।

सहसा एक दिन न जाने क्यों उसके मन में आया कि महाराजजी से कहा--"महाराजजी, मेरा मन गया जाने का करता है।"

महाराजजी ने कहा—"गया-वया में कुछ नहीं है। तुम भगवान् के चिंतन में मन लगाओ। सब ठीक हो जायगा।"

दो माह बाद पुनः उसने कहा--"महाराजजी, आज्ञा दें तो एक बार गया हो आऊँ। पता नहीं क्यों, भजन करने बैठता हूँ तो गया की याद आती है।"

महाराजजी ने सोचा--"आखिर यह बार-बार गया जाने को क्यों सोचता है ? चिंतन करने से ज्ञात हुआ कि गया के किसी सेठ का कुछ चना इस पर बकाया है। चने के वही दाने इसे खींच रहे हैं। परमानन्दजी समर्थ योगी थे। गया के उस सेठ के मन में प्रेरणा उत्पन्न कर दी ताकि शिष्य को जाना न पड़े। उधर सेठ ने एक दिन सोचा—एक बार पवित्र चित्रकूट भूमि का दर्शन कर आऊँ। वह अनसूया आश्रम आया। महाराजजी को प्रणाम करने के बाद जेब से कुछ रकम निकालकर उनके पैरों के पास रखा तभी उसकी जेब से चने के कुछ दाने गिर पड़े।

चने देखते ही महाराज चौंक उठे। पूछा--"सेठ, कहाँ से आ रहे हो ?"

सेठ ने कहा--"गया शहर से।"

महाराज ने कहा--"ठीक है। चने के सभी दाने मुझे उठाकर दे दो।"

सेठ ने कहा--"यह तो जमीन पर गिर गये हैं। दूसरा मँगवा देता हूँ।"

महाराज ने कहा--"नहीं, नहीं। मुझे इन्हीं चनों की जरूरत है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सेठ ने चने उठाकर दिये और अपने गंतव्य स्थल की ओर चला गया। शिष्य के आने पर उसे उक्त चने के दाने देने के बाद महाराज ने कहा--"इसे अभी खा ले।"

चने खाने के बाद फिर कभी उसने गया जाने का नाम नहीं लिया। पाँच-छ: माह बाद एक दिन महाराज ने उससे कहा--"बेटा, तू कई बार गया जाने को कह रहा था। इस बार चले जाओ। किराये के पैसे मुझसे ले लेना। मेरे कहने से एक बार हो आओ।"

शिष्य ने कहा—"गुरुदेव, पता नहीं क्यों अब गया जाने का मन नहीं करता।"

वास्तव में संस्कार बड़ी चीज है और योगी पुरुष चिंतन के माध्यम से भूत-भविष्य की बातें जान लेते हैं। जो लोग निवृत्त हो जाते हैं, उनमें किसी बात की आकांक्षा नहीं रहती।

बातचीत के सिलसिले में एक बार उन्होंने अपने शिष्य से कहा था--"मेरी मौत नहीं होगी। मैंने काल को जय कर लिया है। मेरी मृत्यु तभी होगी जब किसी शिष्य का शब्द वाण मेरे हृदय को आघात पहुँचायेगा।"

महाराजजी का अनुमान सही था। आखिर एक दिन एक शिष्य की बातों से उन्हें गहरी चोट लगी। इसे उन्होंने शिष्य के सामने प्रकट कर दिया। इस घटना के दूसरे दिन सन् १९६९ ई० में उन्होंने अपना नश्वर शरीर त्याग दिया।

परमहंस आश्रम में उनके गुरुदेव सत्संगी महाराज के ठीक सामने उनकी समाधि है जहाँ सभी दर्शनार्थी जाते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.